* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

18 मार्च, 2024
फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, दशमी
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
सोमवार, वर्ष 09, अंक 148

धनबाद, चतरा और जामताड़ा में अभ्यर्थियों ने काटा बवाल

विकास के लिए खनन उद्योग का विकास आवश्यक

खनिज बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन हैं जो मूलभूत उद्योगों के लिये आवश्यक कच्चे माल के रूप में कार्य करते हैं। किसी राष्ट्र के समग्र औद्योगिक विकास के लिये खनन उद्योग का विकास आवश्यक है।
भारत के खनन उद्योग में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि और विदेशी मुद्रा आय अर्जन को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करने तथा भवन, अवसंरचना, मोटर वाहन एवं बिजली जैसे उद्योगों को उचित दरों पर आवश्यक कच्चे माल उपलब्ध कराने के माध्यम से प्रतिस्पर्द्धात्मक बढ़त देने की क्षमता है।
मजबूत घरेलू मांग और वैश्विक विनिमार्ताओं के बीच अपने संयंत्रों को भारत में स्थानांतरित करने की बढ़ती रुचि के साथ, भारत के पास विनिर्माण के लिये एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभरने का एक व्यापक अवसर मौजूद है। खनिजों और धातुओं के मामले में भारत की विशाल क्षमता देश के आकर्षण को बढ़ाती है। हालाँकि भारत के विशाल खनिज भंडार के बावजूद इसका खनन क्षेत्र अभी भी लीगेसी संबंधी मुद्दों : पूर्व के निर्णय, कृत्यों आदि के परिणामस्वरूप वर्तमान परिदृश्य) से प्रभावित है।

खनन क्षेत्र का वर्तमान परिदृश्य

निजीकरण का संक्षिप्त इतिहास

- नब्बे के दशक की शुरूआत के भारत के आर्थिक उदारीकरण और राष्ट्रीय खनिज नीति, 1993 ने भारत में खनिज अन्वेषण के लिये निजी निवेश का मार्ग प्रशस्त किया है।
- नए मानदंडों के अनुसार, निजी कंपनियाँ पहले आओ पहले पाओ प्रणाली के तहत भारत में अन्वेषण परमिट के लिये आवेदन कर सकती हैं, जिससे उन्हें किसी भी खोजे गए खनिज का पता लगाने और फिर उसका खनन करने या बिक्री करने का अधिकार प्राप्त होता है।
- 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत कार्यसमूह की वर्ष 2011 की एक रिपोर्ट में खनिज अन्वेषण के क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने में प्रणाली के महत्त्व को रेखांकित किया गया।
- हालाँकि, सर्वोच्च न्यायालय ने वर्ष 2012 के अपने निर्णय में कहा कि प्राकृतिक संसाधन आवंटन की पद्धति हेरफेर, पक्षपात एवं दुरुपयोग के लिये अतिसंवेदनशील है। इसमें आगे कहा गया कि उच्च जोखिम और उच्च निवेश के साथ, नीलामी निजी निवेश को बाधित करेगी।
- खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 में वर्ष 2015 के संशोधन ने खनिज आवंटन के लिये के आधार को नीलामी से प्रतिस्थापित कर दिया।

भारत में खनन को और अधिक अनुकूल बनाने के लिए उठाये जानेवाले संभावित कदम

घरेलू अन्वेषण को प्रोत्साहन देना: हाल ही में, खान मंत्रालय ने भारत में विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिये आवश्यक 30 अत्यंत आवश्यक खनिजों की एक सूची जारी की है। विंड टरबाइन, सोलर पैनल, बैटरी और इलेक्ट्रिक वाहन जैसी हरित प्रौद्योगिकियों के विनिर्माण के लिये ये आवश्यक हैं। इन अत्यंत आवश्यक खनिजों के घरेलू अन्वेषण को प्रोत्साहित करना वर्ष 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन तक पहुंचने के भारत के दीर्घकालिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये महत्त्वपूर्ण है।

अन्वेषण मॉडल में बदलाव लाना: अन्वेषण को प्रोत्साहित करने के लिये, वर्तमान के ह्यराजस्व को अधिकतम करने मॉडल से ह्यअन्वेषण निवेश प्रोत्साहनह्ण मॉडल की ओर आगे बढ़ना आवश्यक है। यह भारत में छोटे अन्वेषणकताओं को भी आकर्षित कर सकता है जिन्होंने कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका में खनिज क्षेत्र के विकास में अच्छा योगदान दिया है।

निजी कंपनियों को प्रोत्साहित करना: महत्त्वपूर्ण गैर-परमाणु उपयोग रखने वाले अत्यंत आवश्यक खनिजों (जैसे दुर्लभ मृदा तत्त्व, लिथियम, टाइटेनियम, नाइओबियम आदि) के खनन में निजी भागीदारी की अनुमति दी जानी चाहिये । ऐसे गैर-विखंडनीय खनिजों को खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 की पहली अनुसूची के भाग इ से हटा दिया जाना चाहिये, जो परमाणु खनिजों को सूचीबद्ध करता है। अत्यंत आवश्यक खनिजों के अन्वेषण में निजी क्षेत्र के लिये अधिक अवसर का अर्थ होगा अधिक खनन दक्षता और भारत के लिये अधिक आत्मनिर्भरता, जिससे भारत के खनिज आयात बिल में कमी आएगी।

एक स्वतंत्र नियामक संस्था का गठन करना: राज्य और केंद्र स्तर पर विभिन्न सत्तारूढ़ दलों के बीच स्पष्टता के अभाव की स्थिति को खनन क्षेत्र के विकास हेतु बाधक नहीं बनने दिया जाना चाहिये। इसलिये एक स्वतंत्र नियामक प्राधिकरण की आवश्यकता है जिसे सार्वजनिक और आर्थिक विकास के व्यापक हित में कार्य करने की शक्ति सौंपी जानी चाहिये।

खनन क्षेत्र में अवसर

भारत लौह अयस्क उत्पादन के मामले में विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर है और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा कोयला उत्पादक है (वर्ष 2021)। भारत में संयुक्त एल्युमीनियम उत्पादन (प्राथमिक एवं द्वितीयक) वित्त वर्ष 2021 में 4.1 मीट्रिक टन प्रति वर्ष के स्तर पर था; इस प्रकार भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया। वर्ष 2023 में भारत में विस्तारित विद्युतीकरण और समग्र आर्थिक विकास के कारण खनिज की मांग 3% तक बढ़ने की संभावना है। भारत इस्पात एवं एल्युमिना के मामले में उत्पादन एवं रूपांतरण लागत में उचित लाभ की स्थिति रखता है। इसकी रणनीतिक अवस्थिति विकसित देशों के साथ-साथ तेजी से विकास कर रहे एशियाई बाजारों में निर्यात संभावनाओं को सक्षम बनाती है।

खनन क्षमता का अन्वेषण है महत्वपूर्ण

सतत परिवहन के लिए

भारत की नवयुगीन अर्थव्यवस्था के अत्यधिक खनिज गहन होने की संभावना है। चूंकि इस दशक के शेष वर्षों में भारत की बिक्री तेजी से बढ़ने वाली है इसलिये लिथियम, कोबाल्ट, निकेल और ग्रेफाइट की मांग उच्च होगी। इसके साथ ही इस्पात के रूप में लौह अयस्क, एल्युमीनियम के स्रोत के रूप में बॉक्साइट और कॉपर की मांग अधिक होगी।

सहज ऊर्जा संक्रमण के लिए

विशेष रूप से ऊर्जा-संक्रमण खनिजों की मांग में भारी वृद्धि होने का अनुमान है, जो आंशिक रूप से उन्नत रसायन सेल बैटरी, सोलर पीवी मॉड्यूल, बड़े घरेलू उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए प्रोडक्शन-लिंक्ड प्रोत्साहन योजनाओं में भागीदारी से प्रेरित होंगे।

नवीकरणीय ऊर्जा के लिए

भारत का वर्ष 2030 तक 500 गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता प्राप्ति का लक्ष्य काफी हद तक सौर एवं पवन क्षमता से पूरा किया जायेगा। हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का अध्ययन है कि तटवर्ती पवन संयंत्र को गैस-संचालित बिजली संयंत्र की तुलना में 9 गुना अधिक खनिजों की आवश्यकता होती है। एल्युमीनियम और कॉपर सौर ऊर्जा के लिए महत्त्वपूर्ण हैं लेकिन पवन ऊर्जा को दुर्लभ मृदा तत्वों जिंक, कॉपर और एल्युमीनियम की आवश्यकता होती है।

पारंपरिक क्षेत्रों के लिए

आवास, अवसंरचना और परिवहन क्षेत्र लौह अयस्क, बॉक्साइट, कॉपर, लाइमस्टोन, क्रोमियम, जिंक आदि की मांग को बढ़ावा देंगे। तीव्र औद्योगिक विकास से वर्ष 2030 तक लौह अयस्क, बॉक्साइट, जिंक, कॉपर, निकेल आदि की घरेलू मांग दोगुनी हो जाने का अनुमान है। प्राथमिक क्षेत्र में, खाद्य सुरक्षा और कृषि इनपुट के रूप में रॉक फॉस्फेट और जिंक पर काफी निर्भरता है।

आजाद सिपाही मीडिया मार्केटिंग इनीशिएटिव

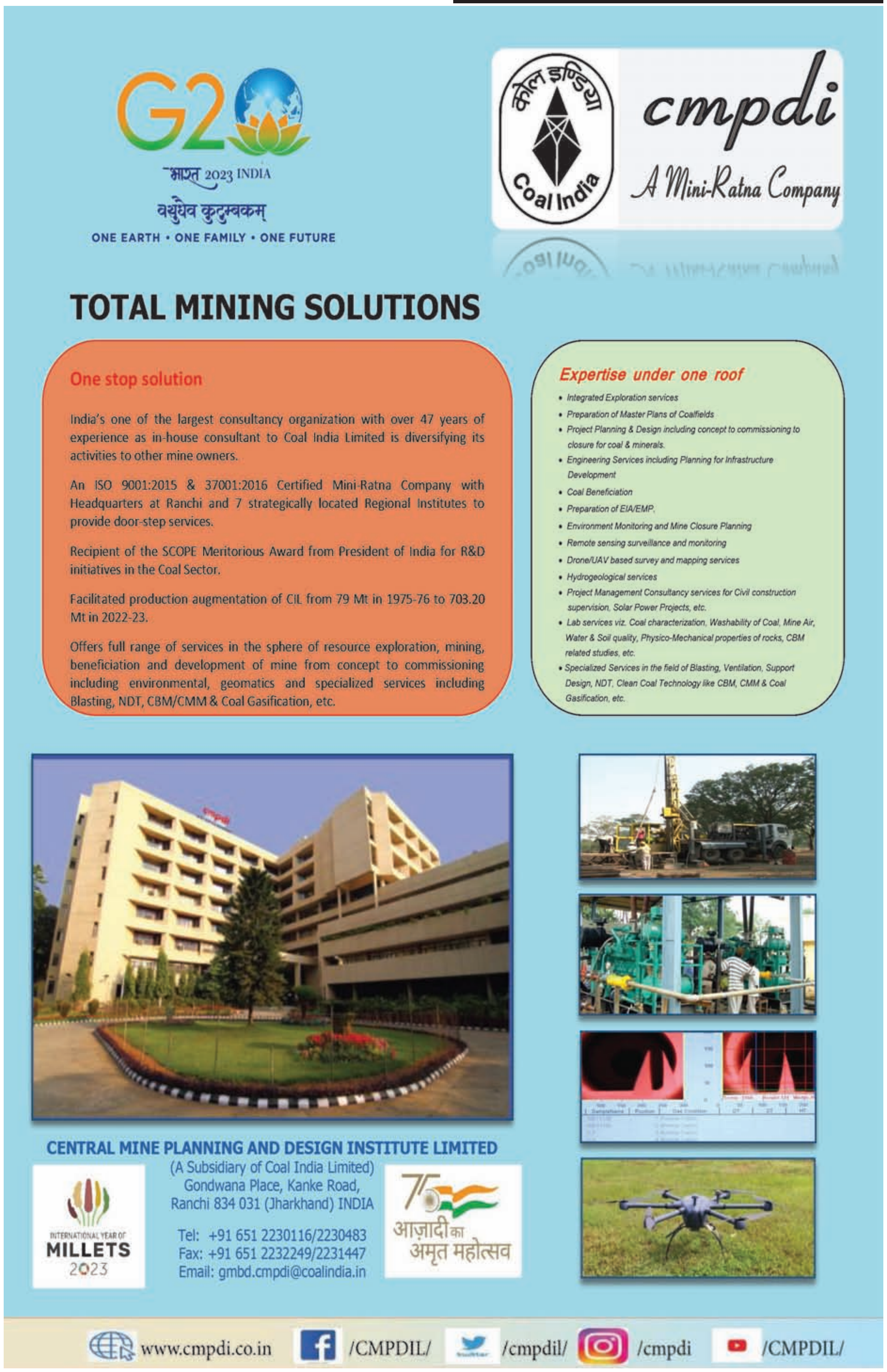

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

सर्राफा
सोना (बिक्री) 61,300 रु./10 ग्राम
चांदी 76,000 रु./प्रति किलो

पलामू के आंकड़े और माहौल धड़कन बढ़ा रहे हैं भाजपा के

■ 3.36 लाख वोट को पाले में करना भाजपा के लिए बड़ी चुनौती

■ 2019 के लोकसभा और विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिले वोट में था भारी अंतर

■ वोटों के इस अंतर को पाटना ही सबसे बड़ी चुनौती है विष्णु दयाल राम के हैट्रिक के रास्ते में

आजाद सिपाही विशेष

पलामू, यानी पलाश, लाह और महुआ की धरती, जो एक जिला के रूप में 132 साल पहले 1 जनवरी, 1892 को अस्तित्व में आया था, झारखंड के सबसे पिछड़े इलाके के रूप में जाना जाता है, लेकिन राजनीतिक रूप से यहां की धरती बेहद उर्वर रही है। पलामू लोकसभा सीट का गठन दो जिलों पलामू और गढ़वा के हिस्सों को लेकर किया गया है। जंगल और पहाड़ों से घिरे इस खूबसूरत लोकसभा क्षेत्र से फिलहाल भाजपा के सांसद विष्णु दयाल राम हैं। इस पूर्व आइपीएस अधिकारी पर भाजपा ने लगातार तीसरी बार दांव लगाया है, लेकिन इस बार शुरुआत में उनकी राह में बाधाएं दिखाई देने लगी थीं, सबसे बड़ी बाधा स्थानीय कार्यकर्ताओं में उनके प्रति बढ़ता असंतोष था, जिसे दो दिन पहले ही शांत कर दिया गया है। गढ़वा मंडल के 19 मंडल अध्यक्षों ने इनके खिलाफ विरोध का स्वर तेज किया था, बैठक की और घाषणाएं भी। लेकिन इनके लिए राहत की बात यह है कि अगले ही दिन भवनाथपुर के विधायक भानुप्रताप शाही के प्रयास से इन कार्यकर्ताओं को मना लिया गया और वे अब वीडी राम के पक्ष में काम कर रहे हैं। हालांकि पिछले लोकसभाचुनाव के सात माह बाद हुए विधानसभा चुनाव के आंकड़े बहुत अनुकूल नहीं रहे। 2019 के लोकसभा चुनाव में तो भाजपा को पलामू लोकसभा क्षेत्र के तहत आनेवाले सभी छह विधानसभा क्षेत्रों में अच्छा-खासा वोट मिला था, लेकिन सात महीने बाद हुए विधानसभा चुनाव में ये वोट बहुत कम हो गये। हालांकि भाजपा ने इनमें से चार विधानसभा सीटों पर जीत हासिल की थी, लेकिन कम वोट मिलना उसके लिए चिंता का कारण है। इस बार भाजपा के लिए इस कमी को दूर करना बेहद जरूरी है। क्या है पलामू संसदीय सीट का वर्तमान सियासी माहौल और क्या हैं आंकड़े, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

राकेश सिंह

लोकसभा चुनाव का एलान होने के साथ ही झारखंड समेत पूरे देश में चुनावी गहमा-गहमी तेज हो गयी है। जहां तक झारखंड का सवाल है, तो यहां मुकाबले की तस्वीर लगभग साफ हो गयी है। राज्य की 14 संसदीय सीटों पर भाजपा और महागठबंधन के बीच सीधा मुकाबला होने के आसार हैं। इस स्थिति में मुकाबला बेहद कांटे का और रोमांचक होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

झारखंड की संसदीय सीटों में से एकमात्र पलामू सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। यह संसदीय क्षेत्र वास्तव में झारखंड के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में शुमार है, क्योंकि यहां हर साल सुखाड़ या अनावृष्टि की स्थिति बनती है। बिना किसी बड़े उद्योग-धंधे वाले इस क्षेत्र का राजनीतिक परिदृश्य बहुत रोमांच पैदा करता है।

पलामू में जातीय समीकरण है निर्णायक

जातीय समीकरण और वोटों के हिसाब से पलामू संसदीय सीट पर अनुसूचित जाति काफी अहम भूमिका निभाती है। वोटों के हिसाब से देखें तो यहां एससी जाति की संख्या करीब 27 प्रतिशत के करीब है। इसमें राम (15.1), भुइयां (5 प्रतिशत), पासवान (2.4), प्रसाद (2.1), बैठा (1.2), मांझी (0.6), मोची (0.3) प्रमुखता से शामिल हैं। यहां का जातीय समीकरण ही जीत-हार तय करता है। 2024 के लिए बन रहे चुनावी समीकरण में भाजपा का दावा मजबूत माना जा रहा है, लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव के आंकड़े भाजपा की धड़कने बढ़ा रहे हैं। हालांकि वीडी राम का कद उम्मीदवार की हैसियत से काफी बड़ा है। वह पढ़े-लिखे हैं और गंभीर भी हैं। फालतू की बातें वह नहीं करते। झूठा वादा भी नहीं करते। जो कहते हैं, सीमा में रह कर कहते हैं और वही वायदे करते हैं, जिसे वह पूरा करा सकते हैं। शिक्षा, योग्यता और कद तीनों की बदौलत वीडी राम की छवि भाजपा आलाकमान की नजर में भी अच्छी है। यह भाजपा और इनके लिए राहत की बात है।

कार्यकर्ताओं का गुस्सा शांत करने में सफल हुई पार्टी

पलामू संसदीय सीट से लगातार तीसरी बार चुनाव जीतने के लिए संघर्ष करते वर्तमान सांसद और भाजपा प्रत्याशी वीडी राम की पहली चुनौती सभी जाति-धर्म के लोगों और भाजपा कार्यकर्ताओं को एकजुट करना है। वीडी राम को तीसरी बार उम्मीदवार बनाये जाने की घोषणा के बाद मेदिनीनगर और गढ़वा के भाजपा कार्यकर्ताओं में विरोध के स्वर सुनाई पड़े। बैठकें हुईं, आंदोलन की घोषणा की गयी। लेकिन इनके लिए राहत की बात यह है कि उसके अगले ही दिन भवनाथपुर के विधायक भानुप्रताप शाही और खुद वीडी राम के प्रयास से इन कार्यकर्ताओं को मना लिया गया और वे कार्यकर्ता एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के संकल्प के साथ इनसे कंधा से कंधा मिला कर पार्टी की गतिविधियों में शामिल हो गये हैं। कार्यकर्ताओं की नाराजगी को दूर करने में प्रदेश भाजपा के नेताओं ने भी अहम भूमिका निभायी है।

विधानसभा के आंकड़े धड़कन बढ़ानेवाले हैं

जहां तक चुनावी आंकड़ों का सवाल है, तो पलामू संसदीय क्षेत्र का चुनावी आंकड़ा भाजपा की धड़कन बढ़ा रहा है। पलामू संसदीय क्षेत्र के तहत छह विधानसभा क्षेत्र आते हैं। इनमें डाल्टनगंज, विश्रामपुर, छतरपुर, हुसैनाबाद, गढ़वा और भवनाथपुर शामिल हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को इन सभी क्षेत्रों में अच्छा वोट मिला था, लेकिन सात माह बाद हुए विधानसभा चुनाव में हालांकि भाजपा ने इनमें से चार विधानसभा सीटों पर जीत हासिल की, लेकिन उसके वोट नाटकीय रूप से कम हो गये। लोकसभा चुनाव में डाल्टनगंज सीट से भाजपा को 145935 वोट मिले थे, लेकिन विधानसभा चुनाव में उसे 103698 वोट ही मिले। लगभग पैंतालीस हजार वोट कम मिले। इसी तरह विश्रामपुर में लोकसभा चुनाव में भाजपा को 118583 वोट मिले थे, जबकि विधानसभा चुनाव में वह महज 40635 वोट ही ला सकी। यहां करीब 68 हजार वोट कम मिले। छतरपुर में लोकसभा चुनाव में भाजपा को 100126 वोट और विधानसभा चुनाव में 64127 वोट मिले थे। यहां लगभग 36 हजार वोट भाजपा के हाथ से छिटक गये। हुसैनाबाद में भाजपा ने लोकसभा चुनाव में 94858 वोट हासिल किये थे, लेकिन विधानसभा चुनाव में उसके द्वारा समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार विनोद सिंह महज 27880 वोट ही ला सके। यहां 67 हजार वोट कम मिले। गढ़वा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा को लोकसभा चुनाव में 137947 वोट मिले थे, जबकि विधानसभा चुनाव में वह 83159 वोट ही ला सकी। यहां लगभग 54 हजार वोट कम मिले। इसी तरह भवनाथपुर में लोकसभा चुनाव में भाजपा को 155791 वोट मिले थे, लेकिन विधानसभा चुनाव में यह घट कर 96818 रह गया। यहां लगभग 59 हजार वोट कम मिले। इस तरह साफ है कि लोकसभा चुनाव में पलामू सीट पर भाजपा को 7.53 लाख से अधिक वोट मिले थे, जबकि विधानसभा चुनाव में यह घट कर 4.16 लाख रह गया। भाजपा के सामने बड़ा सवाल यह है कि 3.36 लाख वोट कहां गये और इस बार वह इस कमी को दूर करने के लिए क्या करेगी। इस संदर्भ में भाजपा के कुछ नेताओं का कहना था कि पिछली भाजपा सरकार के कामकाज से स्थानीय कार्यकर्ताओं में नाराजगी थी। अधिकारी उनकी बात नहीं सुनते थे। इसलिए उन लोगों ने चुनाव में सक्रियता नहीं दिखायी। इस बार ऐसी स्थिति नहीं है। प्रदेश भाजपा ने उस कमी को पाट दिया है।

पलामू का राजनीतिक परिदृश्य

पलामू की राजनीति में धुरंधर माने जानेवाले नेताओं के राजनीतिक रिश्ते बनते-बिगड़ते रहे हैं। पलामू ने वह दौर भी देखा है, जब लोकसभा चुनाव को लेकर उपजे विवाद के कारण डालटनगंज विधानसभा में उपचुनाव भी हो गया था, क्योंकि तब डालटनगंज के तत्कालीन विधायक इंदर सिंह नामधारी ने सिर्फ इसलिए विधायक पद से इस्तीफा दे दिया था, क्योंकि तब जदयू के शीर्ष नेतृत्व ने उनकी बात नहीं सुनी थी। लेकिन 12 वर्षों के बाद पलामू के राजनीतिक मैदान का स्वरूप पूरी तरह से बदला हुआ है। इंदर सिंह नामधारी के राजनीतिक नेपथ्य में जाने के बाद 2007 में घुरन राम को गिरिनाथ सिंह ने दिल्ली पहुंचाया था। आज वही गिरिनाथ सिंह भाजपा के लिए खड़े हैं। घुरन राम भी भाजपा में शामिल हो गये हैं। 2009 में नवजवान संघर्ष मोर्चा प्रमुख भानु प्रताप शाही ने कामेश्वर बैठा के लिए खुल कर काम किया था। तब बैठा को शाही ने कांग्रेस, झामुमो और नवजवान संघर्ष मोर्चा के प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतारा था। गिरिनाथ सिंह उस समय पलामू प्रमंडल में राजद की कमान संभाल रहे थे। वह हर हाल में कामेश्वर को रोकना चाहते थे। गिरिनाथ और भानु के रिश्तों में काफी तल्खी भी आ गयी थी। भानु बैठा को दिल्ली में तो ले आये, लेकिन इससे उनके राजनीतिक विरोधी बढ़ गये। आज भानु और गिरिनाथ के अलावा घुरन भी भाजपा में हैं।

पलामू का राजनीतिक माहौल

पलामू संसदीय सीट पर इस बार सियासी माहौल पूरी तरह बदला हुआ है। पिछले चुनाव में वीडी राम के प्रतिद्वंद्वी रहे घूरन राम अब भाजपा में हैं। वह इस सीट से पिछला तीन संसदीय चुनाव लड़ चुके हैं। घूरन राम के पाला बदलने के बाद से अब लोगों की निगाह विपक्षी गठबंधन पर है कि वह किसे प्रत्याशी बनाता है। ऐसी संभावना है कि पलामू सीट राजद के कोटे में जायेगी और यह देखना दिलचस्प होगा कि वह किसे टिकट देता है। इधर चर्चा यह भी है कि पूर्व सांसद जोरावर राम के बेटे राकेश पासवान इस सीट पर बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ सकते हैं। यदि ऐसा हुआ, तो मुकाबला त्रिकोणीय हो जायेगा।

थोड़ी सी भी चूक भाजपा को महंगी पड़ सकती है

वीडी राम को हैट्रिक बनाने के लिए उतारने के बावजूद भाजपा को इस बात का पूरा एहसास है कि उसकी थोड़ी सी भी चूक पलामू में महंगी पड़ सकती है। हालांकि अभी विपक्ष द्वारा अपना पत्ता नहीं खोला गया है, लेकिन 3.36 लाख वोट की कमी को पाटना भाजपा और वीडी राम दोनों के लिए बड़ी चुनौती है।

युवाओं की बदकिस्मती उनका साथ नहीं छोड़ रही : अर्जुन मुंडा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड में 11वीं जेपीएससी की परीक्षा देनेवाले अभ्यार्थियों के सपनों में एक बार फिर से पानी फिर गया है। चतरा और जामताड़ा जिला के बाद अभ्यर्थियों ने धनबाद जिला में भी पेपर लीक का आरोप लगाते हुए जम कर हंगामा किया। धनबाद में अभ्यर्थियों ने परीक्षा का बहिष्कार कर दिया है। केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि झारखंड के युवाओं की बदकिस्मती उनका साथ नहीं छोड़ रही है। जेपीएससी परीक्षा के पेपर लीक की बेहद दुर्भाग्यपूर्ण सूचना प्राप्त हुई है। मुख्यमंत्री से आग्रह है कि इस मामले की जांच करायें और दोषियों पर कार्रवाई करें।

भाजपा ने जेपीएससी पेपर लीक मामले की सीबीआइ जांच कराने की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रदेश भाजपा ने झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) के प्रश्न पत्र लीक मामले में राज्य सरकार पर हमला बोला है। साथ ही इसकी सीबीआइ जांच की भी मांग की है। पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता विनय कुमार सिंह ने इस विषय को लेकर रविवार को पार्टी कार्यालय में प्रेस कांफ्रेंस कर कहा कि जब से यह सरकार राज्य में बनी है, अच्छी खबर सुनने को कान तरस गये। हमेशा ऐसा कुछ सुनने को मिलता है जिससे राज्य का मान सम्मान कम होता आया है। अब जेपीएससी परीक्षा में पेपर लीक का मामला आया है। इसकी परीक्षाओं के दौरान प्रश्न पत्र परीक्षा केंद्र पर ही खोले जाते हैं पर अबकी ऐसा नहीं हुआ।

इससे साबित होता है कि पिछली परीक्षाओं की तरह इस बार की परीक्षा में भी बड़ा रैकेट शामिल है। सरकार में हिम्मत है तो इसकी सीबीआइ जांच कराये। विनय कुमार सिंह ने कहा कि जेपीएससी, जेएसएससी जैसी परीक्षाओं में राज्य सरकार के माध्यम से दलाल पैसे बना रहे हैं। विनोद सिंह जैसा एजेंट पूर्व सीएम हेमंत सोरेन को पसंदीदा कैंडिडेट के लिए मैसेज करता है। यहां के खनिज संसाधनों की लूट के बाद अब युवाओं का भविष्य यह सरकार लूट रही। सरकार का काम गुड गवर्नेंस देना और विधि व्यवस्था बनाने की होती है जिसमें यह सरकार फेल है। इस मौके पर प्रदेश प्रवक्ता राफिया नाज और सह मीडिया प्रभारी अशोक बड़ाइक भी मौजूद थे।

पेपर लीक से शर्मसार हुआ झारखंड : डॉ लंबोदर महतो

आजसू पार्टी के विधायक ने की मामले की सीबीआइ जांच की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव व विधायक डॉ लंबोदर महतो ने जेपीएससी द्वारा ली जा रही सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा में प्रश्न पत्र का लीक होना झारखंड के लिए शर्मसार बताया है और इसकी सीबीआइ जांच कराने की मांग की है।

उन्होंने कहा कि हाल ही में जेएसएससी की परीक्षा में भी प्रश्न पत्र लीक हो गया और इससे झारखंड की बदनामी हुई बावजूद इसके पुनः यह स्थिति जेपीएससी द्वारा ली जा रही परीक्षा के दौरान हो गयी। उन्होंने कहा कि जेपीएससी द्वारा ली जा रही परीक्षा के दौरान चतरा में तो परीक्षार्थियों ने यह कहकर हंगामा खड़ा कर दिया कि परीक्षा के पूर्व ही प्रश्न पत्र लीक कर दिया गया है। जबकि जामताड़ा जिले के परीक्षा केंद्र का जो दृश्य आया है वह यह स्पष्ट कर रहा है प्रश्न पत्र लीक हो गया। जामताड़ा के

मिहिजाम के एक परीक्षा केंद्र पर तो परीक्षार्थी खुलेआम उत्तर पुस्तिका भरते नजर आये हैं। यह झारखंड सरकार किस तरह से काम कर रही है, स्पष्ट कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह सरकार युवाओं व छात्रों के भविष्य के साथ तो खिलवाड़ कर ही रही है झारखंड की गरिमा को भी चोट पहुंचा रही है। जेपीएससी प्रश्न पत्र लीक हो जाना और परीक्षार्थियों द्वारा खुले आम उत्तर पुस्तिका को भरना भ्रष्टाचार व अराजकता को ही प्रदर्शित करता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए सीबीआइ जांच की अनुशंसा करनी चाहिए।

जेपीएससी पेपर लीक: दोषियों पर कार्रवाई करे राज्य सरकार: बाउरी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने कहा कि झारखंड के कई जिलों से जेपीएससी परीक्षा का पेपर लीक की सूचना लगातार सोशल मीडिया, मीडिया के माध्यम से मिल रही है और यह निश्चित हो गया है कि इस बार भी जेएसएससी पेपर लीक की तरह जेपीएससी का भी पेपर लीक हुआ है। यह काफी दुखद और शर्मनाक है। जेपीएससी के छात्रों के साथ राज्य सरकार ने एक बार फिर क्रूर मजाक किया है। कहा कि कई जिलों से जेपीएससी परीक्षा का पेपर लीक हुआ है। राज्य सरकार ने जहां एक तरफ कोयला, बालू, गिट्टी को बेच दिया, ठीक उसी तरह राज्य के युवाओं के भविष्य को भी इस सरकार ने बेचने का काम किया। श्री बाउरी ने राज्य सरकार से मांग की है कि दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करे।

सीएम जेपीएससी प्रश्नपत्र लीक मामले की सीबीआइ जांच करायें: संजय सेठ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सांसद संजय सेठ ने कहा कि जेपीएससी का पर्चा लीक होना और उसके प्रश्नपत्र को लेकर जो वीडियो सामने आया है, वह झारखंड सरकार के लिए चुनौती है। झारखंड सरकार ने राज्य के युवाओं के साथ एक बार फिर से क्रूर मजाक किया है। उनके जीवन के साथ खिलवाड़ किया है। इसका जवाब इस राज्य के युवा ही नहीं, हर नागरिक समय आने पर देंगे।

सांसद ने कहा कि यह समझ में नहीं आ रहा है कि यह सरकार राज्य की जनता के साथ कैसा मजाक कर रही है। एक तरफ राहुल गांधी युवाओं को रोजगार देने की बात करते हैं। झामुमो का नेतृत्व झारखंडी हितों का दंभ भरता है। राजद के लोग इमानदारी की कसमें खाते नहीं थकते। इसके बावजूद भ्रष्टाचार का इससे उत्कृष्ट उदाहरण और कुछ नहीं हो सकता। श्री सेठ ने कहा कि यह तय है कि हेमंत सरकार को जिस गैंग के लोग चला रहे थे, उसी गैंग के लोग इस सरकार को भी चला रहे हैं। मतलब सिर्फ चेहरा बदला है, बाकी पूरी व्यवस्थाएं यथावत हैं।

www.epaper.azadsipahi.in

18 मार्च, 2024
फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, दशमी
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
सोमवार, वर्ष 09, अंक 148

न्यूज रील्स

दत्तात्रेय होसबोले फिर बने आरएसएस के सरकार्यवाह

मुंबई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने एक बार फिर सरकार्यवाह के पद के लिए दत्तात्रेय होसबोले को चुना है। वह साल 2024 से 2027 तक इस पद पर कार्यरत रहेंगे। बता दें कि होसबोले 2021 से सरकार्यवाह की जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं। नागपुर में चल रही प्रतिनिधि सभा में 17 मार्च को इसका ऐलान किया गया। बता दें कि रविवार को इस बैठक का आखिरी दिन था। संघ की प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मति से यह चुनाव किया है। साल 2021 से पहले वह सह सरकार्यवाह का दायित्व संभाल रहे थे। इससे पहले भैयाजी जोशी सरकार्यवाह की जिम्मेदारी निभा रहे थे।

अरुणाचल और सिक्किम में मतगणना 2 जून को

नयी दिल्ली। चुनाव आयोग ने अरुणाचल और सिक्किम विधानसभा के लिए मतगणना की तारीख बदल कर दो जून कर दी है। आयोग ने इस संबंध में एक अधिसूचना भी जारी की है। इसमें बताया गया है कि दोनों राज्यों में विधानसभा की अवधि दो जून को ही समाप्त हो रही है। इस कारण यह कदम उठाया गया है। इससे पहले चुनाव आयोग ने 16 मार्च को लोकसभा चुनावों के साथ ही चार राज्यों में विधानसभा के चुनावों का ऐलान किया था।

केजरीवाल को इडी के दो नये समन

नयी दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय (इडी) से दो नये समन मिले हैं, जिनमें एक दिल्ली शराब नीति मामले में और दूसरा दिल्ली जल बोर्ड घूस केस से संबंधित है। केजरीवाल की कैबिनेट सहयोगी आतिशी ने कहा कि कोई नहीं जानता कि यह डीजेबी (दिल्ली जल बोर्ड) मामला किस बारे में है। यह किसी भी तरह केजरीवाल को गिरफ्तार करने और उन्हें लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार करने से रोकने की एक बैकअप प्लान लगता है।

भूपेश बघेल और 21 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

रायपुर। महादेव एप मामले में रायपुर की आर्थिक अपराध शाखा ने छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल और अन्य के खिलाफ एफआइआर दर्ज की है। मामला आइपीसी की धारा 120बी, 34, 406, 420, 467, 468 और 471 के तहत दर्ज किया गया है। यह मामला चार मार्च को भूपेश बघेल और 21 अन्य के खिलाफ दर्ज किया गया था। एफआइआर में धोखाधड़ी, आपराधिक साजिश, विश्वासघात और जालसाजी से संबंधित विभिन्न धाराओं और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 7 और 11 के तहत आरोप लगाया गया है।

जेपीएससी की परीक्षा में पेपर लीक के आरोप पर मचा बवंडर

धनबाद, चतरा और जामताड़ा में अभ्यर्थियों ने काटा बवाल

- अधिकारियों ने पेपर लीक की खबरों को अफवाह करार दिया

आजाद सिपाही टीम

रांची/धनबाद/चतरा/जामताड़ा। झारखंड में एक बार फिर झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) की परीक्षा में पेपर लीक होने का आरोप लगा है। पेपर लीक होने की सूचना के बाद धनबाद, चतरा और जामताड़ा में भारी हंगामा हुआ है। इसे लेकर झारखंड में राजनीतिक बवंडर मचा है। भाजपा पूरी तरह हमलावर है। हालांकि अधिकारियों ने पेपर लीक की सूचनाओं को अफवाह करार दिया है।

झारखंड लोकसेवा आयोग (जेपीएससी) ने रविवार को राज्य के विभिन्न जिला मुख्यालयों पर 11वीं संयुक्त सिविल सेवा परीक्षा (प्रारंभिक) 2023 का आयोजन किया था। सुबह पहली पाली की परीक्षा शुरू होने से पहले अलग-अलग जिलों में अभ्यर्थी पेपर लीक का आरोप लगाते हुए हंगामा करने लगे। चतरा, जामताड़ा और धनबाद में पेपर लीक का कथित वीडियो भी वायरल हुआ। इसके बाद हंगामा बहुत बढ़ गया।

अभ्यर्थियों का आरोप : अभ्यर्थियों का कहना था कि पेपर के पैकेट की सील पहले से खुली हुई थी और कुछ प्रश्न पत्र पर सील ही नहीं थी। पेपर के पैकेट को परीक्षार्थियों के सामने खोले जाने की बजाय कार्यालय में ही खोल दिया गया था। उन्होंने कहा कि पेपर को नियम से नहीं खोला गया, जिसकी वजह से परीक्षार्थियों को दी जानेवाली प्रश्न पत्र बुकलेट और ओएमआर शीट का सीरियल नंबर मैच ही नहीं हुआ। अभ्यर्थियों ने पेपर शुरू होने से पहले जब सीरियल नंबर के मैच नहीं होने पर सवाल उठाया, तो उन्हें शांत करा दिया गया। कुछ अभ्यर्थियों का कहना था कि कहीं एक डेस्क पर एक अभ्यर्थी बैठा था, तो कहीं तीन अभ्यर्थी एक डेस्क पर बैठ कर परीक्षा दे रहे थे।

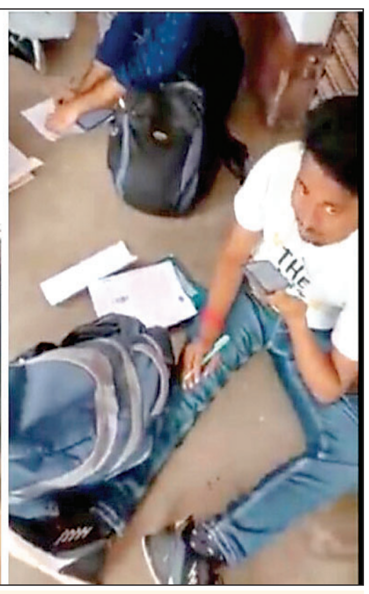

चतरा में मौके पर पहुंची पुलिस

चतरा स्थित उपेंद्र नाथ वर्मा कॉलेज परीक्षा केंद्र पर पेपर लीक होने का अरोप लगा कर छात्रों ने हंगामा किया। सूचना के बाद सदर अनुमंडल पदाधिकारी सुरेंद्र उरांव, डीएसपी मुख्यालय रोहित कुमार रजवार और एसडीपीओ संदीप सुमन मौके पर पहुंचे। उन्होंने हंगामा कर रहे अभ्यर्थियों को शांत कराने की कोशिश की। अधिकारियों ने मामले की जांच का आश्वासन देते हुए कहा कि अगर लापरवाही हुई होगी, तो निश्चित कार्रवाई की जायेगी। अभ्यर्थियों का आरोप था कि प्रश्न पत्र उनके बीच नहीं खोल गये।

धनबाद में भी अभ्यर्थियों ने किया हंगामा

चतरा और जामताड़ा के अलावा धनबाद में भी पेपर लीक का आरोप लगा। धनबाद के राजकीयकृत उच्च विद्यायल पुटकी में 11वीं जेपीएससी का पेपर लीक होने का आरोप लगा कर अभ्यर्थियों ने जम कर हंगामा किया। हंगामे के बाद आला अधिकारी वहां पहुंचे और अभ्यर्थियों को शांत कराने की कोशिश की।

जामताड़ा में सील खुले होने का आरोप

जामताड़ा स्थित जेजेएस कॉलेज मिहिजाम में परीक्षार्थियों ने जम कर हंगामा किया। उनका आरोप था कि पहले से ही प्रश्न पत्र खुला हुआ था, जिससे लीक होने की संभावना है। परीक्षार्थियों ने कहा कि सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं था, ना कोई अधिकारी था, जिसके कारण प्रश्न पत्र लीक होने की संभावना अधिक बनती है। परीक्षा शुरू होने के पहले ही लोग हंगामा करने लगे, जिसकी सूचना जिले के अधिकारियों को मिली, तो मौके पर जिले के उपायुक्त, उपविकास आयुक्त और अनुमंडल पदाधिकारी वहां पहुंचे और परीक्षार्थियों को समझा बुझा कर शांत कराया। जिले के उपायुक्त कुमुद सहाय ने बताया कि प्रश्न पत्र लीक की कोई संभावना नहीं है। बावजूद इसके हम लोग मामले को देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसकी जांच की जायेगी। उसके बाद ही कुछ कहा जा सकता है। यहां की एक वीडियो भी वायरल की गयी। हालांकि वहां के उपायुक्त ने इस वीडियो को जामताड़ा का होने से इनकार किया है।

बाबूलाल मरांडी हुए हमलावर

पेपर लीक प्रकरण पर भाजपा हमलावर हो गयी है। प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि पिछले दिनों जेएसएससी-सीजीएल की परीक्षा आयोजित की गयी थी। उस समय पेपर लीक होने के कारण परीक्षा रद्द की गयी। रविवार को जेपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा के दौरान जिस प्रकार से पेपर लीक हुआ, उससे स्पष्ट है कि झारखंड सरकार ने जेएसएससी की तरह जेपीएससी को भी पैसा कमाने का जरिया बना दिया है। इसलिए झारखंड के नौजवानों से मेरी अपील है, अब इस सरकार को उखाड़ फेंकने में आप सबका साथ चाहिए। मैं विश्वास दिलाता हूं, भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही ऐसे भ्रष्ट लोगों को चुन-चुन कर जेल भेजेंगे और झारखंड के नौजवानों का हक, झारखंड के नौजवानों को दिला कर रहेंगे तथा कदाचार मुक्त परीक्षा सुनिश्चित करेंगे।

जेपीएससी ने अफवाह करार दिया : इस बीच झारखंड लोक सेवा आयोग ने पेपर लीक की आशंकाओं को निराधार बताते हुए इसे अफवाह करार दिया है। आयोग की अध्यक्ष नीलिमा केरकेट्टा के हवाले से सूत्रों ने कहा कि जामताड़ा के उपायुक्त ने वायरल वीडियो के जिले का होने से इनकार किया है। अन्य स्थानों से भी रिपोर्ट मंगायी गयी है और कहीं से भी पेपर लीक की सूचना नहीं है। परीक्षा में करीब साढ़े तीन लाख अभ्यर्थी शामिल हुए।

'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' संपन्न

मैं सिस्टम समझता हूं, इसलिए वे मुझसे डरते हैं : राहुल गांधी

आजाद सिपाही संवाददाता

मुंबई। कांग्रेस की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' रविवार को मुंबई के शिवाजी पार्क में इंडी अलायंस की मेगा रैली के साथ संपन्न हो गयी। पार्टी सांसद राहुल गांधी द्वारा मणिपुर से 14 जनवरी को शुरू की गयी इस यात्रा ने 6600 किलोमीटर की दूरी तय की। इस दौरान यात्रा 15 राज्यों के 110 जिलों से होकर गुजरी। यात्रा के समापन पर आयोजित रैली को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि कि हम नरेंद्र मोदी से नहीं, बल्कि हम एक शक्ति से लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले साल हमने कन्याकुमारी से कश्मीर तक यात्रा की। वह यात्रा हमें क्यों करनी पड़ी, क्योंकि देश का कम्युनिकेशन सिस्टम, मीडिया या सोशल मीडिया देश के हाथ में नहीं है। जनता के मुद्दे, बेरोजगारी, हिंसा, नफरत, महंगाई, किसानों, अग्निवीर के मुद्दे आपको मीडिया में नहीं दिखेंगे। मैं इस सिस्टम को समझता हूं। इसलिए वे मुझसे डरते हैं। उन्हें किसी ने कहा कि राजा की आत्मा सीबीआइ, इडी, इनकम टैक्स में है। इसी राज्य के एक वरिष्ठ नेता कांग्रेस छोड़ते हैं और मेरी मां से रोकर कहते हैं कि मुझे शर्म आ रही है कि इस शक्ति से लड़ने की हिम्मत नहीं है, मैं जेल नहीं जाना चाहता। ऐसे हजारों लोग डराये गये हैं। उन्होंने कहा कि चीन में एक शेनझेन है। धारावी, शेनझेन का मुकाबला कर सकता है। बस उनके लिए बैंक के दरवाजे तो खोलिये। यहां 22 लोगों के पास उतना ही धन है, जितना हिंदुस्तान के 70 करोड़ लोगों के पास है। भारत में इंटरनेशनल एयरपोर्ट खुलवाने के लिए साल लग जाते हैं। यहां शादी के लिए 10 दिन में इंटरनेशनल एयरपोर्ट खुल जाता है। उन्होंने कहा कि मणिपुर में इसी शक्ति ने सिविल वार का माहौल बना रखा है। मैंने सोचा कि यात्रा वहीं से शुरू होगी और धारावी में खत्म होगी। मुंबई टैलेंट का केंद्र है। यही शक्ति एकसाथ लोगों को बर्बाद करने में लगी है। रैली में राहुल के अलावा तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, राजद नेता तेजस्वी यादव, शिवसेना (उद्धव गुट) नेता उद्धव ठाकरे, एनसीपी (शरद गुट) के शरद पवार और सुप्रिया सुले, आम आदमी पार्टी और अन्य पार्टियों के नेता मौजूद थे। रैली में ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, सीताराम एचुरी और अरविंद केजरीवाल नहीं पहुंचे।

चंपाई, आलमगीर, कल्पना और सुप्रियो भी शामिल हुए

रैली में शामिल होने के लिए झारखंड के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन भी मुंबई गये। उनके साथ ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम, पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन और झामुमो के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य भी मुंबई गये। ये सभी नेता रैली के मुख्य मंच पर उपस्थित थे।

हजारीबाग के छह एसपी बदल गये, पर नहीं बदला गोपनीय रीडर

- एक सिपाही के आगे नतमस्तक है पुलिस तंत्र

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हजारीबाग के एसपी कार्यालय में रीडर का काम एक सिपाही कर रहा है। नाम है सुनील यादव। वह 2012 बैच का सिपाही है। सिपाही बनने के बाद से उसकी तैनाती किसी थाने में नहीं हुई है। वह रीडर के रूप में 12 साल से काम कर रहा है। विभाग में पकड़ इतनी कि छह एसपी बदल गये, लेकिन वह रीडर नहीं बदला। ऐसा नहीं है कि उसे बदलने के लिए अधिकारियों को कहा नहीं गया। लेकिन न जाने किस कारण से वह अब भी रीडर का ही काम कर रहा है। हजारीबाग में दो स्थायी रीडर अलग से तैनात हैं, लेकिन उन्हें गोपनीय रीडर बनने का सौभाग्य नहीं मिला। इस आरक्षी ने आइपीएस मनोज कौशिक, मयूर पटेल, अनूप बिरथरे, एस कार्तिक, मनोज रतन चौथे और अब अरविंद सिंह के एसपी बनने पर भी गोपनीय रीडर का काम कर रहा है।

नहीं गया प्रशिक्षण में : जमादार के पद पर प्रोन्नति के लिए सुनील यादव को प्रशिक्षण के लिए एमपीटीसी पदमा भेजा गया था। उसने वहां एक दिन भी प्रशिक्षण नहीं लिया, लेकिन उसकी हाजिरी बनती रही। वह गोपनीय रीडर का काम करता रहा। एमपीटीसी के एक हवलदार को जानकारी लगी, तो उसने रिपोर्ट कर दी। आरक्षी तो नहीं बदला, लेकिन हवलदार जरूर बदल गया। आरक्षी की शिकायत इधर पुलिस मुख्यालय में पहुंची, तो उस समय प्रशिक्षण की एडीजीपी प्रिया दुबे थीं। उन्होंने उसका प्रशिक्षण संस्थान पदमा से बदल कर नेतरहाट कर दिया। वह नेतरहाट भी नहीं गया। इस बीच प्रशिक्षण एडीजीपी सुमन गुप्ता बनायी गयीं। उनके योगदान के साथ ही प्रशिक्षण संस्थान एसपी ने आरक्षी सुनील यादव को निलंबित कर दिया और उसे पैतृक जिला हजारीबाग में वापस कर दिया। सुनील पहले से गोपनीय रीडर के रूप में काम कर रहा था। उसे कुछ ही दिन के अंदर निलंबन से मुक्त कर दिया गया। आज की तारीख में भी वह गोपनीय रीडर का काम कर रहा है।

बना रहा है आलीशान बंगला

हजारीबाग केंद्रीय कारा के पीछे सुनील यादव का बड़ा मकान बन रहा है। सूत्र की मानें, तो नौकरी में आने के बाद उसने हजारीबाग में जमीन ली और अब उसी पर बड़ा घर बन रहा है। उसके कनेक्शन के तार पूरे जिले में फैले हुए हैं।

चुनाव आयोग ने चुनावी बांड का ताजा डाटा वेबसाइट पर डाला

12 अप्रैल, 2019 से पहले के हैं नये आंकड़े

- सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर उठाया गया है कदम

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। चुनाव आयोग ने रविवार को चुनावी बांड पर ताजा डाटा सार्वजनिक किया, जिसे सीलबंद कवर में सुप्रीम कोर्ट में जमा किया गया था और बाद में इसे सार्वजनिक डोमेन में डालने के लिए कहा गया था। ये विवरण 12 अप्रैल, 2019 से पहले की अवधि से संबंधित हैं। इस तिथि के बाद के चुनावी बांड विवरण पिछले सप्ताह चुनाव आयोग द्वारा सार्वजनिक किये गये थे। चुनाव आयोग ने कहा कि राजनीतिक दलों से प्राप्त डाटा सीलबंद लिफाफे को खोले बिना सुप्रीम कोर्ट में जमा किया गया था। 15 मार्च, 2024 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुपालन में सुप्रीम कोर्ट की रजिस्ट्री ने उसी के डिजिटल रिकॉर्ड के साथ भौतिक प्रतियां वापस कर दी हैं। भारत के चुनाव आयोग ने रविवार को चुनावी बांड पर सुप्रीम कोर्ट की रजिस्ट्री से डिजिटल रूप में प्राप्त डाटा को अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने दिये थे निर्देश : दरअसल भारतीय स्टेट बैंक ने 2018 में योजना की शुरुआत के बाद से 30 किस्तों में 16 हजार 518 करोड़ रुपये के चुनावी बांड जारी किये हैं। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने स्टेट बैंक को 12 अप्रैल 2019 से खरीदे गये चुनावी बांड की जानकारी चुनाव आयोग को सौंपने का निर्देश दिया था। स्टेट बैंक चुनावी बांड जारी करने के लिए अधिकृत वित्तीय संस्थान है।

स्टेट बैंक ने सौंपा था डाटा : स्टेट बैंक ने मंगलवार शाम को उन संस्थाओं का विवरण चुनाव आयोग को सौंपा था, जिन्होंने चुनावी बांड खरीदे थे और राजनीतिक दलों ने उन्हें भुनाया था। शीर्ष अदालत के आदेश के मुताबिक चुनाव आयोग को 15 मार्च शाम पांच बजे तक बैंक द्वारा साझा की गयी जानकारी अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित करनी थी।

1 मार्च, 2018 से 11 अप्रैल, 2019 के बीच का डाटा प्रकाशित करने की मांग

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गयी है, जिसमें एक मार्च, 2018 से 11 अप्रैल, 2019 तक बेचे गये चुनावी बांड के विवरण का खुलासा करने की मांग की गयी है। इसमें कहा गया है कि मतदाता योजना शुरू होने से पहले की अवधि के लिए सियासी दलों की फंडिंग के बारे में जानने के हकदार हैं। पिछले महीने सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसले में केंद्र की चुनावी बांड योजना को रद्द कर दिया था। अदालत ने गुमनाम चुनावी चंदे को असंवैधानिक करार दिया। इसके साथ ही भारतीय स्टेट बैंक को इस योजना के तहत 12 अप्रैल, 2019 से 15 फरवरी, 2024 तक के चुनावी बांड का विवरण चुनाव आयोग को सौंपने का निर्देश दिया था।

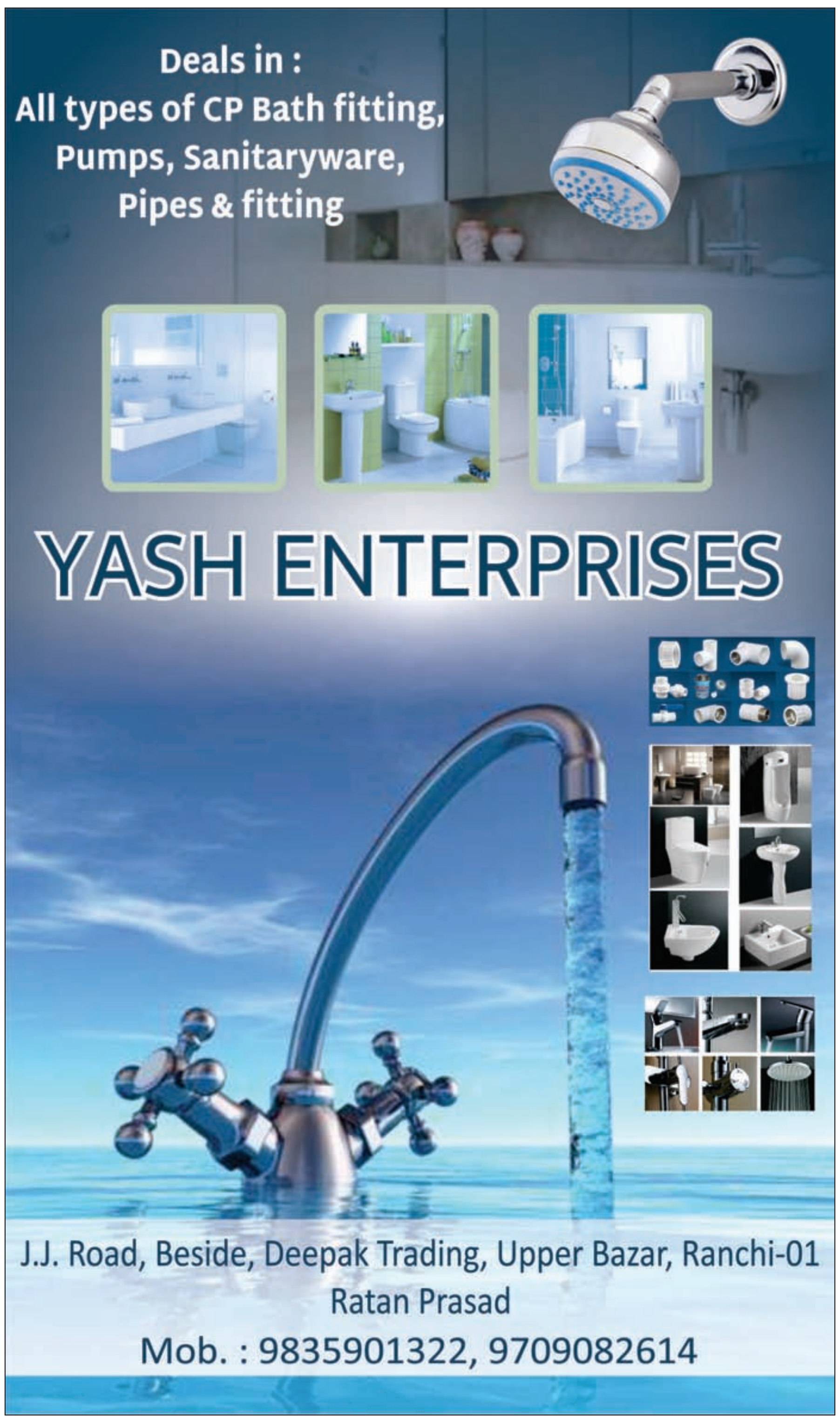

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	32.4 °c	18.6 °c
सूर्यास्त (आज) :		17.58 बजे
सूर्योदय (कल) :		05.55 बजे

महत्वपूर्ण खबरें

भाजपा महिला मोर्चा ने लगाया नेत्र जांच शिविर

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष आरती सिंह के द्वारा सदाबहार चौक, दुर्गा मंदिर के पास समाधान केंद्र में श्री पद्मनाभा आइ इंस्टीट्यूट के माध्यम से निःशुल्क नेत्र जांच शिविर लगाया गया। इस शिविर में सैकड़ों ने अपने नेत्र की जांच करायी। जांच के दौरान मोतियाबिंद के मरीज भी मिले। आरती सिंह ने नेत्र जांच शिविर का शुभारंभ फीता काटकर किया। उन्होंने कहा कि शिविर का आयोजन कर सेवा का मौका मिला। इस मौके पर नीलम चौधरी, बबिता वर्मा, प्रमोद सिंह, रामावतार केरकेटा, मुकेश सिंह, अमन सिंह बघेल, लोकेश चौधरी, उत्कर्ष मौर्य, उर्मिला, प्रज्ञा भारती, जयंती, शिल्पी शालिनी उपस्थित हुए।

बीओआइ इंटर जोनल क्रिकेट टूर्नामेंट में जमशेदपुर की टीम विजयी

रांची (आजाद सिपाही)। बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशंस झारखंड की ओर से आयोजित इंटर जोनल क्रिकेट टूर्नामेंट में जमशेदपुर की टीम विजयी रही। फाइनल मैच का आयोजन रविवार को धनबाद अंचल और जमशेदपुर अंचल के बीच जेके इंटरनेशनल स्कूल में किया गया। मैच का उद्घाटन महासचिव सुनील लकड़ा और अध्यक्ष अमित कुमार ने किया। दोनों अंचल के बीच हुए कड़े मुकाबले में जमशेदपुर अंचल विजयी हुआ। बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशंस झारखंड राज्य इकाई के महासचिव सुनील लकड़ा, अध्यक्ष अमित कुमार और उपाध्यक्ष बेंजामिन मुर्मू द्वारा विजयी टीम जमशेदपुर अंचल को इंटर जोनल क्रिकेट टूर्नामेंट की ट्रॉफी दी गयी। नाबाद 104 रन बनाकर अपनी टीम को जीत दिलाने वाले जमशेदपुर अंचल के नीरज कुमार को मैन ऑफ द मैच, बेस्ट बैट्समैन और मैन ऑफ द सीरीज का खिताब से नवाजा गया। जमशेदपुर अंचल के रवि प्रकाश पांडेय को बेस्ट बॉलर का खिताब मिला। 15 ओवर के मैच में टॉस जीतकर धनबाद अंचल की टीम ने बैटिंग का निर्णय लिया और नौ विकेट खोकर 144 रन बनाये। जवाब में जमशेदपुर अंचल की टीम शुरुआती दो झटके के बाद संभली और एक ओवर शेष रहते चार विकेट खोकर 146 बनाकर बनायी। मैच में अरूण कुमार, हरिश सिंह, मो अली हसन, निपुण गुप्ता, वरूण कुमार, भरत लाल ठाकुर, सत्य प्रकाश, विकास भगत, मनीष कुमार, रंजन जयसवाल, मुकेश कुमार सिन्हा, सुनील रावत उपस्थित थे।

लिटिल विंग्स स्कूल में नारी उत्सव

रांची (आजाद सिपाही)। बूटी मोड़ स्थित लिटिल विंग्स स्कूल में महिला दिवस के उपलक्ष्य पर नारी उत्सव 2024 का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विद्यालय से जुड़ी सभी महिलाओं, चाहे वह विद्यालय में कार्यरत हो या विद्यार्थियों के परिवार की सदस्य हो, उन्हें समर्पित रहा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि भोजपुरी की स्टार सिंगर देवी और डुमरदगा पंचायत की मुखिया काजल देवी और पूर्व मुखिया जुगुन मुंडा थे। प्राचार्या नीता सिंह द्वारा अतिथियों को स्वागत किया गया। बेस्ट सेल्फी कांटेस्ट की विजेता 11 महिलाओं के अलावे सेल्फी भेजने वाली सभी महिलाओं को सांत्वनां पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर अंडर 16 साउथ एशिया फेडरेशन वूमेंस फुटबॉल चैंपियनशिप में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व कर झारखंड का मान बढ़ाने वाली ओरमांझी की दिव्यानी लिंडा और उनके कोच अनवारूल हक को भी सम्मानित किया गया।

पांच दिवसीय रंग रंगीला श्याम फागण अमृत महोत्सव

रांची (आजाद सिपाही)। राजधानी रांची श्याममय हो गयी। फाल्गुन में देश भर में श्याम प्रेमी खाटू नरेश की आराधना में लीन आ रहे हैं। हर तरफ उत्सव सा माहौल। यह नजारा था श्री श्याम मित्र मंडल के स्थापना दिवस पर पांच दिवसीय रंग रंगीला श्री श्याम फागण अमृत महोत्सव का। इसका आगाज रविवार से हुआ। सुबह 7.30 बजे श्री गणेश पूजन और ध्वज स्थापना के साथ महोत्सव शुरू हुआ। श्री खाटू नरेश का दिव्य पवन भृंगार किया गया। रंग-बिरंगे फूलों से पूरा मंदिर परिसर मनमोहन छटा बिखेर रहा था। यज्ञ हवन के यजमान राजेश और प्रकाश कटारूका ने आचार्य रत्नाकर शर्मा के सानिध्य में अनुष्ठान कराया। दिन के 11 बजे से श्री श्याम अखंड ज्योति पाठ नृत्य नाटिका संग का आयोजन हुआ। श्याम जगत के प्रसिद्ध पाठ वाचक चुरु राजस्थान के मेहुल शर्मा द्वारा किया गया। कोलकाता के मंदिरा सिंह डांस ग्रुप द्वारा नाटिका का भाव विभोर मनोहारी मंचन किया गया। संपूर्ण श्याम मंदिर अखंड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया... से गुंजायमान हुआ। भोग प्रसाद विश्वनाथ नारसरिया और अधिवक्ता जिज्ञासा नारसरिया द्वारा अर्पित किया गया। मौके पर पुष्पा देवी, पोद्दार स्नेह, स्नेहा पोद्दार, सुरेश सरावगी, श्याम सुंदर शर्मा, रत्नाकर शर्मा, गौरव अग्रवाल मोनू, पंकज मोदी, पंकज सांवरिया, श्रवण ढांढनिया, गौरव अग्रवाल, आदित्य लोहिया, पंकज गाड़ोदिया समेत अन्य उपस्थित थे।

स्वास्थ्य सेवा फ्रैक्चर: बीएयू में छात्र की मौत, बरपा हंगामा

दो घंटे बाद पहुंची एंबुलेंस, छात्र ने तड़प-तड़प कर दम तोड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। समय पर एंबुलेंस नहीं पहुंचने के कारण छात्र ने तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया। यह आलम है राजधानी के बीएयू का। यहां एक छात्र की मौत के बाद खूब हंगामा बरपा। यह घटना शनिवार की देर रात की है। एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग के छात्र की हार्ट अटैक के मौत के बाद उसके साथी हंगामा करने लगे। छात्रों का आरोप था कि समय पर एंबुलेंस नहीं मिली, जिससे तड़पते-तड़पते छात्र रूपेश कुमार की जान चली गयी। प्रबंधन को सूचना देने के बाद भी तीन घंटे लेट से पहुंचा। इस घटना के बाद छात्रों में भारी आक्रोश दिखा। छात्रों ने कहा कि इतने बड़े कैंपस में कोई सुविधा नहीं है। एंबुलेंस भी नहीं है और ना रात में डॉक्टर। ना ही प्रबंधन को इसका कोई ध्यान है। काफी समझाने के बाद छात्र माने। साथ ही प्रबंधन ने भविष्य में सारी तैयारी मुकम्मल करने का भरोसा भी दिया।

क्या है मामला

एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग के छात्र रूपेश कुमार की मौत हार्ट अटैक से हो गयी। बताया जा रहा है कि रूपेश कुमार को जब हार्ट अटैक का दौरा पड़ा, तब प्रबंधन और एंबुलेंस दोनों को सूचना दी गयी, लेकिन दोनों समय पर नहीं पहुंचे। एंबुलेंस तकरीबन तीन घंटे बाद पहुंची। तब तक रूपेश कुमार की मौत हो चुकी थी। वहीं प्रबंधन रूपेश कुमार की मौत होने के दो घंटे बाद पहुंचा। छात्र प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। छात्रों का कहना था कि इतने बड़े कैंपस में एक एंबुलेंस तक नहीं है। ऐसे में स्वास्थ्य सुविधाओं का हाल समझा जा सकता है। समय रहते अगर रूपेश कुमार का इलाज हो जाता, तो आज उसकी जान बच जाती। ऐसे में सभी छात्र डरे हुए हैं। उनका कहना है कि अगर उनकी तबीयत बिगड़ जाये, तो वे क्या करेंगे। भगवान भरोसे इतना बड़ा विश्वविद्यालय चल रहा है।

प्रतापपुर के तत्कालीन बीडीओ पर एक्शन

रांची (आजाद सिपाही)। प्रतापपुर चतरा के तत्कालीन प्रखंड विकास पदाधिकारी मनोज कुमार गुप्ता पर कार्रवाई की गयी है। झारखंड प्रशासनिक सेवा के इस अधिकारी की असंचयात्मक प्रभाव से एक वेतन वृद्धि रोकने का आदेश दिया गया है। उनके विरुद्ध ग्रामीण विकास विभाग ने 2019 में ही कार्रवाई की अनुशंसा की थी। उन पर बीडीओ के पद पर रहते हुए सेवानिवृत्त पंचायत सचिव प्रतापपुर श्यामपुर कुमार आयकत को सामाजिक सुरक्षा अंतर्गत वृद्धा पेंशन वितरण के लिए दिये गये अग्रिम और समायोजित राशि 1074200 के समायोजन अथवा वापसी के लिए आवश्यक कार्रवाई नहीं की गयी, जिससे लक्षित समूह को योजना का लाभ प्राप्त नहीं हो सका। ऐसे में मनोज गुप्ता के इस कृत्य से सरकारी राशि का दुरूपयोग हुआ। पूरे मामले की जांच की गयी। दो बार स्पष्टीकरण भी हुआ। बता दें कि इस मामले में एक और बीडीओ पर कार्रवाई हो चुकी है। जवाब की समीक्षा के बाद उनकी एक वेतन वृद्धि रोकने का आदेश दिया गया है।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष – नौकरी में आपसी मतभेद दूर होंगे, नये पद-अधिकार प्राप्त होगा। मगर आपको आसपास के लोगों से कष्ट बना रहेगा।

वृष – आपके सोचे कामों में व्यवधान आयेंगे। जहाँ तक संभव हो इस समय ज्यादा पेंचीदा मामलों में हाथ न डालें।

मिथुन – व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगा। कामकाज अच्छा चलेगा.आमदनी बढ़ेगी। कर्ज की स्थिति में सुधार होगा।

कर्क – ग्रहयोग आज आपके पक्ष में नहीं है। परिश्रम के बावजूद स्थिति मनमाफिक नहीं रहेगी।

सिंह – अपने सोचे अनुसार काम कम होंगे। किसी न किसी समस्या से उलझना पड़ सकता है।

कन्या – आपको आकस्मिक धन लाभ होने की संभावना, रोजगार-व्यापार के कार्य तेजी से चलेगा और आपकी प्रगति होगी।

तुला – आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आपका काम बनेगा.किसी काम से आपको पैसा मिलेगा।

वृश्चिक – संतान पक्ष के लिये खर्च होगा.यह खर्च उनकी प्रगति के लिये किया जायेगा, लेखन-पठन-पाठन में रूचि।

धनु – यशस्वी कार्य करने का अवसर मिलेगा, अभी तक जो कोई इच्छा अधूरी रही हो,ऐसी इच्छा की पूर्ति होने का सिलसिला प्रारंभ होगा।

मकर – अपने क्षेत्र के प्रमुख व्यापारियों अधिकारियों से आप सम्बन्ध बनाने की चेष्टा करें उनसे चल रहे समस्या का समाधान मिलेगा।

कुंभ – अनिवार्य कामों में आपकी व्यवहार कुशलता सिद्धि और प्रसिद्धि देने वाली है, आवश्यक कार्यों के सम्पादन में आपकी अपनी सूझबूझ प्रशंसनीय होगी।

मीन – आपने जिस पर भी आज तक भरोसा किया होगा ऐसा व्यक्ति आपके विरोध में कार्य करेगा,लेकिन आपको किसी तरह का नुकसान नहीं होगा।

होली का धमाल: रशियन डांसर संग थिरके लोग

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सन डाउनर इंटरटेनमेंट के तत्वावधान में रविवार को कार्निवल पैलेस में प्री होली सेलिब्रेशन इट्स होली का आयोजन किया गया। इस आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता रही कि दो रशियन डांसरों ने अपने नृत्य और अदाओं से सबको थिरकने पर मजबूर कर दिया। सन डाउनर इंटरटेनमेंट के सीइओ आदित्य राज और फाउंडर इशान कुमार सोनी ने बताया कि रांची में होनेवाले होली मिलन समारोह से यह सबसे अलग और शानदार रहा। कार्यक्रम में रशियन डांसरों ने अपनी नृत्यकला का शानदार प्रदर्शन किया। इसके साथ ही डीजे की धुन पर युवाओं ने रंगभरी होली खेली और जम कर मस्ती की। होली खेलने के साथ ही युवाओं के लिए स्नेक्स और ड्रिंक की भी व्यवस्था थी। कार्यक्रम के सफल आयोजन में सीइओ आदित्य राज, फाउंडर इशान कुमार सोनी, मीडिया मैनेजर आयुष राज वर्मा और अन्य का भरपूर सहयोग रहा।

वैश्य मोर्चा ने लोकसभा प्रभारी-उप प्रभारी की घोषणा की

वैश्य विरोधी, अपराधी को समर्थन नहीं: महेश्वर

29 मार्च को भुरकुंडा में वैश्य मतदाता जागरूकता सम्मेलन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा ने 10 लोकसभा क्षेत्र के प्रभारी और उप प्रभारियों की घोषणा की। ये प्रभारी वैश्य मतदाताओं को संगठित कर चुनाव के प्रति जागरूक करेंगे। यह जानकारी मोर्चा की ओर से रविवार को रेडियम रोड स्थित होटल आलोका के सभागार में पत्रकारों से बातचीत में दी गयी।

रांची में हीरानाथ साहू को प्रभारी, अश्विनी कुमार साहू अरगोड़ा-कपिल प्रसाद साहू रांची को उप प्रभारी बनाया गया है। हजारीबाग में बीरेंद्र कुमार को प्रभारी, ढलन साव बड़कागांव, लखन अग्रवाल गोला के उप प्रभारी बनाये गये हैं। गिरिडीह में मोहन साव को प्रभारी, दिनेश्वर मंडल तेनुघाट, राजकुमार मंडल कथारा को उप प्रभारी बनाया गया है। धनबाद में रेखा मंडल को प्रभारी और डॉ माधवचंद्र मंडल को उप प्रभारी बनाया गया है। चतरा में राजीव कुमार को प्रभारी, प्रीति कुमारी साहा और दामोदर साव को उप प्रभारी बनाया गया है। कोडरमा में अधिवक्ता रामसेवक प्रसाद को प्रभारी, अशोक वर्णवाल और संतोष मंडल को उप प्रभारी बनाया गया है। गोड्डा में प्रमोद चौधरी को प्रभारी, राजकुमार वर्णवाल और विष्णु मंडल को उप प्रभारी बनाया गया है। लोहरदगा में उपेंद्र प्रसाद को प्रभारी, जगदीश साहू और सतीश जयसवाल को उप प्रभारी बनाया गया है। जमशेदपुर में नंदलाल साहू को प्रभारी, मनोज गुप्ता और अजय कुमार को उप प्रभारी बनाया गया है। चाईबासा में सुनील प्रसाद साव को प्रभारी, दिलीप राम और आनंद बिहारी साहू को उप प्रभारी बनाया गया है। वैश्य मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहू ने कहा कि वैश्य मोर्चा ने चुनाव के इस महा लोकतंत्र में विश्वास रखते हुए सच्चे, अच्छे और समाज के प्रति समर्पित लोगों को समर्थन देने का निर्णय लिया है।

रांची, जमशेदपुर और सरायकेला जेल का मरम्मत कार्य

रांची (आजाद सिपाही)। रांची, जमशेदपुर और सरायकेला जेल में 2.82 करोड़ की लागत से निर्माण और मरम्मत का कार्य होगा। इसे लेकर गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने राशि आवंटित कर दी है। गृह विभाग के द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि आवंटित राशि की निकासी और खर्च करने के संबंधित पदाधिकारी जेल अधीक्षक होंगे। जेल अधीक्षक, जिला कोषागार से राशि की निकासी कर झारखंड पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन के खाते में ट्रांसफर करायेंगे और विभाग को रिपोर्ट करेंगे।

स्वर्णरेखा ग्रुप ने दिव्यानी को किया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रविवार को बरियातू स्थित स्वर्णरेखा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस की ओर से रांची की बेटी युवा फुटबॉल खिलाड़ी दिव्यानी लिंडा को सम्मानित किया गया। संस्थापक प्रकाश सिंह, सचिव डॉ गंगेश गुंजन झा, निदेशक डॉ सिद्धार्थ प्रकाश, प्राचार्य विद्या सागर, समाजसेवी आशुतोष द्विवेदी, दीपक कुमार दुबे मौजूद थे। इंटरनेशनल फुटबॉल खिलाड़ी दिव्यानी लिंडा नेपाल में आयोजित सेफ 16 फुटबाल प्रतियोगिता में भारतीय फुटबॉल टीम का हिस्सा रही। साथ ही उन्होंने शानदार प्रदर्शन कर भारतीय फुटबॉल टीम को रनर अप बना कर वापस झारखंड लौटी। इसमें जीना इसी का नाम है कार्यक्रम के अंतर्गत दिव्यानी लिंडा ने विद्यार्थियों के बीच अपने जीवन पर प्रकाश डाला। दिव्यानी ने कहा कि मैं अत्यंत गरीब परिवार की लड़की हूं। मां मजदूरी करती है और छोटा भाई दिव्यांग है, परंतु मेरे खेल के प्रति जुनून, मेहनत और सपना आज मेरे मुकाम तक ला छोड़ा है। मेरे गुरु अनवरुल हक की कड़ी मेहनत और मेरी परीक्षा ही आज रंग लाकर एक अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में चरितार्थ किया है।

एकम सनातन भारत दल झारखंड में उतारेगा प्रत्याशी

चुनाव आयोग ने दल का जारी कर दिया चुनाव चिह्न : शिवाजी सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। एकम सनातन भारत दल के प्रदेश अध्यक्ष शिवाजी सिंह परमार ने कहा कि आगामी चुनाव के लिए निर्वाचन आयोग ने 28 राज्यों के लिए चुनाव चिह्न प्रदान किया है। इसमें झारखंड, बिहार में त्रिकोण चुनाव चिह्न प्राप्त हुआ है, जबकि अन्य राज्यों में बांसुरी प्राप्त हुआ है। 2024 के लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक प्रत्याशी खड़ा करने जा रहे हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष अंकुर शर्मा जम्मू कश्मीर की जम्मू लोकसभा सीट के प्रत्याशी हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य भूमि जिहाद, जनसंख्यायिकी परिवर्तन को भारत सरकार अपराध की श्रेणी में रखे। पांच प्रतिशत से कम जनसंख्या वाले समुदाय को ही अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त हो। मंदिर, मठ सरकारी नियंत्रण से मुक्त किया जाये। गो हत्या पर पूरे राष्ट्र में पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाये, इसे लेकर पैदल मार्च प्रारंभ किया गया है। इसमें एकम सनातन भारत दल का पूर्ण सहयोग है। कहा कि लोकसभा चुनाव में हमारा प्रयास है कि झारखंड से एकम सनातन भारत दल अपने प्रत्याशी को चुनाव में उतरेगा। रविवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान उपाध्यक्ष जीतेंद्र सिंह, धर्म जागरण के सत्यप्रकाश, मनीष सिंह, डॉ सुमंत कुमार झा मौजूद रहे।

भंडारा के लजीज व्यंजनों का 1300 ने उठाया लुत्फ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पुंदाग स्थित श्रीकृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवाधाम दिव्यांग आश्रम प्रांगण मे उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, ओमप्रकाश सरावगी, विशाल जालान, पुर्णमल सर्राफ की ओर से भंडारा का 1300 पैकेट बांटा गया। इसमें विभिन्न प्रकार के लजीज व्यंजनों में पुड़ी, वेज पुलाव, आलू-काबली चना-टमाटर मिश्रित सब्जी, सूजी का हलवा, जलेबी और मिक्चर था। भंडारे की सेवा में विशेष रूप अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, पुर्णमल सर्राफ, ओम प्रकाश सरावगी, विशाल जालान, बिष्णु सोनी, चिरंजीलाल खंडेलवाल, नंदकिशोर चौधरी, सुरेश भगत, शिव भगवान अग्रवाल, ज्ञान प्रकाश शर्मा, मनीष सोनी, चंद्रदीप साहू, परमेश्वर साहू, उर्मिला पाडिया, सुनीता अग्रवाल, अमिता जालान और अन्य उपस्थित थे।

देश की अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे तेजी से विकसित हो रही: राज्यपाल

देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में सीए का अहम रोल

झारखंड नीचे से दूसरे पायदान पर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। इसका लक्ष्य विकसित भारत 2047 हासिल करना है। वर्तमान में हमारे देश की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। राज्यपाल रविवार को रांची के गोस्सनर कॉलेज में रांची चैप्टर ऑफ कॉस्ट एकाउंटेंट की ओर से कॉस्ट एकाउंटेंट द फोर्स बिहाइंड इंडिया मर्जेंस एस थर्ड लार्जेस्ट इकोनॉमी विषय पर आयोजित वार्षिक सामारोह.2024 में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया का गौरवशाली इतिहास रहा है। इसके 90 हजार सदस्य हैं और पांच लाख विद्यार्थी हैं। इन विद्यार्थियों पर देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने की अहम जिम्मेदारी है।

राज्यपाल ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में सीए का अहम योगदान है। उन्होंने कहा कि झारखंड प्रदेश खनिज संपदा से परिपूर्ण है, लेकिन हम नीचे से दूसरे पायदान पर है। झारखंड राज्य के आर्थिक विकास के लिए हमारे सीए गंभीरतापूर्वक चर्चा करें। उन्होंने कहा कि जीएसटी के सफल कार्यान्वयन में भी सीए की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साथ ही कहा कि सीए का क्षेत्र व्यापक है। कर संग्रह में उनकी भूमिका अहम है। उन्होंने कहा कि प्रसन्नता का विषय है हमारे देश में करदाताओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

श्याम मंडल का फाल्गुन सतरंगी महोत्सव आज से

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री श्याम मंडल का विराट फाल्गुन सतरंगी महोत्सव 19 से 21 मार्च तक धूमधाम से मनेगा। सभी कार्यक्रम अग्रसेन पथ स्थित श्री श्याम मंदिर में होंगे। महोत्सव की तैयारी को अंतिम रूप दे दिया गया है। 19 मार्च को तीन बजे श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के निकट विधि-विधान से निशान यात्रा प्रारंभ होगी। साथ ही भजन गायक की टोली भजनों की अमृत वर्षा करेगी।

20 मार्च को रात नौ बजे से मंदिर में मुख्य कार्यक्रम प्रारंभ होगा। श्री श्याम मंडल रांची द्वारा प्रकाशित भजन पुस्तिका का विमोचन मुख्य अतिथि समाज सेवक ओमप्रकाश केजरीवाल द्वारा किया जायेगा।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

युवाओं के सपनों की हत्या हो रही है : दीपक प्रकाश

परीक्षा पत्र लीक करना एक राष्ट्रीय अपराध है, इसकी जांच सीबीआइ से हो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने 11वीं जेपीएससी परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक मामले में राज्य सरकार पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राज्य के वर्तमान मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने जो कहा था कि मेरी सरकार हेमंत सरकार की पार्ट टू है, वह सत्य होता हुआ प्रतीत हो रहा है। जिस प्रकार से हेमंत सरकार में जेएसएससी में विनोद सिंह नामक दलाल के साथ मिलकर राज्य की नौकरी को बेचने का काम किया था। आज उसी कार्य को वर्तमान राज्य सरकार के मुखिया आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रश्न पत्र नियमतः परीक्षा भवन में ही परीक्षा के समय खुलना चाहिए लेकिन 11वीं झारखंड लोक सेवा आयोग परीक्षा का प्रश्न पत्र परीक्षा शुरू होने के पहले ही प्रिंसिपल के आफिस में खोला गया। यह कहीं न कहीं दलालों के माध्यम से सरकारी नौकरियों को बेचने की तरफ इशारा करती है। श्री प्रकाश ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि जब से झारखंड में झामुमो, कांग्रेस और राजद की सरकार बनी है तब से लेकर आज तक झारखंड के युवक एवं युवतियों के साथ घोर मजाक किया जा रहा है, उनके सपनों की हत्या की जा रही है। श्री प्रकाश ने सरकार से मांग की है कि प्रश्न पत्र लीक करना एक राष्ट्रीय अपराध है। राज्य सरकार इस मामले की जांच सीबीआइ से कराये ताकि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिल सके।

युवाओं के भविष्य से खिलवाड़: धर्मेंद्र तिवारी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारतीय जनतंत्र मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि जेपीएससी का प्रश्न पत्र लीक होना दुर्भाग्यपूर्ण है। राज्यहित में सरकार और सरकारी तंत्र कार्य नहीं कर पा रहे हैं। यहां के युवाओं की मेहनत, सपना, भविष्य और परिजनों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। सरकार को कड़ी से कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। युवाओं के साथ विश्वासघात है। इसकी जांच सीबीआइ से करानी चाहिए।

परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई: एस अली

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय संगठन सचिव एस अली ने पेपक लीक होना सरकार की विफलता है। कई केंद्रों में सील खुले हुए लिफाफा से प्रश्नपत्र अभ्यर्थियों के बीच वितरण किया गया। जब अभ्यर्थियों द्वारा इस पर सवाल किया गया, तो दुर्व्यवहार किया गया। यह न्यायोचित नहीं है। इससे जाहिर होता है कि जेपीएससी परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है। यह अभ्यर्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है।

ब्राउन शुगर के साथ युवक गिरफ्तार

रांची (आजाद सिपाही)। राजधानी रांची के सुखदेव नगर थाना पुलिस ने ब्राउन शुगर कारोबार में शामिल एक युवक को गिरफ्तार किया है। युवक की निशानदेही पर गांजा कारोबार में शामिल उसकी भाभी को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी में हरमू आनंदपुरी चौक निवासी पवन कुमार और उसकी भाभी कोमल देवी का नाम शामिल है। मूल रूप से बिहार के समस्तीपुर जिले के महिउद्दीननगर थाना क्षेत्र निवासी आरोपी के पास से पुलिस 19 पुड़िया ब्राउन शुगर, 21900 रुपये, रॉयल एनफील्ड बाइक और उसकी भाभी के पास से 71 ग्राम गांजा, एक पल्सर बाइक सहित अन्य सामान बरामद किया गया है। हालांकि महिला के पति बबलू यादव, कृष्णा यादव, कन्हैया यादव और दुर्लभ नामक चार आरोपी मौके से पुलिस को चकमा देकर फरार हो गये। पुलिस के अनुसार लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पूरे क्षेत्र में विधि व्यवस्था एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अवैध शराब, आग्नेयास्त्र एवं मादक पदार्थ की बरामदगी के लिए गुप्त सूचना पर गठित पुलिस की टीम ने कार्रवाई की है। सूचना मिली थी कि विद्यानगर स्थित आनंदपुरी चौक के पास कुछ लड़के अवैध मादक पदार्थ ब्राउन शुगर एवं गांजा की खरीद बिक्री कर रहे हैं। सूचना पर कार्रवाई करते हुए पवन कुमार को ब्राउन शुगर की खरीद बिक्री करते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया। आरोपी पवन कुमार पर सुखदेवनगर थाना में पूर्व से तीन मामले दर्ज हैं।

कार्यक्रम : बेहतर झारखंड रांची चैप्टर का शुभारंभ

जीवन की कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करें : बाबूलाल मरांडी

आदिवासी समाज के कलाकार और प्रमुख लोग हुए सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आड्रे हाउस रांची में बेहतर झारखंड रांची चैप्टर का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी और रांची लोकसभा के सांसद संजय सेठ ने झारखंड और इसके पड़ोसी राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल, ओड़िशा, छत्तीसगढ़, बिहार और असम के अनुकरणीय आदिवासी कारीगरों को सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में झारखंड के निपुण चित्रकार और कपड़ा कारीगर, छत्तीसगढ़ के बांस और तुंबा में विशेषज्ञता वाले कारीगर, पश्चिम बंगाल के घास और ताड़ के पत्ते के शिल्प में विशेषज्ञता के लिए जाने जाने वाले कारीगर, ओड़िशा के एप्लिक काम के लिए पहचाने जाने वाले कारीगर और कई अन्य कारीगर शामिल थे। इन कारीगरों को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में बाबूलाल मरांडी ने विकास रणनीति तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण समय पर हस्तक्षेप के रूप में इस पहल की सराहना की, जिसका झारखंड के लोगों के जीवन पर स्थायी सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने राज्य के उत्थान के लिए केंद्र सरकार द्वारा की गयी विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने हाल ही में शुरू की गयी विश्वकर्मा योजना के बारे में जिक्र किया। श्री मरांडी ने राज्यों में विविध आदिवासी पहचानों से सीखने के महत्व पर जोर दिया और साझा विकास को बढ़ावा देने के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण के रूप में 'आदिवासी सांस्कृतिक गलियारे के निर्माण का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा कि बहुत बड़ी बड़ी बातें न कर अपने जीवन की कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करें, यही सार्थक होगा। कार्यक्रम में सांसद संजय सेठ और विवेक सिंह ने राज्य की यात्रा और झारखंड और इसकी वर्तमान स्थिति के बीच अंतर को कम करने की पहल के दृष्टिकोण पर विचार रखे। आदिवासी कारीगरों के साथ काम करने वाली संस्था क्राफ्ट मेस्ट्रोस का प्रतिनिधित्व करने वाले अजय अरिजीत सिंह ने सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त विकास मॉडल की क्षमता का प्रदर्शन करते हुए झारखंड और पड़ोसी राज्यों से आदिवासी उद्यमिता की प्रेरक कहानियां साझा कीं। वहीं, बेहतर झारखंड के संयोजक मयूर शेखर झा ने कहा कि पूर्वी भारत की अनूठी जनसांख्यिकी और चुनौतियों के लिए विकास के लिए एक विशिष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो हमारी विविध संस्कृतियों को बाधाओं के रूप में नहीं, बल्कि नींव के रूप में देखता है जिस पर निर्माण किया जा सकता है। कार्यक्रम में संस्था के प्रमुख सदस्य, डॉक्टर, शिक्षाविद, कलाकार, उद्यमी और स्थानीय पंचायतों के जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

झामुमो के शब्दकोश में विकास कभी नहीं रहा: सुदेश

अच्छे कार्यकर्ता ही अच्छे नेता होते हैं, रांची लोकसभा स्तरीय ग्राम प्रभारी सम्मेलन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विकास शब्द और राज्यहित झामुमो के शब्दकोश में नहीं है। झारखंड को उलझा कर रखना इनका पेशा है। शासन और प्रशासन दोनों लूट के साझेदार बन गये हैं। यह साल झारखंड के भविष्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। पार्टी के कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी इन हालात में बढ़ जाती है। हम समाज के सभी वर्गों के विचारों और भावनाओं के साथ काम करें। उक्त बातें आजसू सुप्रीमो सुदेश कुमार महतो ने नामकुम सिदरौल स्थित कवाली स्टेडियम में आयोजित रांची लोकसभा स्तरीय ग्राम प्रभारी सम्मेलन में कहीं। मौके पर रांची लोकसभा क्षेत्र के नवनियुक्त पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण किया और पार्टी की नीति को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

सुदेश महतो ने कहा कि जेपीएससी परीक्षा में कथित तौर पर पेपर लीक को लेकर जो तस्वीरें सामने आ रही हैं, वह संवेदनशील और चिंता जनक है। मानो राज्य सरकार ने युवाओं का भविष्य बिगाड़ने का संकल्प ले रखा है। इससे पहले एडमिट कार्ड के लिए अभ्यर्थी परेशान रहे। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता में यह विश्वास है कि आजसू राज्य में बेहतर वातावरण बना सकती है। राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए जिद की आवश्यकता है। कार्यकर्ता अपनी मेहनत से पार्टी के विचारों को राज्य के हर गांव, हर घर तक पहुंचाने का कार्य करें। ग्राम प्रभारियों को नये जनादेश की जिम्मेदारी देते हुए सुदेश महतो ने कहा कि यह चुनावी साल है। समय कम है ऐसे में पार्टी की हर इकाई और हर कार्यकर्ता को अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए जनाकांक्षाओं के अनुरूप और एनडीए को सशक्त बनाने के लिए काम करना होगा।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की पहल करें: सहिस

पार्टी के प्रधान महासचिव सह इचागढ़ विधानसभा प्रभारी रामचंद्र सहिस ने कहा कि ग्रामीण व्यवस्था को मजबूत करने और हर व्यक्ति के दुख-सुख से जुड़ने के उद्देश्य से पार्टी की मजबूत संरचना में ग्राम प्रभारी और चूल्हा प्रमुख को विशेष महत्व दिया है।

इनकी रही मौजूदगी

सम्मेलन में डोमन सिंह मुंडा, डॉ देवशरण भगत, लंबोदर महतो, निर्मला भगत, राजेंद्र मेहता, हरेलाल महतो, संजय महतो, भारत कांशी, अशोक नाग, डॉ सुधीर यादव, जीतेंद्र सिंह, सत्येंद्र सिंह समेत अन्य उपस्थित थे।

गोल इंस्टीट्यूट के गोल उत्सव में डॉक्टरों का जुटान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। गोल उत्सव 2.0 के रूप में गोल इंस्टीट्यूट की ओर से गोल एजुकेशन विलेज में एल्युमनाई मीट, म्यूजिकल प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इसमें गोल इंस्टीट्यूट के पिछले 26 वर्षों के दौरान सफलता प्राप्त कर डॉक्टर के रूप में देश-विदेश में सेवा दे रहे डॉक्टरों, मेडिकल कॉलेजों में पढ़ रहे छात्रों ने भाग लिया। इस प्रोग्राम में प्रसिद्ध बैंड एलएसडी ने लोगों को मस्ती में झुमने पर मजबूर कर दिया।

गोल संस्थान के एमडी विपीन सिंह ने कहा कि गोल की स्थापना का मुख्य मकसद यही था कि प्रत्येक छात्र जो डॉक्टर बनने का सपना देखा रहे हैं, उसे गोल के सहयोग से सफलता पाने में मदद किया जा सके। गर्व है कि पिछले 26 वर्षों में 16 हजार से भी अधिक छात्रों ने मेडिकल में सफलता प्राप्त किया है। ज्वाइंट डॉयरेक्टर डॉ ममता सिंह ने कहा कि इस मीट में जुटे डॉक्टर गोल में पढ़ रहे छात्रों के लिए मोटिवेशन का स्रोत बनेंगे। असिस्टेंट डॉयरेक्टर रंजय सिंह ने कहा कि हमारी सशक्त टीम जिस तरह लगातार प्रयास के साथ गोल को बिहार-झारखंड का नंबर-वन इंस्टीट्यूट और नीट रिजल्ट की फैक्ट्री बनायी है, उसके लिए टीम को बधाई देता हूं। मौके पर संजय आनंद, रंजीत, आनंद वत्स, गौरव सिंह, गौरव प्रकाश, विनीत, संजीव, अनिल, नीकेत वर्द्धन, मयंक, निरोज सिंह, केपी सिंह और अन्य उपस्थित थे।

डीएसपीएमयू में दो दिवसीय भारत संस्कृति यात्रा की शुरुआत

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रविवार को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची के परफॉर्मिंग आर्ट विभाग और हिंदुस्तान आर्ट एंड कल्चर सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगीत और नृत्य कार्यक्रम की शुरूआत हुई। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से भारत संस्कृति यात्रा के नाम से आयोजित इस संगीत कार्यक्रम के पहले दिन विश्व प्रसिद्ध और संगीत नाटक अकादमी पुरुस्कार से सम्मानित बांसुरी वादक पंडित रोनू मजूमदार ने बांसुरी वादन से लोगों को मंत्रमुग्ध किया। उन्होंने अपने गायन में अपनी श्रेष्ठता की पूरी प्रस्तुति दी। इसके उपरांत आज पंडित जयतीर्थ मेउंडी ने अपने शास्त्रीय हिंदुस्तानी गायन को प्रस्तुत किया। इस संगीतमय यात्रा को आगे बढ़ाते हुए डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के सभागार में पहले दिन प्रसिद्ध कत्थक कलाकार शौविक चक्रवर्ती और प्रसिद्ध तबला वादक पंडित मिथिलेश झा ने अपनी प्रस्तुति दी। इसके पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत द्वीप प्रज्ज्वलन के साथ की गयी। जिसमें कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य, कुलसचिव डॉ नमिता सिंह की मंच पर मौजूदगी रही। मौके पर कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने कहा कि भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा भारत संस्कृति यात्रा के नाम से आयोजित यह कार्यक्रम एक प्रशंसनीय पहल है। इसके माध्यम से भारत की विरासत और समृद्ध संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत संस्कृति यात्रा का मुख्य उद्देश्य भारत की विरासत का प्रचार प्रसार करना है। उन्होंने कहा इस प्रकार के आयोजन में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय की सहभागिता एक सकारात्मक संदेश है कि शैक्षणिक संस्थाओं को भी संस्कृति के वाहक के तौर पर अपनी भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। दूसरे दिन 18 मार्च को प्रसिद्ध संतूरवादक पंडित तरुण भट्टाचार्य, सितारवादक शकीर खान और प्रसिद्ध ओडिसी कलाकार अमृता दास अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के पहले दिन कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य, राजभवन सचिवालय के विशेष कार्य अधिकारी डॉ संजीव राय, कुलसचिव डॉ नमिता सिंह, डॉ निभा शर्मा, डॉ तान्या शर्मा, परफॉर्मिंग आर्ट की समन्वयक डॉ गीतांजलि सिंह , डॉ जेपी शर्मा, डॉ अभय कृष्ण सिंह, डॉ शमा सोनाली, हिंदुस्तान आर्ट एंड कल्चर सोसायटी के सदस्य और शिक्षक , कर्मी मौजूद थे। यह जानकारी पीआरओ प्रो राजेश कुमार सिंह ने दी।

महत्वपूर्ण खबरें

आज अभिषेक प्रसाद से इडी करेगी पूछताछ

रांची (आजाद सिपाही)। इडी के अधिकारी अवैध खनन, जमीन घोटाले से लेकर बालू तस्करी तक के मामलों में राज्य के प्रभावशाली लोगों से पूछताछ करेंगे। इडी की पूछताछ की शुरुआत सोमवार को पूर्व सीएम हेमंत सोरेन के प्रेस सलाहकार रहे अभिषेक प्रसाद उर्फ पिंटू से होगी। इडी ने पिंटू को दिन के 11 बजे इडी ऑफिस में उपस्थित होने को कहा है। इडी ने जमीन घोटाले की संदिग्ध प्रीति कुमार को 20 मार्च को सुबह 11 बजे तलब किया है। वहीं इडी ने अभिषेक प्रसाद उर्फ पिंटू को 18 मार्च और रांची के हटिया डीएसपी प्रमोद मिश्रा को 19 मार्च को तलब किया है। जबकि होली के बाद इडी 4 अप्रैल को कांग्रेस की बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद से जमीन लूट, रंगदारी और आर्म्स एक्ट के तहत दर्ज मामलों में अर्जित धन की मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में पूछताछ करेगी। इस मामले में अंबा के पिता योगेंद्र साव से 3 अप्रैल और अंबा के भाई अंकित राज से 5 अप्रैल को पूछताछ होनी है। इडी ने 2 अप्रैल को गोविंदपुर के सीओ शशिभूषण सिंह को भी तलब किया है।

अभयानंद सुपर-30 में एडमिशन टेस्ट 31 को

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड के भी टैलेंटेड बच्चों को बिहार के पूर्व डीजीपी अभयानंद के फेमस सुपर-30 में पढ़ने का मौका मिलेगा। इस संबंध में सुपर-30 से जुड़े प्रो पीके उपाध्याय ने रविवार को रांची प्रेस क्लब में जानकारी दी। बताया कि बिहार में अभयानंद सुपर-30 से विगत आठ वर्षों में 87 आइआइटी, 127 एनआइटी तैयार किये गये हैं। अब झारखंड के भी गरीब, प्रतिभावान बच्चों के लिए 31 मार्च को जांच परीक्षा का आयोजन झारखंड, बिहार में होगा। ऐसे स्टूडेंट्स जो किसी भी बोर्ड से दसवीं की परीक्षा दे चुके हैं। वे निर्धारित वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। परीक्षा के आधार पर चयनित स्टूडेंट्स को विशेष सुविधाओं के साथ मेडिकल, इंजीनियरिंग की तैयारी करायी जायेगी।

मेन रोड में फुट ब्रिज की जगह अब एस्केलेटर

रांची (आजाद सिपाही)। मेन रोड में फुट ब्रिज की जगह एस्केलेटर लगाया जा रहा है। इससे आम लोगों को काफी राहत मिलेगी। इस काम की जिम्मेवारी जुडको को दी गयी है। इसका जनतंत्र मोर्चा ने स्वागत किया है। जीएल चर्च शॉपिंग कांप्लेक्स और सैनिक मार्केट के सामने फुट ब्रिज बनाया गया था। भारतीय जनतंत्र मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि कुछ अवसरवादी निजी स्वार्थ के लिए इसका विरोध कर रहे हैं, ताकि यह कार्य रुक जाये। यह कार्य रुकना नहीं चाहिए। कार्य जुडको को समय पर या समय से पहले पूरा करना चाहिए। क्योंकि यह जनहित का मामला है और जमीन सरकार की है। किसी से कोई लेना-देना नहीं है।

तेजपाल सिंह के निधन पर शोक जताया

रांची (आजाद सिपाही)। ज्योति संगम दुर्गा पूजा समिति, रांची के महत्वपूर्ण पदाधिकारी तेजपाल सिंह का निधन 12 मार्च को हो गया था। रविवार को समिति के तमाम सदस्यों के द्वारा मारवाड़ी स्कूल परिसर में शोक सभा एवं श्रद्धांजलि दी गयी। कहा उनके निधन से समिति की बड़ी क्षति हुई है। इस दुख की घड़ी में ज्योति संगम समिति के सभी सदस्य उनके परिवार के साथ है। इस शोक सभा में उनके सुपुत्र रविंद्र सैनी (मोनू), चंद्रमान खत्री, दीपक कु. पंकज, श्याम नारायण दयाल, अजय बथवाल, अंकित' गुप्ता, अविनाश कुमार, अमर मोदी, हेमंत पोधार, राजकुमार गुप्ता, अशोक गुप्ता, मनोज बक्सरिया, राजेश मक्कड़, गौतम वर्मा, संजय गुप्ता आदि उपस्थित थे।

पंकज बने तीसरा मोर्चा के मुख्य प्रवक्ता

रांची (आजाद सिपाही)। पूर्व ऊर्जा मंत्री सह तीसरे मोर्चा के संयोजक लालचंद महतो ने वरिष्ठ पत्रकार पंकज मिश्र को थर्ड फ्रंट का मुख्य प्रवक्ता मनोनीत किया है। अब थर्ड फ्रंट की विचारधारा और रणनीति को आमजन तक ले जाना मिश्र देखेंगे। श्री महतो ने कहा कि झारखंड की जनता राज्य में घटित राजनीतिक घटनाओं को गंभीरता से देख रही है। जनता भाजपा और आजसू के गठजोड़ से तंग आ चुकी है। यही वजह है कि जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए 18 दलों को मिला कर थर्ड फ्रंट बनाना पड़ा। थर्ड फ्रंट के मुख्य प्रवक्ता की जिम्मेवारी और राजनीतिक सफर प्रारंभ करने के लिए पंकज मिश्रा को शुभकामना देता हूं।

ध्वजा निशान श्री श्याम प्रभु को अर्पित किया

रांची (आजाद सिपाही)। श्री श्याम ध्वजा पदयात्रा समिति, रांची के तत्वावधान में रविवार को नेवरी, विकास से निज मंदिर खाटू श्याम जी, हरमू रोड के लिए श्री श्याम ध्वजा पद यात्रा बड़े ही धूमधाम से संपन्न हुई। यात्रा प्रातः 8 बजे नेवरी स्थित दुर्गा मंदिर में ध्वजा पूजन के साथ प्रारम्भ हुई। यात्रा में सर्वप्रथम रामगढ़ से आयी हुई मशहूर ताशा पार्टी मार्ग में लोगों को झुमा रही थी। यात्रा का विशेष आकर्षण रामलला की अद्भुत प्रतिमा लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। कोलकाता से आये भजन गायक गणेश चौरसिया बाबा श्याम के प्रिय माह फाल्गुन के धमाल भजन सुनाकर ध्वजा धारियों को झुमा रहे थे। 251 ध्वजा धारी महिलाएं एवं पुरुष पारंपरिक वेशभूषा में बाबा की ध्वजा अपने कांधे पर उठाकर नाचते झूमते हुए 17 किलोमीटर की इस यात्रा में शामिल हो कर अपने आप में बाबा की कृपा का अनुभव कर रहे थे। यात्रा के मध्य में यात्रियों की सुविधा के लिए बूटी मोड़ के पास साहू परिवार की और से अल्पाहार एवं करमटोली स्थित शिवांश हाइट्स में भोजन प्रसादी की व्यवस्था एक श्याम भक्त परिवार के द्वारा की गयी थी। यात्रा में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, सांसद संजय सेठ, विधायक सीपी सिंह, कांके विधायक समरी लाल, पूर्व उप महापौर संजीव विजयवर्गीय एवं बीजेपी नेता रमेश सिंह भी शामिल हुए एवं बाबा का आशीर्वाद लिया। उक्त जानकारी देते हुए समिति के प्रवक्ता संजय सर्राफ ने बताया कि यात्रा के सफल आयोजन में गोपाल मुरारका, अशोक लडिया, मनोज खेतान, राजेश ढाढणिया, हरी परसरामपुरिया, ललित पोद्दार, आनंद चौधरी, संजय सर्राफ, प्रमोद परसरामपुरिया, संजय परसरामपुरिया, रतन सिंघानिया, सूरज लोधा, प्रवीण सिंघानिया, विष्णु चौधरी, रोहित अग्रवाल, अमित शर्मा, हेमंत जोशी, सहित अनेक कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। समिति के गोपाल मुरारका ने सभी ध्वजा धारियों, स्वागतकर्ताओं का आभार व्यक्त किया है।

सीएए के निहितार्थ का आकलन

नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के कार्यान्वयन की सरकार की घोषणा ने एक बार फिर भारत की धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों के बारे में गंभीर चर्चा शुरू कर दी है। कानून के कार्यान्वयन का समय, आम चुनावों से ठीक पहले और रमजान की शुरूआत में, सरकार की मंशा पर सवाल उठाता है। कई लोगों ने इसे मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने और चुनावी बांड योजना की जांच जैसे अन्य मुद्दों से ध्यान भटकाने के कदम के रूप में देखा है। भारत का सर्वोच्च न्यायालय 19 मार्च को सीएए नियमों के कार्यान्वयन पर रोक लगाने की मांग करने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करने के लिए सहमत हो गया है। सीएए को चुनौती देने वाली लगभग 200 याचिकाएं शीर्ष अदालत के समक्ष लंबित हैं और उन पर अभी तक विचार नहीं किया गया है। कानून, जो 2019 में पारित होने के बाद से विवादास्पद रहा है, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के कुछ धार्मिक अल्पसंख्यकों से संबंधित पड़ोसी देशों के शरणार्थियों को शीघ्र नागरिकता प्रदान करता है लेकिन मुसलमानों को बाहर करता है। इस संशोधन से पहले, उचित दस्तावेज के बिना भारत में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों को अवैध प्रवासी माना जाता था और उनके पास नागरिकता का कोई स्पष्ट रास्ता नहीं था, जब तक कि दीर्घकालिक वीजा के माध्यम से उनके प्रवास को नियमित नहीं किया जाता। हालांकि, सीएए इस नियम में संशोधन करता है, मुसलमानों को छोड़कर, 31 दिसंबर 2014 से पहले भारत में प्रवेश करने वाले प्रताड़ित हिंदुओं, सिखों, बौद्धों, जैनियों, पारसियों और ईसाइयों को नागरिकता प्रदान करता है। इस कानून को विभाजन की गलतियों के सुधार के रूप में तैयार किया गया है, समर्थकों का तर्क है कि मुसलमानों को ऐसे प्रायश्चित की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे सूचीबद्ध देशों में सताए गए अल्पसंख्यक नहीं हैं। हालांकि, आलोचकों का कहना है कि यह धर्म के आधार पर भेदभाव करता है, जो संविधान के धर्मनिरपेक्ष लोकाचार के विपरीत है, जिसमें नागरिकता के लिए मानदंड के रूप में धर्म का उल्लेख नहीं है। धर्मनिरपेक्षता शब्द को 1976 में 42वें संशोधन के माध्यम से भारतीय संविधान की प्रस्तावना में शामिल किया गया था, जिसमें धार्मिक तटस्थता के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया था। सीएए का कुछ धार्मिक समूहों के प्रति अधिमान्य व्यवहार भारत के धर्मनिरपेक्ष आदर्शों को परेशान करता है। इसके अतिरिक्त, यह कानून संविधान के अनुच्छेद 14 द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकार को कमजोर करता है। नागरिकता संशोधन अधिनियम राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) से भी जुड़ा है, जिसका उद्देश्य असम से अवैध आप्रवासियों, विशेषकर मुसलमानों की पहचान करना और उन्हें निर्वासित करना है।

हालांकि, सीएए इस नियम में संशोधन करता है, मुसलमानों को छोड़कर, 31 दिसंबर 2014 से पहले भारत में प्रवेश करने वाले प्रताड़ित हिंदुओं, सिखों, बौद्धों, जैनियों, पारसियों और ईसाइयों को नागरिकता प्रदान करता है।

अभिमत
आजाद सिपाही

सरकारी केस को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि व्हीलचेयर तक सीमित एक दिव्यांग प्रोफेसर पर यूएपीए के तहत लगाये गये गंभीर आरोप, कानून की नजर में साबित नहीं होते हैं। कोर्ट का यह विलंबित फैसला कानूनी मापदंडों और प्रमाणों पर आधारित है, जिसका स्वागत है। इस ऐतिहासिक न्यायिक निर्णय में यह बताया गया है कि कानून की नजर में राजनीतिक सिद्धांतों और विचारधाराओं का अध्ययन या किसी विचारधारा से सहानुभूति, अपने आप में अपराध की बुनियाद नहीं हो सकते, क्योंकि सभी को विचारों की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति का मौलिक अधिकार है।

हमारी स्वतंत्रतावादी विरासत का पुनर्जागरण

अश्वनी कुमार

7 मार्च को प्रो जीएन साईंबाबा ने 10 वर्ष तक जेल में अंधेरी रातें काट कर, आजादी के उजाले में पुनः कदम रखा। सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाइकोर्ट के नागपुर बेंच के उस निर्णय पर रोक लगाने से इंकार कर दिया है, जिसके कारण साईंबाबा और अन्य अभियुक्तों को 10 साल की लम्बी कैद से रिहाई मिली।

सरकारी केस को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि व्हीलचेयर तक सीमित एक दिव्यांग प्रोफेसर पर यूएपीए के तहत लगाये गये गंभीर आरोप, कानून की नजर में साबित नहीं होते हैं। कोर्ट का यह विलंबित फैसला कानूनी मापदंडों और प्रमाणों पर आधारित है, जिसका स्वागत है। इस ऐतिहासिक न्यायिक निर्णय में यह बताया गया है कि कानून की नजर में राजनीतिक सिद्धांतों और विचारधाराओं का अध्ययन या किसी विचारधारा से सहानुभूति, अपने आप में अपराध की बुनियाद नहीं हो सकते, क्योंकि सभी को विचारों की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति का मौलिक अधिकार है। नागरिकों की अवैध हिरासत से देश की प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्थाओं की निष्पक्षता पर सवाल उठता है। इसी मामले में सुप्रीम कोर्ट का 2022 का आदेश, जिसमें प्रोफेसर साईंबाबा को हाईकोर्ट द्वारा दी गयी रिहाई को छुट्टी के दिन खास सुनवाई करके रद्द कर दिया गया था, गंभीर चिंता का विषय है। इस केस के अनेक मोड़ों पर राज्य की कार्यकारी शक्ति एवं कानून की प्रक्रियात्मक मर्यादाओं की परख भी हुई है। महाराष्ट्र सरकार की अपील को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने माना कि नक्सल फिलॉसफी पढ़ने वाले और नक्सल सोच से सहानुभूति रखने वाले किसी व्यक्ति पर सिर्फ इस आधार पर यूएपीए के तहत आपराधिक कार्रवाई नहीं की जा सकती, कि उसके पास डाउनलोड किया गया नक्सल साहित्य है।

हम जानते हैं कि स्वतंत्रता एवं मानवाधिकारों का संरक्षण सभी के एकजुट होने पर निर्भर करता है।

साथ ही कोर्ट ने अभियोजन पक्ष द्वारा लगाए गए अस्पष्ट आरोपों को अपराध का आधार मानने से इंकार किया, जोकि आपराधिक कानून के बुनियादी दर्शन, कि बिना ठोस सबूत किसी को अपराधी नहीं माना जा सकता, की पुष्टि करता है। ऐसा दिव्यांग, जो बिना सहायता के अपनी अति निजी दिनचर्या भी नहीं कर सकता उसके साथ करुणा रहित व्यवहार और 10 वर्षों की कैद, भारत की न्यायिक प्रक्रिया और संवैधानिक नैतिकता से जुड़े अनेक प्रश्न खड़ा करते हैं।

शारीरिक, आर्थिक और भावनात्मक रूप से कमजोर व्यक्ति की असहनीय प्रताड़ना, हमारी न्याय प्रणाली की कमियों को दर्शाते हैं और यह प्रमाणित करते हैं कि देश की आपराधिक प्रक्रिया अपने आप में एक बड़ी सजा है। केस में अभियोजन पक्ष की यह दलील कि विकलांग साईंबाबा अपने विचारों की अभिव्यक्ति से देश और सरकार की सुरक्षा के लिए खतरा हो सकते हैं, हालांकि हास्यप्रद है, को फिर भी साईंबाबा अतः अन्य अभियुक्तों को बहुत लंबे समय तक कारावास में रखने का आधार माना गया।

1. क्या यह फैसला हमारे देश की लोकतांत्रिक आस्थाओं और संवैधानिक न्याय के मूलभूत आदर्शों के अनुकूल है? 2. क्या देशवासियों को ऐसी कानूनी प्रक्रियाओं को झेलना जरूरी है, जो अन्याय को जन्म देती है और जिसकी कोई भरपाई नहीं है? 3. क्या कानून एवं न्याय के पहरेदार ही नाइंसाफी के पैरोकार बन सकते हैं? 4. क्या निर्दोष लोगों को, उनके परिवारजनों के स्नेह और संगति से वंचित करने का कोई मुआवजा हो सकता है? 5. क्या न्याय के संरक्षक देश के रहबर निर्दोष और असहाय व्यक्तियों के दर्द के प्रति असंवेदनशील हैं? 6. क्या कठोर आपराधिक कानूनों के तहत बिना उचित जांच और पर्याप्त प्रमाणों के नागरिकों को लंबे समय तक जेल की चारदीवारी में कैद करके रखना और उनके मानवीय अधिकारों का हनन होना हमारे लोकतंत्र की पहचान हो सकती है? इन गंभीर सवालों से अब मुंह नहीं मोड़ा जा सकता।

दोषियों को सजा देने वाली न्याय प्रणाली के तहत जिस तरह से एक शारीरिक तौर पर अपंग को 10 साल जेल की सलाखों के पीछे रखा गया, देश की आत्मा को झकझोर रहा है। इसी कारण देश और विदेश में जनता का ध्यान साईंबाबा मामले पर केंद्रित है। नागरिकों की प्रतिष्ठा और गरिमा का हनन, उनके भविष्य पर प्रश्नचिन्ह और घोर अन्याय के सामने बेबसी, भारतीय आपराधिक न्याय प्रणाली एवं लोकतंत्र की डरावनी तस्वीर है। इस तस्वीर को बदलने के लिए जनता को न्याय, जो संवैधानिक संस्थाओं की पहली जिम्मेदारी है, के लिए सदैव संघर्षशील रहना होगा। घोर अन्याय के खिलाफ कब और कौन आवाज उठाये और क्या कोई असहाय व्यक्ति के प्रति न्याय की पुकार सुनेगा, यह सवाल आज के दौर में उपयुक्त है। मशहूर दिवंगत शायरा प्रवीण शाकिर की इन पंक्तियों में कमजोर और जुल्म के शिकार व्यक्तियों की भावनाओं का उल्लेख है :

पा-ब-गिल (मजबूर) सब हैं,
रिहाई की करें तदबीर (समाधान) कौन,
दस्त-बस्ता (बंधे हाथ) शहर में खोले मेरी जंजीर कौन,
मेरा सर हाजिर है,
लेकिन मेरा मुंसिफ (जज) जान ले,
कर रहा है मेरी फर्द-ए-जुर्म (इल्जाम) की तहरीर (लिखाई) कौन

देश की सर्वोच्च न्यायालय से यह उम्मीद है कि वह मानवाधिकारों के संरक्षक का उत्तरदायित्व प्रभावी ढंग से निभाएं, जो उनकी कार्यशैली में स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

साईंबाबा केस में हाईकोर्ट के निर्णय का यह संदेश है कि भारत, जो अपने नागरिकों की आजादी और गरिमा के लिए सदैव समर्पित होने का दावा करता है, ऐसी न्यायिक प्रक्रिया को अनदेखा नहीं कर सकता है, जिसके तहत न्याय की हार हो और मानवीय अधिकारों का हनन। क्या इस फैसले के सबक को हमारी यादों के हाशिए पर धकेल दिया जायेगा, ताकि वह समय के साथ भुला दिए जायें, या फिर एक अंतहीन न्याय की यात्रा में परिवर्तनकारी क्षण का काम करेगा, एक महत्वपूर्ण सवाल है।

राष्ट्रों के इतिहास समय-समय पर होनी वाली महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़े होते हैं। इसलिए यह फैसला कमजोरों के प्रति सहानूभुति पर आधारित न्याय की हमारी सांस्कृतिक विरासत के पुनर्जागरण की ओर एक प्रभावी कदम होना चाहिए।

हम जानते हैं कि स्वतंत्रता एवं मानवाधिकारों का संरक्षण सभी के एकजुट होने पर निर्भर करता है। संविधान में स्वतंत्रता के अधिकार को मूलभूत मानवीय अधिकार की पहचान दी गई है। कहीं ऐसा न हो कि हम इस अधिकार को सशक्त करने में चूक कर जायें। इतिहास का स्थायी सबक यही है कि स्वतंत्रता का एहसास जुल्म की पीड़ा से ऊपर उठ कर, कायम रहता है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में हाईकोर्ट के अभियुक्तों के बरी करने के आदेश पर रोक लगाने से इंकार किया है। इससे यह आशा जागृत हुई है कि देश की सर्वोच्च न्यायालय संवैधानिक मर्यादाओं अतः मूलभूत मानवीय अधिकारों की सुरक्षा का बीड़ा उठाने के लिए सक्षम है। मूलभूत मूल्यों से परिगत लोकतांत्रिक संस्थाओं से आपराधिक मामलों में ऐसे न्याय की आशा है, जो संवैधानिक आस्थाओं और मानवाधिकारों की कसौटी पर खरा उतरे और जिसको लोग भी न्याय संगत समझें। इस लेख को मैं साहिर लुधियानवी की इन पंक्तियों से समाप्त करता हूं।

मुजरिम हूं मैं अगर,
तो गुनेहगार तुम भी हो,
ऐ रहबरान-ऐ-कौम,
खताकार तुम भी हो।

जमशेदपुर की खबरें

तेली समाज और ओबीसी में राजनीतिक चेतना की कमी के कारण समाज हाशिये पर : राजेंद्र प्रसाद

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड ओबीसी आयोग के पूर्व सदस्य राजेन्द्र प्रसाद शहर पहुंचने पर तेली समाज और ओबीसी के प्रबुद्ध लोगों ने उनका स्वागत किया। रविवार को सिदगोड़ा में आयोजित सम्मान समारोह में उन्होंने कहा कि झारखंड राज्य में तेली समाज की आबादी 15% और ओबीसी की आबादी 55% है, लेकिन राजनीतिक चेतना नहीं होने से समाज हास्य पर है। सभी माटी के लिए वोट करें। उन्होंने कहा दुसरे समाज से तेली समाज और ओबीसी समुदाय को सीखने की जरूरत है। उन्होंने कहा झारखंड में जो समाज संगठित है उनका राजनीतिक दल अनदेखी नहीं कर पाते। संगठित समाज को राजनीतिक भागीदारी भी मिलती है। अधिकारों के लिए संगठित और चिंतनशील होना होगा। उन्होंने कहा वैसे दल को ही समर्थन करें जो तेली समाज औरओबीसी को पार्टी संगठन से विधानसभा व लोकसभा में प्रत्याशी बनाए। उन्होंने झारखंड में ओबीसी को तमिलनाडु के तर्ज पर 36 से 50% देने की अनुशंसा की है। झारखंड सरकार लागू करें यह मांग ओबीसी और तेली समाज की ओर से उठाना होगा। संचालन मनोज कुमार गुप्ता ने किया। मौके पर शेखर कुमार साहू, प्रकाश विश्वकर्मा,मंजु शाह, डॉक्टर ऋषिकेश, कुंदन गुप्ता, शोभा गुप्ता, इंदु देवी, श्याम सुंदर साव, नागेंद्र कुमार गुप्ता, दिलीप कुमार गुप्ता, जयशंकर शाह, सुनील कुमार गुप्ता, कृष्णा साहू, शशिकांत महाराज, बच्चु शाह, पिंटू साहू, जयशंकर शाह, सुशील कुमार, संजय कुमार उमाशंकर शाह, गणेश,विमल,देवाशीष सहित अन्य शामिल रहे।

बालिगुमा में संथाल समाज ने मनाया बाहा पर्व

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। बालिगुमा के खीकड़ीघुटु में संथाल समुदाय के द्वारा बाहा पर्व का आयोजन किया गया। मौके पर जानकारी देते हुए दीपक रंजीत ने कहा संथाल समुदाय में बाहा पर्व के दूसरे दिन शिकार करने का परंपरा है। पूर्वजो की संस्कार को संथाल समुदाय आज भी जारी रखा है। हालांकि जंगलों के घटने के कारण जंगली जानवर भी कम हो गया है। इसके लिए अभी सिर्फ शिकार प्रतिकात्मक रूप से ही मनाया जाता हैं।मौके पर उन्होंने नए पीढ़ी को जानकारी देते हुए कहा जंगल से ही हमलोगों का पहचान है। इसके लिए बाहा सेंदरा का आयोजन हर वर्ष किया जाता हैं।

आदित्यपुर की आरएसबी यूनिट-1 में तेंदुआ घुसने से मजदूरों में मचा हड़कंप

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। सरायकेला खरसावां जिला के आदित्यपुर इंडस्ट्रियल एरिया स्थित आरएसबी ट्रांसमिशन यूनिट 1 में तेंदुआ घुसने से अफरा तफरी मच गयी। रविवार को सुबह तेंदुए के हमले से एक मजदूर घायल होने की सुचना है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी। उधर सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम और कंपनी प्रबंधन के आला अधिकारी मौके पर पहुंच कर रेस्क्यू में जुट गए। टीम के द्वारा दिन भर तेंदुए को पकड़ने की कोशिश की गई। लेकिन वन विभाग के रेस्क्यू टीम और जिलाप्रशासन को सफलता नहीं मिल सकी। हालांकि कंपनी में लगे सीसीटीवी कैमरे में तेंदुआ की चहल कदमी करते वीडियो कैद हैं।

बाहा पर्व में शामिल हुए विधायक

जमशेदपुर (आजाद सिपाही। जुगसलाई विधान सभा के पूर्वी कालीमाटी पंचायत अंतर्गत सलगाजुड़ी गांव में प्रकृति की उपासना के त्योहार ह्लबाहा पर्वह्व हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया।रविवार को विधायक मंगल कालिंदी ने जाहेरस्थान में पूजा अर्चना कर क्षेत्र की खुशहाली के लिए कामना की। मौके पर आदिवासी समुदाय के लोग विधिवत पूजा अर्चना कर सैकड़ो महिला व पुरूष के साथ बच्चे परंपरागत कपड़े पहनकर मांदर के धुन पर झूमते गाते नजर आए।मौके पर विधायक ने कहा बाहा पर्व समाज मे समृद्धि,सौहार्द और प्राकृतिक संबंध को मजबूत करती है। होली के पूर्व जाहेरस्थान में आदिवासी समुदाय के लोग धूमधाम से बाहा पर्व मनाते हैं। मौके पर नायके बाबा पीतांबर मूर्मू, ग्राम प्रधान पालू राम हेमब्रम, चंद्र मोहन सोरेन, राम पड़ेईया, सहित अन्य उपस्थित रहे।

नदी में नहाने के दौरान डूबने से छात्र की मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

चांडिल। सरायकेला खरसावां जिले के डोबो डैम में दोस्तो के साथ नहाने के दौरान डूबने से कोऑपरेटिव कॉलेज के छात्र 20 वर्षीय वरुण बागची की मौत हो गयी। रविवार को घटना के बाद स्थानीय लोगों की मदद से युवक को एमजीएम अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टरों ने मृत्यु घोषित कर दिया। बताया जा रहा है कि मृतक वरुण बागची जमशेदपुर के सोनारी का रहने वाला है। वे अपने दोस्तों के साथ डोबो डैम नहाने के लिए गया था। नहाने के दौरान गहरे पानी में चला गया था। बचाने के लिए उसके तीन दोस्त नदी में छलांग लगा दी। हालांकि तीनों दोस्त डूबने लगे तब आसपास के लोगों ने सभी को सकुशल बाहर निकला। उधर वरुण नामक युवक की स्थिति काफी चिंता जनक बनी रही। तत्काल अस्पताल लाया गया।लेकिन वरुण ने रास्ते मे ही दम तोड़ दिया। उधर घटना की सूचना मिलते ही पहुंची पुलिस पूरे मामले की तफ्तीश में जुट गयी। वही सूचना मिलने पर पहुंची परिवार वालों का रो रो कर बुरा हाल है। फिलहाल पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर आगे की कारवाई में जुट गयी है।

मान्यता को लेकर गोशाला न्यास ने लगायी गुहार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। गोशाला न्यास समिति का सदस्य बना कर भी मान्यता नहीं दिये जाने के खिलाफ 110 सदस्यों का सब्र जवाब दे चुका है। चेयरमैन रतन जालान ने आमसभा में 15 दिनों के अंदर फैसला करने की बात कही थी, लेकिन 15 दिन गुजर जाने के बाद भी फैसला करने में आनाकानी करते रहे। इससे खफा सदस्यों ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। सदस्यों का कहना है कि सारे प्रमाण देने के बाद भी ट्रस्टी और पदाधिकारी तानाशाही कर रहे हैं। हुकूमत करने के लिए धार्मिक स्थल को चुनना कहां तक जायज है। आप सब भी गो माता की सेवा भावना से जुड़े हैं। हम सबकी भी वैसी ही भावना है। फिर भेदभाव क्यों। सदस्यता शुल्क के रूप में 11 सौ रुपये का चेक दिया था। बाद में पूर्व ट्रस्टी और पदाधिकारियों के हस्ताक्षर से आजीवन सदस्य बनाये जाने का प्रमाण पत्र भी दिया गया। बावजूद इसके यह कहना कि सब कुछ गड़बड है। ट्रस्टी के हस्ताक्षर से लेकर उनके द्वारा निर्गत प्रमाण पत्र पर ही सवाल खड़ा कर रहे हैं।

आदित्यपुर से गायत्री परिवार ने निकाली कलश यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन पर 24 कुण्डीये श्रद्धा संवर्धन राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ का शुभारम्भ किया गया। रविवार को कमलकांत मंडल व रामावती देवी द्वारा झंडोतोलन व 800 सौ माता बहनों द्वारा मंगल कलश लेकर कलश यात्रा में शामिल हुए। आदित्यपुर रोड नंबर 7 यागस्थल से निकली कलश यात्रा रोड नंबर 4 गायत्री स्कूल और रोड नंबर 32 होते हुए खरकाई नदी से जल लेकर महावीर नगर, लंका टोला होते हुए आदित्यपुर 2 के विभिन्न मार्गो से यगस्थल पहुंचे। दीप प्रज्वलित कर कलश आरती के बाद प्रसाद और भोग का वितरण किया गया। संध्या कालीन सत्र में भजन कीर्तन प्रवचन व प्रज्ञा पुराण कथा आरती के साथ कार्यक्रम की समाप्त हुई। कार्यक्रम संचालित शांतिकुंज के युग ऋषियों की टोली द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गायत्री परिवार के सभी सदस्यों का योगदान रहा।

निधि कुमारी को गेट परीक्षा में मिला 697 रैंक

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस द्वारा गेट परीक्षा 2024 का परिणाम जारी कर दी गई।परीक्षा में जमशेदपुर के बागबेड़ा का रहने वाली शशिकांत मिश्रा की पुत्री निधि कुमारी ने मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंग्रेजी शाखा से पूरे भारत में 697 रैंक लाकर झारखंड के नाम रोशन की। निधि कुमारी बीते दिनों यूजीसी नेट परीक्षा भी उत्कृष्ट अंको से पास की। वे पूर्व में जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय की होनहार विद्यार्थी भी रही है। निधि कुमारी का कहना है गुरुजनों ,माता-पिता के आशीर्वाद व सहयोग से ही यह संभव हो पाया। भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान से पीएचडी की प्राप्ति कर स्वस्थ समाज और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगी।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 18 मार्च, 2024
www.azadsipahi.in
07

कांडी में बड़े पैमाने पर सरकारी दवा फेंके जाने पर स्वास्थ्य मंत्री ने लिया संज्ञान

उपयुक्त ने जांच कमेटी गठित की, हो रही है मामले की जांच

अरुण कुमार चौबे

गढ़वा/कांडी (आजाद सिपाही)। झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता के आदेश पर प्रखंड क्षेत्र में बड़े पैमाने पर सरकारी दवा फेंक दिये जाने के मामले की जांच की गयी। जिला के उपायुक्त द्वारा गठित जांच कमेटी शनिवार की देर शाम दवाओं की जांच करने के लिए कांडी थाना पहुंची। जहां जब्त दवाओं की विस्तार से जांच की गयी। जांच रिपोर्ट उपायुक्त को सौंप दी गयी है। जहां से इसे सूबे के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता को भेजा जायेगा। विदित हो कि शनिवार की अहले सुबह मीडिया द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सतबहिनी झरना से दक्षिण बड़े गड्ढे और गड्ढे से बाहर एक ट्रैक्टर से अधिक सरकारी दवायें फेंकी हुई पुलिस ने बरामद की हैं। कांडी थाना प्रभारी गुलशन कुमार गौतम के नेतृत्व में पुलिस जब्त दवाओं को थाना ले गयी। इस मामले को लेकर पुलिस के उच्च पदाधिकारी के निर्देशानुसार सनहा संख्या 10/2024, 16 मार्च 2024 दर्ज कर ली गयी। जांच टीम में शामिल गढ़वा जिला के मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी सह सिविल सर्जन डॉक्टर अशोक कुमार ने बताया कि इस बैच नंबर की दवाएं फेंकी गयी है वह मझिआंव की नहीं हैं। इतनी बड़ी संख्या में दवाएं जिले की किसी भी फैसिलिटी सेंटर की नहीं हो सकती। कहा कि इस बैच नंबर की दवाओं का सप्लाई नहीं किया गया है। विशेष रूप से उन्होंने बताया कि गुलाबी और नीले रंग की दवाओं की आपूर्ति सीधे राज्य से की जाती है। जो बच्चों को देने के लिए बीआरसी में भेजी जाती है। लेकिन यहां पर जब्त दवाएं स्ट्रिप में हैं। इसमें केवल गुलाबी रंग की एक तरह की गोली यहां की है। वह मझिआंव या किसी अन्य जगह से सप्लाई की गयी है इसका पता करना होगा। उन्होंने कहा कि केवल आयरन की गोली फोलीक एसीड डेढ़ लाख की मात्रा में है। जबकि एल्बेंडाजोल की गोली 16000 है। दोनों दवाओं की कीमत की बात करें तो यह दवाएं न्यूनतम चार लाख रुपये की बताई जा रही हैं। हालांकि विश्वस्त सूत्रों की माने तो एल्बेंडाजोल की संख्या 23 हजार है। इस हालत में दवाओं का मूल्य और 63 हजार रुपये बढ़ जायेगा। सिविल सर्जन ने कहा कि यह जब्त दवाओं का स्टोरेज ढंग से नहीं किया गया था। जिससे दवाओं को अच्छी हालत में नहीं पाया गया है। मार्के की बात यह है कि दवाओं के साथ कुछ रंगीन फोटोग्राफ्स पाये गये हैं। जो कांडी प्रखंड क्षेत्र के एक विद्यालय में संपन्न कार्यक्रम के हैं। जब दवा की आपूर्ति का सही पता नहीं चल रहा है। इन दवाओं को जिला मुख्यालय गढ़वा सहित मझिआंव से आपूर्ति किया हुआ नहीं बताया जा रहा है तो इन तस्वीरों को बरगलाने के लिए रखा गया बताया जा रहा है।

जांच टीम में सिविल सर्जन डॉक्टर अशोक कुमार के साथ जिला के भू राजस्व उप समाहर्ता रवीश राज सहित कई स्वास्थ्य कर्मी शामिल थे। लोगों ने कहा कि सरकारी दवाएं साधन हीन गरीब मरीजों का सहारा होती हैं। इस तरह की दवाएं फेंक कर गरीबों के भरोसे पर कुठाराघात किया गया है। लाख टके का सवाल यह है कि स्वास्थ्य विभाग सिरे से पल्ला झाड़ रहा है कि यह हमारे यहां से आपूर्ति की गयी दवाएं नहीं है तो सवाल उठता है कि कितने दूर के स्वास्थ्य कर्मियों ने कांडी प्रखंड क्षेत्र में आकर दवाएं फेंक कर चले गये। दूसरे जिले के लोगों के द्वारा आकर यहां दवा फेंक जाने की कोई संभावना नहीं है। क्योंकि सड़क के किनारे इस निर्जन स्थान की जानकारी अन्यत्र रहने वाले लोगों को नहीं हो सकती।

विभाग की आशंका की सूई बार-बार बीआरसी पर जाकर ठहर रही है। अब यहां सवाल उठता है कि इस दृष्टिकोण से इस मामले की जांच की जाए कि किस कार्यालय से किस-किस बीआरसी को कितनी दवाएं भेजी गयी और उनके द्वारा किस स्कूल में कितनी दवाओं की आपूर्ति की गयी। निष्पक्ष एजेंसी द्वारा इस गंभीर मामले की गहन जांच नहीं की जायेगी तो अन्य मामलों की तरह यह मामला भी दाखिल दफ्तर करके फाइल को बंद कर दिया जायेगा।

बड़ी मात्रा में सरकारी दवा फेंके जाने की खबर प्रकाशित होने के बाद प्रशासन रेस

गढ़वा (आजाद सिपाही)। कांडी प्रखंड अंतर्गत राजा घटुहुआ गांव के रास्ते के पास गड्ढे में काफी बड़ी मात्रा में सरकारी दवा फेंके जाने की सूचना प्राप्त होने पर उपायुक्त शेखर जमुआर द्वारा मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच के आदेश दिये गये। मामले में भूमि सुधार उपसमाहर्त्ता, गढ़वा और असैनिक शल्य चिकित्सक-सह-मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, गढ़वा को संयुक्त रूप से जांच कर 16 मार्च तक सुस्पष्ट जांच प्रतिवेदन की मांग की गयी। उक्त स्थल से दवाओं को एकत्रित कर कांडी थाना परिसर में सुरक्षित रखे गये दवाओं, जो उपयोगी है, उसे विधिवत सूची तैयार कराकर, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मझिआंव द्वारा भंडार पंजी में नियमानुसार प्रविष्टि कराते हुए बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए उपयोग में लाने की बात कही गयी। साथ हीं प्राप्त जांच प्रतिवेदन के अवलोकनोपरांत उपायुक्त ने असैनिक शल्य चिकित्सक-सह- मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, गढ़वा को निदेश दिया है कि उक्त मामलें में दोषी के विरूद्ध अविलंब प्राथमिकी दर्ज करते हुए 24 घंटे के अंदर अनुपालन प्रतिवेदन समर्पित करें।

होली मिलन समारोह का आयोजन

गढ़वा (आजाद सिपाही)। संगीत कला महाविद्यालय में होली मिलन समारोह बहुत ही धूमधाम से संस्कार पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम सारे संगीत के छात्र छात्राएं उपस्थित अभिभावक और गण्यमान्य लोगों ने अबीर गुलाल का तिलक लगाकर एक दूसरे को होली की शुभकामना दिया। इस अवसर पर पूर्व नगरपरिषद अध्यक्षा अनिता दत्त ने कहा कि ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कड़ुता भुला कर गले मिलते है। होली में जिस तरह अनेकों रंग मिलकर एक हो जाते है, उसी तरह हर जाति धर्म के लोग सारा द्वेष मिटा कर एक हो जाते है। नगरपरिषद के भावी प्रत्यासी संध्या सोनी ने कहा कि होली पर्व का बहुत बड़ा महत्व है, जिस तरह होली पर्व को बसंत ऋतु का संदेश वाहक मन जाता है, उसी प्रकार धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस पर्व को बुराई पर अच्छाई के जीत के रूप में मनाया जाता है। निदेशक प्रमोद सोनी ने कहा कि होली के पर्व संस्कार मयार्दा में रह कर मनाने से होली की गरिमा और बढ़ जाता है। तत्पश्चात सारे संगीत के छात्र छात्राएं और वरिष्ठ कलाकार और उपस्थित लोगों ने एक से बढ़ कर एक लोकगीत धार्मिक और फिल्मी होली गाकर फागुन मास को होली के गीतों के माध्यम से रंगों से सराबोर कर दिया। सर्वप्रथम विवेक शर्मा ने घर मे पधारो गजानन जी,बंगाल में उड़ता अबीर आकाश कुमार रुद्र चौबे अनन्या कुमारी आराधना एवम साथियों ने होरी अवध भवन में खेलत सिया रघुवीर, नैतिक पांडये शशिकांत विश्वकर्मा नेहा कुमारी एवम साथियो ने बहल फागुनी बयार पाति लिखे सजना के गोरी, मोहित केशरी पूर्णिमा कुमारी और साथियों ने जोगी जी धीरे धीरे और होली के दिन दिल खिल जाते है रंगों में रंग मिल जाते है, पूजा कुमारी और साथियों ने सिया निकले अवधवा के ओर होलिया खेले राम लला, और जब हम पहनली साड़ी सैयां कहे डीजल गाड़ी, धर्मेंद्र कुमार पूर्णिमा कुमारी और साथियो ने रंग लेके दीवाने आ गए, परिधि कुमारी सुनेश विश्वकर्मा एवम साथी ने पनिया लाले लाल ए गौरा हमरो के चाही, अखिलेश चंद्रवंशी एवम साथियो ने ननदी जियब हम कइसे होलिया में, अनिल कुमार और साथियों ने एह होली में मूड बनाके निकलब जो बहरी तो बारी ई तिरंगा तोहरा छाती पर फहरी वरिष्ठ कलाकार गोपाल कश्यप खुशी कुमारी एवम साथियों ने भागी रे भागी रे बृजबाला कान्हा ने पकड़ा रंग डाला, रंग बरसे भींगे चुनरवाली रंग बरसे,नरेंद्र कुमार एवम साथियो ने अंगना लिबाड़बे,उषा कुमारी और साथियो ने सिया रघुवर के संग खेले होरी, वाद्ययंत्र नाल पे कुलदीप तबला पर संजय कुमार ऑर्गन पर दिलीप कुमार बैंजो पर मनीष कुमार बहुत ही खूबसूरत तरीके से कलाकारों के साथ संगत किया। पूनम श्री ने होली की महत्व को बखान करते हुए मंच संचालन बेहतरीन ढंग से की। इस अवसर पर सुमन सोनी, लीला सोनी, पूजा, पूनम, ममता, पूनम देवी, मधु, चंदा काफी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जमीन विवाद में मारपीट, दो महिला समेत 10 गंभीर

आजाद सिपाही संवाददाता

भवनाथपुर । थाना क्षेत्र अंतर्गत अरसली उत्तरी गांव में रविवार के सुबह दो पक्षों के बीच जमीन विवाद को लेकर हुई मारपीट की घटना में दोनों पक्षों से आठ पुरुष और दो महिलाएं समेत कुल 10 लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। घायलों में पहले पक्ष से संजय चौरसिया, मिथलेश चौरसिया, मुन्ना चौरसिया, नारद चौरसिया व अमन चौरसिया जबकि जबकि दसरे पक्ष से नंदकिशोर चौरसिया, चंदन चौरसिया, दिनेश चौरसिया, मनीता देवी व बबिता देवी का नाम शामिल है। उक्त सभी घायलों को ईलाज हेतु स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहाँ चिकित्सकों द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद संजय चौरसिया, दिनेश चौरसिया, नारद चौरसिया, मिथलेश चौरसिया व अमन चौरसिया को बेहतर ईलाज के लिए सदर अस्पताल गढ़वा रेफर कर दिया गया।

घटना के संबंध में पहले पक्ष के मिथलेश चौरसिया ने बताया कि गाँव के ही शेर मोहम्मद नामक युवक नंदकिशोर चौरसिया के खेत में से गाय पार कर रहा था, तभी नंदकिशोर ने उक्त युवक का गर्दन पकड़ लिया, जब मैं बीच बचाव किया तो नंद किशोर ने हाथ में लिए कुदाल से मेरे सिर पर प्रहार कर घायल कर दिया, मुझे बचाने पहुंचे मेरे भाइयों को भी रहर के खेत में पहले से घात लगाकर बैठे नगा चौरसिया, दिनेश, चंदन, जयप्रकाश, ओमप्रकाश व जयमंगल चौरसिया ने कुदाल, लाठी व डंडे से बुरी तरह पीटकर घायल कर दिया। वहीं दूसरे पक्ष के नंदकिशोर चौरसिया ने बताया कि हमलोग अपने खेत में पानी पटाने के लिए डिलेभरी पाईप बिछा रहे थे, तो मिथलेश चौरसिया व उसके भाई लोग अपने खेत से पाईप नही पार करने दे थे, और उक्त लोगो ने डिलेभरी पाईप को भी काटकर फेंक दिया जब हमलोग इसका विरोध किया तो मिथलेश चौरसिया और उसके भाईयों ने एकाएक लाठी डंडे से पीटकर हमलोगो को घायल कर दिये। मारपीट की घटना को लेकर दोनों पक्षो ने स्थानीय थाने में एक दूसरे के विरुद्ध नामजद प्राथमिकी हेतु लिखित आवेदन देने की बात कहीं। उधर मारपीट की घटना की जानकारी मिलते ही थाना के सअनि प्रभु मेहता पुलिस बल के साथ अस्पताल पहुंचकर घायलो से घटना की जानकारी लेने के बाद आवेदन के अलोक में मामले की जांच पड़ताल करने की बात कहीं।

कस्तूरी मसाला मिक्स के डुप्लीकेट पर छापेमारी

आजाद सिपाही संवाददाता

रमना। रांची स्थित बालाजी फूड प्रोडक्टस के क्षेत्रीय विक्रय प्रबंधक सियाराम सिंह ने अपनी टीम के साथ कस्तूरी मसाला मिक्स के डुप्लीकेट बना कर बिक्री किये जा रहे नमकीन का निरीक्षण रमना व बंशीधर नगर सहित अन्य जगहों पर रविवार को किया। इस दरम्यान उन्होंने थोक और खुदरा विक्रेताओं से डुप्लीकेट कस्तूरी न बेचने का आग्रह भी किया साथ ही यह भी बताया कि टाटीसिलवे इंडस्ट्रियल एरिया रांची स्थित बालाजी फूड प्रोडक्ट्स के लोकप्रिय उत्पाद फैंटास्टिक कस्तूरी मसाला मिक्स का नकली उत्पाद बना कर कस्तूरी के ही नाम से उसी रंग-रूप में बिक्री पिछले कई महीनों से कुछ निमार्ताओं द्वारा की जा रही है।

उन्होंने कहा की नकली उत्पाद की गुणवत्ता निम्न स्तर की होने के कारण उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने का खतरा है। कहा कि कम्पनी इस धोखाधडी को संज्ञान में लेते हुए ऐसे डुप्लीकेटर निमार्ताओं व उनके डिस्ट्रीब्यूटर, थोक विक्रेता-गण को चिन्हित कर करवाई करने की दिशा में अग्रसर है। जिसे लेकर लगातार छापेमारी कर कानूनी कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने उपभोक्ता व विक्रेताओं से डुप्लीकेट कस्तूरी नमकीन की खरीद बिक्री नही करने की भी अपील की। मौके पर क्षेत्रीय उप विक्रय प्रबंधक निरंजन सुमन, रवि गुप्ता सहित अन्य लोग मौजूद थे।

लोकसभा चुनाव की घोषणा होते ही प्रशासन सक्रिय

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। लोकसभा चुनाव की तारीख की घोषणा होते ही प्रशासन सक्रिय हो गयी। शनिवार की सात बजे रात्रि में भवनाथपुर के व्यस्त्तम खरौंधी मोड़ पर थाना प्रभारी कृष्ण कुमार के नेतृत्व में पुलिस कर्मियों ने एंटी क्राइम अभियान के तहत वाहनों की जांच की। इस दौरान पुलिस पदाधिकारी ने दो पहिया और चार पहिया वाहनों के डिक्की की जांच की। हलांकि इस दौरान कोई आपत्तिजनक सामान बरामद नहीं हुई। वहीं दूसरी ओर रविवार को पंचायत सेवक अजित सिंह और थाना के एसआई निरंजन शर्मा ने सेक्टर सात के अंतर्गत पड़ने वाला 142, 143, 148, 149 और 150 नंबर बूथ का निरीक्षण किया। वहीं सेक्टर छह के बूथ संख्या-135, 136, 153, 154, 156, 157, 158 और 159 का निरीक्षण पंचायत सेवक विष्णु प्रसाद ने की।

खेल में हार-जीत लगी रहती है, इससे निराश होने की जरूरत नहीं : अनंत

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के धनीमंडरा गांव में सुपर स्टार क्लब द्वारा कॉस्को क्रिकेट टूर्नामेंट सीजन 3 का आयोजन किया गया। टूर्नामेंट का उद्घाटन पूर्व विधायक अनंत प्रताप देव ने फीता कर किया। मौके पर उन्होंने कहा कि खेल में हार जीत लगा रहता है। इसलिए कोई भी टीम अगर हार जाती है, तो उस टीम के खिलाड़ियों को हतोस्ताहित नही होना चाहिए बल्कि अगले मैच में उन्हें पुरजोर तरीके से अच्छे खेल का प्रदर्शन कर मैच जितना चाहिए। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को खेल भावना से खेलने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता का उद्घघाटन मैच युवा उज्जल क्लब धनीमंडरा और टोनिका क्लब सरैया के बीच खेला गया, जिसमें धनीमंडरा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 8 विकेट खोकर 51 रन ही बना सकी। लक्ष्य का पीछा करने उतरी टोनिका सरैया की पूरी टीम 9.2 ओवर में 43 रन पर ही सिमट गयी। ऑल राउंड प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार युवा उज्ज्वल क्लब धनीमंडरा के सूरज कुमार को दिया गया। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष शिवपारस कुमार, उपाध्यक्ष विनय महतो, महासचिव जयप्रकाश पासवान, चंदू पासवान, दीपक कुमार, कुंदन कुमार, सोनू कुमार, जितेंद्र कुमार, शिवशंकर चौबे, पंकज कुमार आदि उपस्थित थे।

जेपीएससी परीक्षा के दौरान उपायुक्त ने परीक्षा केंद्रों का किया औचक निरीक्षण

गढ़वा (आजाद सिपाही)। झारखंड संयुक्त असैनिक सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2023 का कदाचार मुक्त एवं शांतिपूर्ण वातावरण में सफल संचालन को लेकर रविवार को उपायुक्त शेखर जमुआर ने आरके गोविंद प्लस टू हाई स्कूल समेत अन्य परीक्षा केन्द्रों पर औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने परीक्षा केंद्रों पर मूल भूत सुविधा यथा पेयजल/शौचालय की व्यवस्था, परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों की उपस्थिति, निर्धारित संख्या में परीक्षार्थियों की बैठने की व्यवस्था, ससमय परीक्षा प्रारंभ कराने समेत अन्य का निरीक्षण कर प्रतिनियुक्त प्रेक्षक/केंद्राधीक्षक को सभी जारी निदेर्शों का शत प्रतिशत अनुपालन करने को लेकर कई आवश्यक निर्देश दिए।

मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम के तहत नुक्कड़ नाटक सभा का आयोजन

रंका (आजाद सिपाही)। अनुमंडल प्रखंड अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वयंसेवक समाजसेवी अमरेंद्र कुमार के द्वारा नुक्कड़ नाटक और नुक्कड़ सभा के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक किया गया। इस मौके पर ग्रामीण और शहरी मतदाताओं से मतदान अवश्य करने की अपील की गयी। साथ ही नये मतदाता को पंजीकरण के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर अमरेंद्र कुमार ने कहा कि सभी मतदाता निर्भिक हो कर मतदान केंद्र पर जाकर मतदान करें। उन्होंने कहा कि मतदान शत प्रतिशत किया जाए ताकि लोकतंत्र पर लोगों का भरोसा बनीं रहे। उन्होंने कहा कि मतदाता किसी भी लोभ लालच में नहीं आकर ईमानदार, कर्मठ, विकास करने वाला प्रत्याशी को वोट करें। कोई भी व्यक्ति वोट देने की अधिकार से वंचित नहीं हो।

चौक-चौराहों से राजनीतिक दलों के बैनर हटाये गये

डंडई। लोकसभा चुनाव को लेकर चुनाव आयोग के द्वारा आचार संहिता की घोषणा करते ही प्रशासन रेस हो गई। उपायुक्त के निर्देश पर रविवार को डंडई प्रखंड क्षेत्र के सभी चौक-चौराहों पर पूर्व में लगाए गए राजनीतिक दलों के बैनर पोस्टर व दीवार लेखन को अभियान चलाकर हटाने का कार्य किया गया। वहीं लोगों से अपील की गई की आदर्श चुनाव आचार संहिता पालन करें। उसका उल्लंघन नहीं करें। अंबेडकर चौक डंडई बाजार, लवाही पेट्रोल पंप, रारो बाजार सहित अन्य जगहों पर कार्रवाई की गयी।

सूचना

पिपचो मत्स्यजीवी स्वावलम्बी सहकारी समिति लि. के सभी सदस्यों को सूचित करना है कि कोरोना काल के कारण समिति का निर्वाचन समय पर नही हो सका । इसलिए निर्वाचन हेतु तदर्थ कमेटी का गठन करना है । अतः समिति के सभी सदस्यों को आग्रह पूर्वक सुचित करना है कि दिनांक 03.04.2024 दिन बुधवार को समय 11 बजे से दिन स्थान पिपचों चौंक शिव मंदिर के प्रंगण में समिति का निर्वाचन हेतु तदर्थ कमेटी का गठन करना सुनिश्चित है । आप सभी सदस्यों का उपस्थिति अनिवार्य है ।

निवेदक
सुखदेव भुईयाँ
पूर्व सचिव
पिपचो म. स. स. स. लि.

लोकतंत्र के महापर्व में पत्रकारों को प्रशासन के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलने की जरूरत : दीपक कुमार पांडेय

गढ़वा जिला प्रेस क्लब की ओर से लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर कार्यशाला सह होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जिला प्रेस क्लब की ओर से लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर कार्यशाला सह होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन गढ़वा जिला प्रेस क्लब की ओर से रविवार को लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर कार्यशाला सह होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उत्सव गार्डेन नवादा मोड़ में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार पांडेय ने दीप प्रज्जवलित कर किया। इस मौके पर हरिहरपुर के संवाददाता दुर्गेश सिंह और न्यूज 11 के पत्रकार अरूण कुमार को न्यूज रिपोटिंग के लिये सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बोलते हुये पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार पांडेय ने कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर आदर्श आचार संहित लागू कर दी गयी है। ऐसे में पत्रकारों खासकर नये पत्रकारों को अपने दायरे को जानना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र का यह महापर्व है, इसमें पत्रकारों को भी कंधे से कंधा मिलाकर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को निष्पक्ष होकर काम करना चाहिये। भले इसमें जिला प्रशासन या पुलिस प्रशासन का फेवर हो या न हो। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया आदि के माध्यम से फेंक खबरें भी आती रहती हैं। इसलिये लोकसभा चुनाव में जब भी किसी तरह के विवादित या अपराध आदि से जुड़ी खबरें चलायें तो उसे एक बार वेरिफाई जरूर कर लें। उन्होंने कहा कि इससे समाचारों पत्र या इलेक्ट्रोनिक मीडिया की गरिमा बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में न्यूज ब्रिफिंग के लिये गढ़वा जिले में एसडीपीओ मुख्यालय को नोडल पदाधिकारी बनाया गया है, तो उनसे न्यूज से संबंधित जानकारी पत्रकार ले सकते हैं। इस मौके पर लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर बोलते हुये वरिष्ठ पत्रकार विनोद पाठक ने कहा कि संवैधानिक रूप से लोकतंत्र के तीन ही स्तंभ हैं, लेकिन पत्रकारिता को व्यवहारिक रूप से चौथास्तंभ माना जाता है. इस स्तंभ को मजबूत बनाये रखने के लिये पत्रकारों को सही रूप से अपनी जिम्मेवारी का निर्वाहण करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बाद यूट्यूब व सोशल मीडिया प्लेटफार्म से जुड़े पत्रकार भी जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं को उठाने का काम कर रहे हैं। इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार ओमप्रकाश पाठक ने कहा कि लोकसभा चुनाव में विज्ञापन की वजह से खबरें प्रभावित नहीं होने चाहिये। हमें अपने समाचारों में कभी भी यह नहीं झलकने देना है कि हम किसी प्रत्याशी या दल विशेष के पक्ष में खबरें लिख रहे हैं। इसके पूर्व कार्यक्रम के उदघाटन के पश्चात प्रेस क्लब के अध्यक्ष विवेकानंद उपाध्याय ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन महासचिव कमलेश सिन्हा ने किया। इस अवसर पर विजय प्रताप देव, संजय तिवारी, महेंद्र ओझा, नंद कुमार, श्रीकांत चौबे, ब्रजेश मिश्रा, भारत भूषण तिवारी, अंजनी उपाध्याय, पीयूष तिवारी, विजेंद्र तिवारी, शीतल विश्वकर्मा, गौरव पांडेय, मुकेश तिवारी, महमूद अंसारी, अभिमन्यु पाठक, प्रभात मिश्रा, उपेंद्र दूबे, राजकमल तिवारी, संजय यादव, बलराम शर्मा, राजीव सिंह, शिव कुमार रवि, श्याम बच्चन यादव आदि उपस्थित थे। इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें होली गीत गाये गये।

भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का लक्ष्य लेकर हम लड़ रहे चुनाव : अर्जुन मुंडा

खूंटी में खुला भाजपा का चुनाव कार्यालय, कड़िया ने किया उद्घाटन

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। जनजातीय मामलों और कंद्रीय कृषि मंत्री और खूंटी संसदीय क्षेत्र से भाजपा के उम्मीदवार अर्जुन मुंडा ने कहा कि 2014 से पहले कांग्रेस की सरकार थी। सबसे लंबे कालखंड तक देश शासन करने के वावजूद इतने वर्षों तक देश की जनता को इन्तजार था कि भारत अपनी सभ्यता7 संस्कृति के साथ स्वतंत्रता का अनुभव करे। इस दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को अपनी सभ्यता और संस्कृति के साथ परम वैभव के शिखर तक पहुंचाया। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद लंबे कालखंड तक देश में शासन करने वाले लोगों ने भारत की संस्कृति, परंपरा एवं मूल्यों को गिरवी रखने का काम किया, लेकिन नरेंद्र मोदी की स0रकार में देश के अंदर जिस प्रकार ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पुनर्स्थापना हो रही है, उसे देश की जनता भली-भांति देख और समझ रही है। 500 साल बाद अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण हुआ, देश के लोगों को अपनी संस्कृति पर गौरव करने का अवसर इस सरकार में मिला। अर्जुन मुंडा रविवार को खूंटी में भाजपा के चुनाव कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद जिला भाजपा कार्यालय में पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उन दिनों की सरकारों ने खूंटी और यहां के रणबांकुरों को महत्व नहीं दिया, लेकिन नरेंद्र मोदी की नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने अपनी आहुति देकर इस धरती को सींचने वाले रणबांकुरों को एक ओर जहां सम्मान देने का काम किया, वहीं दूसरी ओर विकास को भी रफ्तार दी। उन्होंने कहा कि अपने पांच वर्ष के कार्यकाल के दौरान उन्होंने खूंटी में स्वास्थ्य शिक्षा सहित मूलभूत सुविधाओं पर काम किया। उन्होंने कहा कि खूंटी की जनता जागरुक है, इन सब बातों को भली भांति देख व समझ रही है। निश्चय ही खूंटी के लोग विकसित भारत निर्माण का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों को मजबूत करेंगे। मौके पर भाजपा खूंटी विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा, तोरपा विधायक को लोकसभा संयोजक कोचे मुंडा, पूर्व विधायक विमला प्रधान, पूर्व विधायक मंगल सिंह सोय, खूंटी जिलाध्यक्ष चंद्रशेखर गुप्ता, सिमडेगा जिला अध्यक्ष लक्ष्मण बड़ाईक, सरायकेला खरसावां जिलाध्यक्ष उदय प्रताप सिंह देव, लोकसभा सह संयोजक ओम प्रकाश साहू, विधायक प्रतिनिधि काशीनाथ महतो, जिला प्रभारी सत्यनारायण सिंह, प्रदेश काग्रसमिति सदस्य संतोष जयसवाल, सुरेश जयसवाल सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य तय करेगा यह चुनाव : कड़िया मुंडा

कार्यालय उद्घाटन के बाद कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पद्मभूषण कड़िया मुंडा ने कहा कि यह चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है, यह हमारे आने वाली पीढ़ियों का भविष्य तय करेगा। इसलिए कार्यकर्ता सभी मनमुटावों को भूलकर एक जूटता के साथ चुनावी युद्ध के समर में उतरें और एक बार फिर से भाजपा का परचम लहराकर प्रधानमंत्री मोदी के हाथों को मजबूत बनाएं। इनके अतिरिक्त विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा, कोचे मुंडा सहित अन्य वक्ताओं ने भी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया।

बहुत कुछ बयां कर गयी कार्यक्रम में उपस्थित भारी भीड़: लोकसभा चुनाव में खूंटी सु संसदीय सीट से भाजपा के प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा के खूंटी में रविवार को हुए चुनाव कार्यालय के उद्घाटन के मौके पर उमड़ी भारी भीड़ चुनाव के संबंध में काफी कुछ बयां कर गयी। कार्यालय के उद्घाटन कार्यक्रम में खूंटी के अलावा रांची, सिमडेगा, सरायकेला खरसावां और गुमला जिले के कार्यकर्ता भारी संख्या में शामिल हुए। चुनावी मौसम में ऐसी भीड़ को देखकर जहां अर्जुन मुंडा सहित सभी भाजपा नेता गदगद नजर आये।

कांग्रेस नेत्री रिंकी देवी ने भाजपा की सदस्यता ली

खलारी (आजाद सिपाही)। मोहननगर में कांग्रेस नेत्री रिंकी देवी ने रविवार को अपने दर्जनों समर्थकों के साथ भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। इस दौरान उपस्थित भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश मंत्री कमलेश राम ने रिंकी देवी के साथ उनके समर्थकों को माला व पार्टी का पट्टा पहना कर विधिवत भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता दिलायी। मौके पर पूर्व उप प्रमुख सह पंसस रेणू देवी, अनिता देवी, रौशन करमाली, रूपेश उरांव, सुनील सतनामी, विकास कुमार, विष्णु, भरत कुमार, दीपक, विकास, राजदीप, संगम सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

किड्स केयर प्ले एकेडमी स्कूल का उद्घाटन

बुंडू (आजाद सिपाही)। बुंडू महावीर मंदिर चौक के समीप किड्स केयर प्ले एकेडमी स्कूल का उद्घाटन समाजसेवी विनय कुमार गुप्ता और अधिवक्ता रितेश कुमार जायसवाल ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस मौके पर संचालक विनय कुमार साहू, महेश साहू, सुनील जायसवाल, गणेश दत्त, मिठू, आनंद महतो, गणपति के अलावा अन्य लोग मौजूद थे।

18 मार्च से होनेवाली अनिश्चितकालीन हड़ताल स्थगित

बुंडू(आजाद सिपाही)। रसोइया/संयोजिका संघ बुंडू की बैठक जिला परिषद स्थित देवी मंडप में रविवार को हुई। इस बैठक की अध्यक्षता बीना देवी ने की, इस मौके पर रसोइया/संयोजिका संघ के अध्यक्ष बीना देवी ने कहा कि 18 मार्च से होने वाले अनिश्चितकालीन हड़ताल को चुनाव आचार संहिता को लेकर स्थगित कर दिया गया है। उन्होंने आगे कहा कि चुनाव बाद प्रदेश कमेटी की बैठक बुलाकर आगे की रणनीति के तहत आंदोलन की रणनीति बनायेंगे। हमारी मांग को राज्य सरकार और ना ही केंद्र सरकार ने पूरा किया है इसलिए हम सभी रसोईया/संयोजिका अध्यक्ष संघ इस बार चुनाव में नोटा का प्रयोग करेंगे।

अपनी संस्कृति को बचाकर ही हम विश्व गुरु बन सकते: प्रो. आदित्य प्रसाद साहू

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। सरस्वती विद्या मंदिर का रविवार को स्थापना दिवस सह होली मिलन समारोह मनाया गया। इसका उदघाटन दीप प्रज्ज्वलित कर राज्यसभा सदस्य प्रो. आदित्य प्रसाद साहू, विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक रामकुमार पाहन व पूर्व जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष जैलेन्द्र कुमार ने किया। होली मिलन में स्कूल के पूर्ववर्ती छात्र शामिल हुए। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आदित्य साहू ने कहा कि शिक्षा के साथ साथ बच्चों को नैतिक शिक्षा देनी है। संस्कारी बनाना है। सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल लगातार देश में अपनी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रवाद को मजबूत कर रहा है। अपनी संस्कृति को बचाकर ही हम विश्व गुरू बन सकते है। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष बिगेश्वर महतो, भाजपा के जिला उपाध्यक्ष मनोज कुमार चौधरी, वीचा उरांच, कामेश्वर महतो, सेवाराम महतो, राधा महतो, रंजीत महतो, भोला महतो, संजय महतो आदि उपस्थित थे।

वनवासी कल्याण केंद्र ने मनाया होली मिलन समारोह

खूंटी (आजाद सिपाही)। संघ भवन में रविवार को वनवासी कल्याण केंद्र होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विजय कश्यप ने की। प्रांत के उपाध्यक्ष सूदन मुंडा ने कहा कि यह खुशियों और उल्लास का पर्व है। हम सभी मिलकर उत्साह के साथ यह कार्यक्रम समाज में आयोजित करना चाहिए। समाज में जो दलित, बिछड़े व्यक्ति हैं उनको होली में सहयोग कर उत्साह के साथ उत्सव मनायें। उन्होंने कहा कि अपने नए-नए विचारों को रखकर समाज में परिवर्तन लाने की जरूररत है। कार्यक्रम में जयप्रकाश भगत, प्रदीप साहू, योगेश मिश्रा, लोकनाथ मुंडा, अधिवक्ता बोयर सिंह नाग, देवंती कश्यप, नौरी पूर्ति, गोरा कुमारी, साधो मुंडा आदि उपस्थित थे।

जरूरतमदों के बीच रमजान किट का वितरण

इटकी (आजाद सिपाही)। इटकी मौसी बाड़ी के पास रविवार को नेशनल ह्यूमन राइट्स के सदस्यों द्वारा गरीब और जरूरत मंदो के बीच रमजान कीट का वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पीजेएचआरएफ के संस्थापक डॉक्टर आरिफ नासिर भट्ट ने कहा कि मानव सेवा ही जीवन का मुख्य उदेश्य है। आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति पर समाज सेवा की भावना को जागृति करने की जरूरत है। नेशनल ह्यूमन राइट्स के निदेशक आरिफ राजा ने भी अपना विचार रखे। मौके पर सऊद आलम, सैफुल्लाह, अतहर आलम, मेराज, अरमान आफताब आलम, मनीष, साहिल रजा सहित अन्य लोग शामिल थे।

बचरा में होली मिलन समारोह का आयोजन

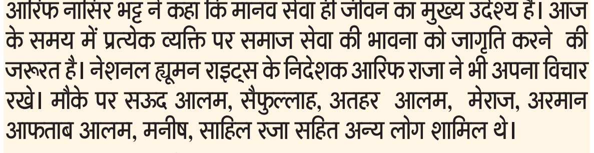

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार में विश्व हिंदू परिषद सह बजरंग दल द्वारा बचरा श्रमिक क्लब में रविवार को होली मिलन सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता बजरंग दल अध्यक्ष लक्ष्मण प्रसाद मंडल और संचालन चतरा जिला विद्यार्थी संघ प्रमुख अभिषेक सिंह दुर्गेश ने किया। मुख्य अतिथि मे बजरंग दल के जिला उपाध्यक्ष तारकेश्वर गुप्ता और विशिष्ट अतिथि प्रखंड प्रमुख जीतू गुप्ता सहित चतरा से आए अन्य अतिथि उपस्थित थे। समारोह के दौरान पिपरवार बजरंग दल सह हिंदू परिषद के द्वारा समारोह में उपस्थित आगंतुक सभी अतिथियों को रंगों का त्यौहार होली को लेकर रंग अबीर गुलाल लगाकर और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया, साथ ही पिपरवार मंडल के द्वारा क्षेत्र के सभी सनातनियों को होली की शुभकामनाएं दी गयी। इस मौके पर नकुल राम, अजय मौर्या, शंकर सिंह चेरो, धीरेंद्र शर्मा, राजकुमार, मुकेश राणा, सुनील प्रसाद, राजा, दीपक, नवीन, महादेव, महेंद्र, राकेश, राहुल, प्रवीण मौजुद थे।

इटकी में सरहुल पूजा को लेकर सरना समाज की बैठक

इटकी (आजाद सिपाही)। इटकी झखरा टोली स्थित सरना स्थल पर रविवार को सरहुल पूजा को लेकर सरना समाज ने सरहुल पूजा को लेकर एक बैठक की गई। बैठक में प्रत्येक वर्ष की तरह पारंपरिक तरीके से सरहुल पूजा मनाने का निर्णय लिया गया। 11 अप्रैल को सरहुल पूजा और 12 अप्रैल को विशाल शोभा यात्रा निकालने पर समाज के लोगों का सहमति बनी। इसके बाद गाव में फुल खोसाई का कार्यक्रम किया जायेगा। मौके पर धर्म गुरु विगा उरांव ने धर्म और सांस्कृति को बचाने के लिए युवाओं को आगे आने का अहवान किया। बैठक में पहान अशोक उरांव, पनभरा श्रीनाथमहतो, रंजीत उरांव, भोला उरांव, अजीत कच्छप, सुका उरांव, बंधन उरांव उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता बीरा उरांव ने किया।

डकरा डिस्पेंसरी बनी गैराज, एटक के एनके एरिया अध्यक्ष कृष्णा चौहान ने जतायी नाराजगी

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। डकरा ओल्ड डिस्पेंसरी परिसर इन दिनों गैराज का रूप ले चुका है। सीसीएल प्रबंधन के द्वारा इस ओल्ड डिस्पेंसरी भवन और परिसर को मरम्मतिकरण और सुदरीकरण करके सीसीएल के सेवानिवृत्त कोल कर्मियों के रहने ठहरने के लिए बनाया गया था, जो कि अपना सीसीएल संबंधित काम लेकर एरिया आते है। लेकिन वर्तमान में इस परिसर में निजी कंपनी की बड़ी-बड़ी हाइवा गाड़ियों को खड़ा किया जा रहा है। साथ ही इस डिस्पेंसरी में कंपनी के लोग भी रहने लगे है। मालुम हो कि पिछले कई वर्शों से इस ओल्ड डिस्पेंसरी भवन में जनहित का काम कर रही कोयलांचल के दो रक्तदान संस्थाओं के द्वारा रक्तदान शिविर का भव्य आयोजन किया जाता रहा है। जिसमें भारी संख्या में कोयलांचल सहित बाहर के लोग शामिल होते है। वहीं इस स्थान का उपयोग उक्त जनहित के कार्यों के लिए किया जाता रहा है, लेकिन अब प्रबंधन की लापरवाही के कारण इस जगह को गैराज में तब्दील कर दिया गया हैं। जो इस पुराने भवन डिस्पेंसरी की सुंदरता, उसकी छवि और उसके अस्तित्व को अपमानित कर रही है। इधर एटक के एनके एरिया अध्यक्ष कृष्णा चैहान ने प्रबंधन के इस कार्य शैली पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि यह स्थान का उपयोग जनकल्याण जैसे कार्य रक्तदान शिविर एवं बाहर से ट्रेनिंग करने आये लोगों के लिए उपयोग में लाया जाता था। लेकिन इस प्रकार निजी कंपनी को देकर सभी लोगों को इस कार्य पर निंदा करने पर विवश कर दिया है। श्री चैहान ने कहा कि जिस उद्देश्य से इस भवन का निर्माण सीसीएल के द्वारा कराया गया और महाप्रबंधक के द्वारा उद्घाटन कराया गया यह उस कार्य को अपमानित करने जैसी बात है। अविलंब सीसीएल प्रबंधन इसे खाली कराये ताकि इसका उपयोग पूर्व की भांति जनहित कार्यों में किया जा सके।

एटक के एनके एरिया अध्यक्ष कृष्णा चौहान।

बेहतर काम करनेवाले दस कामगार पुरस्कृत

कामगार को पुरस्कृत करते पीओ अनिल कुमार सिंह।

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। केडीएच परियोजना मे बेहतर कार्य करने वाले दस कामगारों को प्रबंधन ने पुरस्कृत किया है। परियोजना पदाधिकारी अनिल कुमार सिंह ने बताया कि केडीएच परियोजना में उत्पादन माह के दौरान बेहतर काम करने वाले कामगारों को रविवार को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया है। ताकि कामगार और अधिक उत्साह के साथ परियोजना का उत्पादन बढ़ाने में लग जाए। जिन कामगारो को प्रबंधन ने पुरस्कृत किया गया उनमें मनोज गंझू, बाबू साव, जगजीवन सतनामी, मनोज विष्वकर्मा, रामचरण सतनामी, तेतरा मुंडा, बिरसा मुंडा, सरजू भुइया, सोहराय महतो, मनोज चैहान का नाम शामिल है। इस मौके पर खान प्रबंधक राघवेंद्र गांधी, सेफटी ऑफिसर पी बेहरा, आलोक कुमार समेत कई लोग मौजूद थे।

राय बस्ती में 13 अप्रैल को सरहुल पूजा का आयोजन, समिति का हुआ गठन

खलारी(आजाद सिपाही)। पंचायत भवन राय में रविवार को ग्रामीणों की बैठक हुई। बैठक में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी गांवा देवती राय बस्ती में 13 अप्रैल को सरहुल पूजा, 14 अप्रैल को अंबेडकर मैदान राय में शोभा यात्रा सह सरहुल मेला और दिन में नागपुरी प्रोग्राम कराने का निर्णय लिया गया। वहीं कार्यक्रम को सफल आयोजन के लिए एक कमेटी का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष विजय पहान उर्फ बैलून पहान, उपाध्यक्ष मंगरु मुंडा, सचिव दुर्गा प्रसाद महतो, सह सचिव रामावतार राम, कोषाध्यक्ष रूपेश महतो, संगठन सचिव दीपक कुमार महतो, मीडिया प्रभारी गणेश कुमार महतो और मुख्य संरक्षक लालेष्वर महतो, नागेष्वर महतो, एतवारा महतो, संरक्षक राजेश महतो, अर्जुन महतो, प्रदीप उरांव, भरत राम, रामकुमार भुईंया, इंटेक्स मद्रासी, तुलसी भुईंया, मनोज महतो, लखन लाल और रामू उरांव को बनाया गया।

डकरा में 20 अप्रैल को सरहुल पूजा

खलारी (आजाद सिपाही)। एनके एरिया डकरा सरना समिति की बैठक उत्तरी पंचायत सचिवालय केडीएच में रविवार को बिगन सिंह भोगता की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचलन रंथू उरांव ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से 20 अप्रैल दिन शनिवार को सरहुल पुजा धूमधाम से मनाए जाने का निर्णय लिया गया। बैठक में अमृत भोगता, राम लखन गंझू, नरेश गंझू, इंदिरा देवी, देवपाल मुंडा, कन्हाई पासी, लालचंद विष्वकर्मा, राजेन्द्र उरांव, प्रभाकर गंझू, अमित लकडा, अमर भोगता, रंजीत गंझू, खेम लाल तुरी, अशोक उरांव, बबलू उरांव, सुकरा उरांव, रमेश तुरी, सुनिल मुंडा, मनोज मुंडा, कमलेश उरांव, सोनू उरांव सहित अन्य उपस्थित थे।

रैयत विस्थापित मोर्चा का 22 को धमधमिया में होली मिलन समारोह

खलारी(आजाद सिपाही)। रैयत विस्थापित मोर्चा की बैठक अंबेडकर पार्क डकरा में रविवार को हुई। बैठक की अध्यक्षता एरिया अध्यक्ष बिगन सिंह भोगता तथा संचालन सचिव जगरनाथ महतो ने किया। बैठक में रैयत विस्थापित की समस्या, मोर्चा की मजबूती, होली मिलन समारोह आयोजित करने को लेकर विचार विमर्श किया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि मोर्चा के द्वारा धमधमिया तुमांग में 22 मार्च को होली मिलन समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया। बैठक में रंथू उरांव, नरेश गंझु, अमृत भोगता, रामलखन गंझू, टंडवा दक्षिणी जिला परिषद सदस्य नेहा उरांव, इंदिरा देवी, देवपाल मुंडा, शिवनारायण लोहरा, श्याम उरांव, कुलदीप, श्यामजी, कमलेश आदि उपस्थित थे।

बीओसी में हुई लोकल संवेदक संघ की बैठक

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के बीओसी हनुमान मंदिर के प्रागंण मे लोकल संवेदक संघ की एक आवश्यक बैठक संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता जितेन्द्र कुमार और संचालन सुरेश महतो ने किया। बैठक मे स्थानीय लोकल संवेदको की समस्याओ पर चर्चा की गई। बैठक मे सीएसआर योजना के तहत किये जाने वाले कार्यो पर विस्तार से चर्चा की गयी। बैठक के दौरान आपसी तालमेल एंव आपसी सहयोग से कार्य करने और एक दुसरे के कार्यो मे टेंडर नही डालने का निर्णय लिया गया। बैठक मे सभी स्थानीय लोकल संवेदक को एकजुट होने की अपील की गयी। बैठक मे उपस्थित स्थानीय संवेदको ने भी बारी-बारी से अपनी समस्या और विचार को रखा। बैठक मे राजेश महतो, सुरैश महतो, महेश महतो, इदरीस अंसारी,जाहिद अली, बिनोद मिंज, प्रकाश महतो, मोहम्मद अब्बास, बिजली महतो, लियाकत अंसारी, फहीम रजा, संतोष यादव, दिनेश महतो, पिंटु साव, दिनेश सहित कई लोकल संवेदक मौजुद थे।

पिपरवार के चिरैयाटांड़ में हुई विस्थापित प्रभावित ट्रक ऑनर एसोसिएशन की बैठक

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के चिरैयाटांड़ चार नम्बर कांटा के समीप विस्थापित प्रभावित ट्रक ऑनर एसोसिएशन एनके पिपरवार की एक आवश्यक बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता बिजय कुमार महतो और संचालन महेन्द्र भोगता ने किया। बैठक मे ट्रक मालिको की कई समस्या पर चर्चा करते हुए कई प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें मुख्य रूप से वर्ष 2012-22 मे तय किये गये भाड़ा मे संसोधन करने, तय किये गये स्थान से 20 से 25 किलोमीटर आगे ले जाने पर 100 रुपये प्रतिटन भाड़ा बढ़ोतरी करने,अनलोडिंग स्थान पर 24 घंटे से अधिक समय तक ट्रक खड़ी रहने पर तीन हजार रुपए प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना देने, संसोधित भाड़ा को नगद भुगतान करने,अशोका पिपरवार मे क्रमांक संख्या के आधार पर ट्रको का परिचालन करने, अनलोडिंग स्थान की दुरी 250 किलोमीटर से अधिक होने पर ट्रांसपोर्टिंग कंपनी द्वारा 50 प्रतिशत एडवांस भाड़ा भुगतान करने सहित कई अन्य प्रस्ताव को पारित किया गया। बैठक में काफी संख्या मे स्थानीय ट्रक मालिको सहित लिफ्टर मौजुद थे।फोटो-

चिकित्सा पदाधिकारियों को दिया गया कुष्ठ उन्मूलन का प्रशिक्षण

खूंटी (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत आयोजित जिला स्तरीय चिकित्सा पदाधिकारियों को दो दिवसीय प्रशिक्षण रविवार को सदर अस्पताल में संपन्न हुआ। सिविल सर्जन कार्यालय के सभागार में आयोजित प्रशिक्षण में सीएस डॉ नागेश्वर मांझी, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ नमिता टोप्पो और एनआरआई, झारखंड डॉ सिद्धार्थ बिसवाल और काशीनाथ चक्रवर्ती द्वारा सभी प्रखंडों से आए हुए चिकित्सा पदाधिकारियों को कुष्ठ के उपचार की विस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में कुष्ठ कार्यालय, खूंटी के सभी कर्मियों ने भाग लिया।

समय का सदुपयोग कर पढ़ने-लिखने की आदत डालें कैदी: प्रधान जिला जज

उपकारा खूंटी में जेल लोक अदालत और कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार, नई दिल्ली और झालसा रांची के निर्देश पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह डालसा अध्यक्ष सत्य प्रकाश के मार्गदर्शन में रविवार को उपकार खूंटी में जेल लोक अदालत और कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जेल अदालत में तीन कैदियों के मामलों पर विचार किया गया और कैदियों को कानूनी सहायता दी गयी। जेल अदालत के अलावा कानूनी0 जागरूकता शिविर का भी आयोजन हुआ। प्रधान जिला और सब न्यायाधीश सह डालसा अध्यक्ष सत्य प्रकाश ने कहा कि सभी कैदियों का विचारण बड़ी तेजी से हो रहा है और कैदी अपने-अपने अधिवक्ता के माध्यम से अपने वाद का जल्द से जल्द निपटारा करायें। उन्होंने अनिवार्य बेल के बारे में भी कैदियों को जागरूक किया और निःशुल्क न्याय पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सभी कैदियों को न्यायालय में चल रहे अपने मामले के बारे में जानकारी रखने का हक है। आपको निःशुल्क न्याय देना हमारा कर्तव्य है, बशर्त आप हक लेने के लिए आगे बढ़ें। आप सभी कानून में विश्वास करते हैं और आपके धैर्य की भी परीक्षा है। आप सभी अपने अंदर दबी प्रतिभा को जगाएं और समय का सदुपयोग करते हुए लिखने-पढ़ने की आदत डालें। इसमें डालसा आपकी मदद करेगा। अनुमंडलीय न्यायिक दंडाधिकारी दिनेश बाउरी ने बिल प्रोबेशन ऑफेंडर्स एक्ट, जमानतीय और गैर जमानतीय वारंट और एलएडीसी चीफ राजीव कमल ने विचरण योग्य अधिवक्ता प्राप्ति के अधिकार के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में जिला जल तृतीय प्राची मिश्रा, न्यायिक दंडाधिकारी तुषार आनंद एलईडी जलसा के सहायक पैनल अधिवक्ता पीएलबी और कारा अधीक्षक उपस्थित थे।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 18 मार्च, 2024
www.azadsipahi.in

अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में सात घायल

बेड़ो/मांडर (आजाद सिपाही)। बेड़ो थाना क्षेत्र के पोकलो ढोड़हा के समीप रविवार की शाम 6.30 बजे सवारी ऑटो और कार की भिड़ंत में ऑटो में सवार पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। उसकी पहचान बिरसा उरांव (70), जयंती देवी (52), रतनी टोप्पो (50), सृष्टि मिंज (21) और हर्ष प्रीतम (8) के रूप में हुई है। सभी बेड़ो के रहने वाले हैं। जिन्हें ग्रामीणों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बेड़ो पहुंचाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल मां बेटा रतनी टोप्पो व हर्ष प्रीतम को बेहतर उपचार के लिए रिम्स अस्पताल रेफर कर दिया। दूसरी ओर, मांडर थाना क्षेत्र बचटवल मोड़ के समीप बोलेरो के धक्के से बाइक सवार भुनु सोमरा उरांव (65) और बिगलु उरांव (30) गंभीर रूप से घायल हो गये। घटना रविवार की शाम लगभग पांच बजे की है।

कृषि अधिष्ठाता डॉ डीके शाही को पद से हटाने की मांग, पहुंचे डीएसपी

बीएयू में छात्र की मौत से आक्रोशित लोगों ने वीसी रेसिडेंस में की तोड़फोड़

आजाद सिपाही संवाददाता

कांके। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (विवि) के एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग कॉलेज के सेवेंथ सेमेस्टर के छात्र रुपेश कुमार ओझा की शनिवार की रात हुई अचानक मौत के बाद जमकर हंगामा हुआ। घटना से आक्रोशित छात्रों ने देर रात एक बजे वीसी आवास में जमकर तोड़फोड़ कर दी। उनकी गाड़ी के साथ खिड़की आदि क्षतिग्रस्त कर दिया। इसकी सूचना मिलते ही डीएसपी अमर कुमार पांडेय, कांके थाना प्रभारी इंस्पेक्टर रामकुमार वर्मा आदि मौके पर पहुंच गए और स्थिति को

संभाला। जानकारी के मुताबिक रूपेश को हॉस्टल में अचानक सांस लेने में दिक्कत होने लगी और वह गिर गया। साथी छात्रों ने इसकी सूचना विश्वविद्यालय प्रशासन को दी। इसके बाद उसको रिम्स अस्पताल ले जाया गया। एंबुलेंस नहीं होने से उसको ऑक्सीजन सपोर्ट नहीं मिल सका। बीएयू के हॉस्पिटल में डॉक्टर और अन्य स्टाफ भी नहीं थे। कई अध्यनरत विद्यार्थियों ने आरोप लगाया कि डीन डॉ डीके शाही का व्यवहार भी ठीक नहीं है। हॉस्टल के मेस का खाना गुणवत्ता विहीन है। इन सब कारणों से अधिकांश विद्यार्थियों की तबीयत खराब रहती है। इन सभी बातों से छात्रों ने वार्डन और कृषि अधिष्ठाता डॉ डीके शाही को कई बार अवगत भी कराया है, लेकिन डॉक्टर शाही सहित वार्डन भी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। डॉ डीके शाही कई छात्रों को अनुशासन में रहने का नोटिस भी दे चुके हैं। डॉ डीके शाही के व्यवहार से कई छात्र तनाव में पढ़ाई कर रहे हैं। लेकिन विश्वविद्यालय प्रशासन इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। उधर, रविवार को रूपेश के शव का पोस्टमार्टम हुआ। वीसी डॉ सुनील चंद्र दुबे रिम्स अस्पताल जाकर परिजनों से मिले। सोमवार को पुलिस अधिकारियों की उपस्थिति में विद्यार्थियों और बीएयू अधिकारियों की बात होगी। इस संबंध में रांची जिला कांग्रेस के महासचिव महेश कुमार मनीष ने कहा कि छात्र की मौत बहुत ही गंभीर मामला है। इतने बड़े विश्वविद्यालय में छात्र को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं होना यह जांच का विषय है। इसकी उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए और दोषी को कानूनी सजा मिलनी चाहिए। दूसरी ओर इन्होंने कृषि अधिष्ठाता डॉ डीके शाही को अविलंब अधिष्ठाता पद से हटाने की मांग कुलपति डॉ सुनील चंद्र दूबे से की है। महेश कुमार मनीष ने कहा कि डॉक्टर शाही का व्यवहार छात्रों और कर्मचारियों के प्रति अच्छा नहीं है। इसकी भी जांच कराई जाए। इससे पूर्व अधिष्ठाता पद से उन्हें हटाया जाए।

महत्वपूर्ण न्यूज

आजादी के सात दशक बाद भी सड़क की बांट जोहता बेड़ो का बंजारा गांव

बेड़ो (आजाद सिपाही)। देश को आजाद हुए सात दशक बीत चुके हैं। देश तेजी से आधुनिक हो रहा है, लेकिन आज भी कई गांव ऐसे हैं, जहां विकास की किरण नहीं पहुंची है। ऐसा ही हाल बेड़ो प्रखंड के हरिहरपुर जामटोली पंचायत के बंजारा गांव का हैं। जहां पंचायती राज के भी एक दशक बीतने के बावजूद आज तक गांव तक पहुंचने के लिए सड़क ही नहीं बनी है। ग्रामीणों का कहना है कि हर बार चुनाव के समय नेताओं द्वारा सड़क बनाने का आश्वासन दिया जाता है, लेकिन चुनाव खत्म होने के बाद कोई भी नेता गांव की तरफ देखता तक नहीं है। लोगों ने बताया कि पदाधिकारियों से लेकर कई नेताओं और मंत्रियों को भी गांव में सड़क निर्माण के लिए आवेदन दिया गया। लेकिन आज तक प्रशासन ने गांव में सड़क निर्माण के लिए कोई पहल नहीं किया है। बारिश के दिनों में उन्हें जंगल को चिरते हुए कच्ची पगडंडियों के सहारे बच्चे स्कूल व कॉलेज और हमें बाजार एवं प्रखंड कार्यालय पहुंचना पड़ता है। आज हम लोग खुद को उपेक्षित महसूस कर रहे है।

बुढ़मू के उमेडंडा में मंदिरों में प्रतिमाओं को खंडित करने का आरोपी युवक गिरफ्तार

बुढ़मू (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के उमेडंडा में 11 मार्च को तीन मंदिरों में प्रतिमाओं को खंजित करने की घटना का उद्भेदन करते हुए बुढ़मू पुलिस ने पांच दिन बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। उसकी पहचान गंदुरा गंझू (42) वह मैकलुस्कीगंज थाना क्षेत्र के हरहू गांव का रहने वाला है। थाना प्रभारी रामजी कुमार ने बताया कि आरोपी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। पूछताछ करने के बाद रविवार को उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। पुलिस की मानें तो आरोपित गंदूरा ने बताया कि वह शुरू से ही असामाजिक प्रवृति का होने के कारण उसके परिजन भी उससे परेशान रहते थे। मंदिरों से पैसे चुराने की उसकी आदत है। गांजा-शराब आदि का सेवन करता हगै। गंदुरा मंदिर-मंदिर घूमकर चढ़ाए पैसे चोरी करता था। 11 मार्च को भी उसने गांजा के नशे में पैसा चोरी करने के मकसद से उमेदंडा मंदिर पहुंचा। पर पैसा नहीं मिलने पर नाराज होकर उसने भगवान पर ही अपनी भड़ास निकाल दी और तीन मंदिर की प्रतिमाओं को क्षतिग्रस्त कर फरार हो गया।

बेड़ो : साप्ताहिक हाट गोली कांड के 72 घंटे बाद भी पुलिस के हाथ खाली

बेड़ो (आजाद सिपाही)। बेड़ो बस्ती निवासी शंकर कच्छप की हत्या के 72 घंटे बीत जाने के बावजूद पुलिस अब तक किसी को गिरफ्तार नहीं कर सकी है। हत्यारे अब तक पुलिस की पकड़ से दूर हैं। जबकि पुलिस ने घटना के उद्भेदन के लिए एसआईटी भी गठित कर रखी है। इधर पुलिस का दावा है कि उसे घटना के संबंध में अहम सुराग हाथ लगे हैं, जिसके आधार पर जल्द ही अपराधियों को पकड़ लिया जाएगा। गौरतलब हो कि 14 मार्च की शाम को सब्जी मंडी के समीप अज्ञात अपराधियों ने शंकर कच्छप की गोली मारकर हत्या कर दी थी। जिसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया था। इसकी जानकारी मिलने पर पूर्व राज्यसभा सदस्य समीर उरांव व पूर्व विधायक शिव शंकर उरांव ने अपराधियों की गिरफ्तारी को लेकर प्रशासन से बात की थी। तब पुलिस ने जल्द हत्यारों को गिरफ्तार कर लेने के दावा किया था, लेकिन अब तक सफता नहीं मिली है। इधर हत्या को लेकर शंकर के बड़े भाई शंभु कच्छप द्वारा अज्ञात लोगों के खिलाफ बेड़ो थाना में प्राथमिकी दर्ज करायी है। हत्यारों की गिरफ्तारी नहीं होने के कारण स्वजनों व ग्रामीणों में आक्रोश है। ग्रामीणों का कहना है कि जल्द ही घटना में संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तार किया जाए।

केसरी समाज का मिलन सह वनभोज का आयोजन

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही)। केसरी समाज धुर्वा के बैनर तले पुराना विधानसभा भवन में रविवार को 56वां केसरी समाज का मिलन समारोह सह वन भोज का आयोजन किया गया। जिसमें झारखंड के पूर्व मंत्री रामचंद्र केसरी, झारखंड प्रदेश केसरवानी वैश्य सभा के प्रदेश संरक्षक शिव कुमार केसरी, झारखंड स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी के कुलदीप डॉ त्रिवेणी नाथ साहू, डॉक्टर प्रेमसागर केसरी, रांची जिला अध्यक्ष कार्तिक केसरी, राधेश्याम केसरी, कपिल देव केसरी और दिलीप केसरी आदि ने गोत्राचार्य महर्षि कश्यप मुनि के चित्र पर एवं दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही केशरवानी समाज का संपूर्ण विकास हो सकता है। इस दौरान खेल कूद कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। जिसमें सफल लोगों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केसरी समाज धुर्वा के अध्यक्ष प्रदीप कुमार केसरी और संचालन महामंत्री राधेश्याम केसरी व धन्यवाद ज्ञापन सचिव दिलीप केसरी ने किया। मौके पर अनमोल केसरी, तरुण केसरी, ओमप्रकाश केसरी, आनंद केसरी, ओम केसरी, रविंद्र केसरी, रमेश केसरी संतलाल साहू गोपाल साहू, शत्रुघ्न केसरी मोहन साहू राजेंद्र केसरी संजय केसरी जनार्दन केसरी मनोज केसरी किशोर केसरी अनिल केसरी, रांची ,धुर्वा, नगड़ी चुटिया, लोधमा बरही ,गढ़वा सहित कई गांव के केसरी समाज के सैकड़ो लोग शामिल हुए।

लापरवाही के कारण 11 साल बाद भी आइटीआइ कॉलेज में शुरू नहीं हुई पढ़ाई

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। जब कोई योजना धरातल पर उतारी जाती है तो सबसे पहले उसका लाभ कैसे आम जनता को मिले इस पर विचार-विमर्श किया जाता है। लेकिन प्रखंड के चचकोपी गांव में योजना पर विचार किए बिना ही औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनाने में करोड़ों रुपए खर्च कर दिए गए हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि संस्थान भवन तो बनकर तैयार हो गया, लेकिन इसका लाभ किसी को अब तक नहीं मिला है। यह औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आइटीआइ कालेज) शोभा की वस्तु बनकर रह गयी है। इसके निर्माण कार्य हुए 11 साल बीत चुके हैं लेकिन इसे चालू नहीं किया गया है। इस वजह से तकनीकी शिक्षा के मामले में क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। जबकि रेलवे एवं बिजली विभाग सहित अन्य विभागों में नौकरी पाने के लिए आइटीआइ की योग्यता अनिवार्य किया गया है। फिर भी बेड़ो के चचकोपी में बने इस आइटीआइ कालेज को सरकार द्वारा चालू नहीं किया जा रहा है। जिससे यहां के मैट्रिक पास युवक निराश और हताश हो रहे हैं।

कब और कितने की लागत से बनकर तैयार हुआ भवन

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के लिए भवन का निर्माण तीन करोड़ चार लाख रुपये की लागत से साल 2013 में किया गया था। इस भवन का निर्माण बेड़ो के चचकोपी गांव में किया गया है जो प्रखंड से मात्र 8 किलोमीटर की दूरी पर है। लोगों का कहना है कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनाने में करोड़ों रुपए खर्च कर दिए गए हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि संस्थान का भवन तो बनकर तैयार हो गया, लेकिन इसका लाभ किसी को नहीं मिल रहा है।

क्या था उद्देश्य, कितना हुआ पूरा

कौशल विकास योजना के तहत हर किसी में कौशल का विकास करना इसका मुख्य उद्देश्य था। अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करोड़ों खर्च तो कर दिए गए लेकिन प्रशिक्षण के लिए भवन का इस्तेमाल एक दिन भी नहीं हुआ। ऐसे में लक्ष्य प्राप्ति मात्र एक सपना बनकर रह गया है। भवन की हालत देखकर आज यही लगता है कि विभाग इसे लेकर पूरी तरह उदासीन हो चुका है। रखरखाव के अभाव में चारों तरफ झाड़ी उग गया है। गांव में रहने वाले लोगों व अभिभावकों से बात की गई तो उनलोगों ने बताया कि जब इस भवन का शिलान्यास हुआ था। तो हमें बहुत उम्मीदें थी। लग रहा था कि हमारे बच्चों की पढ़ाई अब घर के सामने ही हो जायेगी। सरकारी कॉलेज होगा तो पैसा भी कम लगेगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसे बने 11 साल बीत गये, लेकिन पढाई शुरू नहीं हो पायी। अब भवन भी खंडहर में तबदील हो रहा है। कोई भी जनप्रतिनिधि इसमें ध्यान नहीं दे रहे हैं।

लोकसभा चुनाव की तैयारियों पर कांग्रेस ने शूरू किया चर्चा अभियान

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर चलाए जा रहे अभियान के क्रम में रविवार को कांग्रेस की बैठक गंगाघाट बाजार टांड स्थित फुटबॉल मैदान में हुई। जिसमें कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता सतीश पॉल मूंजनी भी उपस्थित थे। बैठक में लोकसभा चुनाव की तैयारियों और रणनीति पर चर्चा की गई। कार्यकर्ताओं ने चुनाव कैसे जीता जाए इसे लेकर अपने-अपने अनुभव व सुझाव साझा किया। सतीश पॉल मूंजनी ने कहा कि भाजपा पूंजीपतियों की सरकार है। उन्हें गरीबों के दुख दर्द से कोई लेना देना नहीं है। हमें हर हाल में लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के उम्मीदवारों को जिताना है। सभी को जनता के बीच जाकर कांग्रेस की विचारधारा को बताना है। मौके पर मुमताज खान, किस्टो कुजूर, जगन लिंडा आदि ने भी अपने विचार रखे। बैठक में वरिष्ठ नेता मुमताज खान, मीडिया प्रदेश कोडिनेटर रामदेव सिंह, जगन लिंडा, मिनहाज आलम, मुन्ना मुंडा, अनिल उरांव, मार्शल लिंडा, बिरसा टोप्पो, सुरेश सिंह, भुनेश्वर महतो, राजू उरांव सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

अवैध खनन के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई, बालू लदा तीन ट्रैक्टर जब्त

रातू (आजाद सिपाही)। थाना प्रभारी शशिभूषण चौधरी ने अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए रविवार की सुबह क्षेत्र के इतवार बाजार से अवैध बालू लदे तीन ट्रैक्टर को जब्त किया। पुलिस सभी ट्रैक्टर को जब्त कर थाना ले आयी है। वहीं, छापामारी होता देख सभी चालक व ट्रैक्टर मालिक फरार हो गये। जब्त तीनों ट्रैक्टर बिना नंबर के है। थानेदार शशिभूषण चौधरी ने जब ट्रैक्टर चालक से बालू खनन से संबंधित व गाड़ी के कागजात मांगे तो चालक कागजात दिखाने में असमर्थ रहा। जब्त वाहनों की जानकारी खनन विभाग व डीटीओ के अधिकारियों को दे दिया गया है। दूसरी ओर, पुलिस की कार्रवाई के बाद से क्षेत्र के बालू माफियाओं में खलबली मच गयी है।

नहीं मिल रहा किसान सम्मान निधि का पैसा: आरती कुजूर

मोटे अनाज की मांग ज्याद, किसान इसकी ज्यादा से ज्यादा खेती करें : अंजली लकड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

नामकुम। लाली पंचायत के सुदूरवर्ती गांव फतेहपुर में रविवार को नामकुम लैंप्स की अध्यक्ष आरती कुजूर ने किसानों के साथ बैठक की। जिसकी अध्यक्षता रामचंद्र मुंडा ने की। इस दौरान आरती कुजूर ने किसानों को बताया कि जहां सरकार लैंप्स के माध्यम से धान को 23 रुपए प्रति किलो खरीदती है, वहीं बिचौलिए धान कम दाम में खरीदते है। ऊपर से उनका तौल भी सही नहीं रहता है। आरती कुजूर ने किसानों को

उपज लैंप्स के माध्यम से करने, लैंप्स से धान, खाद, नैनो खाद के साथ किसान क्रेडिट कार्ड बनाकर इसका लाभ उठाने को कहा। वहीं, एफपीओ की निदेशक अंजली लकड़ा ने कहा कि आज की जीवन शैली और जहरीले खान-पान से लोगों को कई प्रकार की बीमारी हो रही है। ऑर्गेनिक खेती और उसकी उपज की मांग ज्यादा है। साथ ही मोटा अनाज की भी मांग है। इसलिए जंगल के उपज के साथ मोटे अनाज का किसान खेती करे। किसान संगठन उसके लिए बाजार उपलब्ध कराएगा। किसानों ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा दी जा रही किसान सम्मान निधि की राशि कई किश्तों में बचा हुआ है। अंचल कार्यालय जाने पर बैंक भेजा जाता है और बैंक जाने पर अंचल कार्यालय वापस भेजा जाता है। कई बार इन कार्यालयों का चक्कर लगाने के बाद किसान थक-हारकर घर आ जाते है। इसके साथ राशन कार्ड, उज्जवला गैस, पानी की किल्लत पर भी लोगों ने अपनी बातें रखी। इस पर आरती कुजूर ने हर संभव सहयोग करने की बात कही। बैठक में दिलीप हजाम, दिग्विजय मुंडा, अनिल हजाम, सोमनाथ मुंडा, अंकिता मुंडा, रविन्द्र हजाम, शिवचरण मुंडा, गोवर्धन मुंडा, प्रकाश मुंडा, अभिषेक मुंडा, राहुल मुंडा, बसंत मुंडा, जगरनाथ मुंडा आदि उपस्थित थे।

उषा मार्टिन फॉउंडेशन से 400 परिवार को शुद्ध पेयजल आपूर्ति

शुद्ध पेयजल के साथ जल संरक्षण पर जोर : प्रिया बागची

10 सोलर जल मीनार एवं 26 चपाकलों की हुई मरम्मती

आजाद सिपाही संवाददाता

अनगड़ा। उषा मार्टिन फॉउंडेशन की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल आपूर्ति के लिए विशेष अभियान चलाया गया है। इसके तहत टाटीसिलवे स्थित कारखाने के समीपवर्ती नामकुम एवं अनगड़ा प्रखंड के 18 गांवों में बंद चापाकलों एवं जल मिनारों को मरम्मत कर दुरुस्त कराया गया है। इसके अलावा इन जल मीनारों को सोलर ऊर्जा से चलाने की व्यवस्था की गयी है। वहीं कई गांवों में इन जलमीनार के निकट स्नान घर का भी निर्माण कराया गया है। राजधानी में बढ़ती गर्मी के मद्देनजर चलाए जा रहे इस अभियान से ग्रामीणों में खुशी का माहौल है। उषा मार्टिन फॉउंडेशन के सचिव डॉ मयंक मुरारी ने

बताया कि हरेक गांव के जनप्रतिनिधियों के माध्यम से मिली शिकायत पर प्राथमिकता के आधार पर खराब पड़े जलमीनारों की मरम्मत करायी गयी। लोगों को शुद्ध पेयजल की सुविधा उपलब्ध होने में कोई दिक्कत न हो, इसके लिए कई जगहों पर सोलर लाइट भी लगाए गए हैं। फॉउंडेशन की ओर से मासू, उलातू, टाटी पूर्वी, टाटी पश्चिम, महिलौंग, होरहाप, हरातू, सिलवे सहित अन्य जगहों पर टंकी बदलने के अलावा, सोलर पैनल एवं प्लंबिंग सिस्टम भी नए लगाए गए हैं। ताकि गरमी के दिनों में पानी की किल्लत ना हो सके। ये सुविधा उपलब्ध हो जाने के बाद उन गांवों में 400 परिवारों को शुद्ध पेयजल मिल सकेगा। कई जगहों पर स्नान घर का भी निर्माण कराया गया है। सीएसआर प्रबंधक प्रिया बागची ने बताया कि इस पूरे अभियान में शुद्ध पेयजल के साथ जल संरक्षण पर भी जोर दिया गया है। लोगों को पानी के महत्व और विशेषकर गरमी में जल संकट के दौरान इसके उपयोग के बारे में भी लोगों को बताया गया। इसके लिए खासकर जल सहिया एवं जनप्रतिनिधियों को जागरूक करने का अभियान चलाया जाता है। हरातू की मुखिया नूतन पाहन ने कहा है कि उषा मार्टिन द्वारा पेयजल सुविधा के लिए उठाए गए कदम काफी सराहनीय है। इससे लोगों में कंपनी के प्रति विश्वास बढ़ा है। वहीं टाटी के शैलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि कंपनी द्वारा लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक वर्ष इस तरह का कार्य किया जाता है। ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत मासू, उलातू, टाटी पूर्वी, टाटी पश्चिम, महिलौंग, होरहाप, हरातू, सिलवे आदि इलाकों में खराब पड़े कई जलमिनारों को ठीक कराया गया। वहीं मासू, उलातू, टाटी पूर्वी, टाटी पश्चिम, महिलौंग, होरहाप, हरातू, सिलवे, जानुम, हेसल, बहेया, लुपुंग आदि क्षेत्रों में दो दर्जन से भी अधिक चपाकालों की मरम्मत कराई गई है।

घर से लापता हुई महिला, मामला दर्ज

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के कोयनारडीह खेरवाजारा गांव की रहने वाली रूपन देवी (47) नामक महिला घर से लापता है। जिसका कई दिनों बाद भी कोई सुराग नहीं मिल पा रहा है। बताया जा रहा कि रूपन देवी पिता स्व विगत 12 मार्च को बिना किसी को बताए घर से कहीं चली गई। इसके बाद से ही उसका कोई पता नहीं चला। परिजनों ने महिला की काफी तलाश की, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। परिजनों के जब सारे प्रयास फेल हो गए तो उन्होंने अनगड़ा थाना पहुंचकर महिला की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करायी है।

मुड़हड़ पहाड़ का अतिक्रमण बर्दास्त नहीं: लक्ष्मी मुंडा

आजाद सिपाही संवाददाता

पिठोरिया। मुड़हर पहाड़ बचाओ महारैली के तहत रविवार को मुड़हर पहाड़ प्रांगण में जनजातीय समुदाय की ओर से रैली निकाल कर सभा की गई। लक्ष्मी नारायण मुंडा ने अपने संबोधन में कहा कि जनजातियों की संस्कृति, धार्मिक स्थलों व विरासत मुड़हर पहाड़ में अतिक्रमण की जा रही है। जिसे किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं, अन्य वक्ताओं ने कहा कि अपनी संस्कृति और धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। सभा को सहदेव मुंडा, साधु मुंडा, लाला महली आदि ने भी संबोधित किया। वहीं दूसरी ओर महाराज मदरा मुंडा मुड़हर पहाड़ मरंग बुरू विकास समिति, सुतियांबेगढ़, पिठोरिया, काँके, रांची ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर प्रशासन का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया। उधर, रैली में आए लोगों द्वारा बोर्ड पर लिखे हुए पहानों एवं ग्राम प्रधानों के नाम व

मोबाइल नंबर को मिटवा दिया गया। वहीं, कुछ लोगों के दपहाड़ के ऊपर चढ़कर झंडा उखाड़ने की बात कर रहे थे, पर पिठोरिया थाना प्रभारी गौतम कुमार राय के प्रयास से ऐसा नहीं होने दिया गया। समिति का आरोप है कि चुनाव आचार संहिता लागू रहने के बावजूद मुड़हर बचाओ महारैली एवं मुड़हर पहाड़ से सटे प्रांगण में सभा की गई। इसका नेतृत्व लक्ष्मी नारायण मुंडा ने किया। यह गैर कानूनी है। महाराज मदरा मुंडा मुड़हर पहाड़ मरंगबुरू विकास समिति के सदस्यों द्वारा शीघ्र ही एक प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन को आवेदन देकर मुड़हर पहाड़ मरंग बुरू को गोद लेने एवं पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का आग्रह करेंगे। उधर, महाराजा मदरा मुंडा मुडहर पहाड़ मरंगबुरू विकास समिति के संरक्षक पहलवान मुंडा ने कहा कि मुंडा समाज/आदिवासी समाज में बलि प्रथा का प्रचलन है। रूढि प्रथा के रिवाज से पूजा पाठ किया जाता है। मुंडा समाज में कोई प्रार्थना सभा का प्रचलन नहीं है। इस दौरान ग्राम सभा को और सशक्त बनाकर आने वाले दिनों में मुड़हर पहाड़ मरंग बुरू का सर्वांगीण विकास किये जाने की बात कही गयी।

अपील : जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने की राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक

आदर्श आचार संहिता का पालन करने में जनप्रतिनिधि करें सहयोग : शशि रंजन

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह डीसी शशि रंजन ने रविवार को समाहरणालय सभागार में लोकसभा निर्वाचन 2024 को लेकर सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को बताया कि शनिवार को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव की तारीखों की घोषणा के पश्चात ही पलामू जिले में आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गया है। ऐसे में इसका अनुपालन आवश्यक है।

पदाधिकारियों के साथ बैठक करते जिला निर्वाचन पदाधिकारी शशि रंजन।

उन्होंने कहा कि 24 घंटे के भीतर सभी सरकारी कार्यालयों व परिसरों से दीवार लेखन, पोस्टर्स बैनर्स आदि को हटाना अनिवार्य है। इसके साथ ही 48 घंटे के भीतर अन्य सार्वजनिक स्थानों जैसे रेलवे स्टेशन बस अड्डे आदि स्थानों से भी राजनीतिक पोस्टर बैनर झंडा कटआउट वगैरह को भी हटाया जाना है। उन्होंने बताया कि इस अवधि के दौरान आधिकारिक वाहनों के दुरुपयोग पर पूर्ण रूप से बैन रहेगा। इसके अलावे उन्होंने राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों को प्रचार सामग्रियों के अनुमोदन के लिए मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मॉनिटरिंग कमेटी से अनुमति लेने के प्रावधानों से भी अवगत कराया। उपरोक्त के अतिरिक्त प्रतिनिधियों को आयोग की विस्तृत गाइडलाइन तथा विभिन्न प्रकार के अनुमतियों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी। इसके साथ ही चुनावी खर्च को लेकर विभागीय निर्देश की जानकारी दी गयी। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि से कहा की भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए सभी दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित रूप से हो,इसके लिए सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल को दिशा-निर्देश का पालन करना अतिआवश्यक है। उन्होंने कहा की कोई भी अभ्यर्थी अधिकतम चुनाव प्रचार में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित 95 लाख राशि खर्च कर सकता है। व्यय लेखा का संधारण प्रत्येक अभ्यर्थी को कराना होगा और उन्हें समय-समय पर जिला द्वारा निर्धारित तिथि को अपने व्यय लेखा की जांच करानी होती है,वे अनिवार्य रूप से अपने व्यय लेखा की जांच निर्धारित तिथि में कराना सुनिश्चित करेंगे। कहा कि 50 हजार से ज्यादा नकद लेकर आवागमन की स्थिति में उसकी स्क्रुटनी की जाएगी। बिना अनुमति के कोई भी रैली या रोड शो पर प्रतिबंध रहेगा। मौके पर डीडीसी रवि आनंद, मेदिनीनगर नगर आयुक्त जावेद हुसैन, आदर्श आचार संहिता के नोडल पदाधिकारी सह अपर समाहर्ता कुंदन कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी, भाजपा, कांग्रेस, झामुमो, आजसू और बहुजनसमाज पार्टी के प्रतिनिधियों समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

होली को लेकर शांति समिति की बैठक

मनातू/पलामू (आजाद सिपाही)। थाना परिसर में होली पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर शनिवार को शांति समिति की बैठक की गई। जिसमें शराब का सेवन करने वालों व शराब का धंधा करने वालों के विरुद्ध सख्त रहने की बात कही गई। पुलिस पदाधिकारियों ने इसके लिए आमलोगों से सहयोग करने की बात कही। मनातू थाना प्रभारी निर्मल उरांव ने कहा गया कि होली का पर्व महान पर्व है। इसमें लोग एक दूसरे को रंग व गुलाल का प्रयोग कर के खुशी मानते हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी शराब का सेवन करते पकड़ा गया तो जेल भेज दिया जाएगा। होली के दिन प्रशासन द्वारा शांति व्यवस्था बनाने के लिए पूर्ण व्यवस्था की गई है। किसी प्रकार की कहीं कोई गलत घटना या अपराध ना हो इसकी उचित व्यवस्था की गई है। शांति समिति की बैठक के समाप्त होते ही रंग गुलाल के साथ होली मिलन समारोह मनाया गया। जिसमें सभी लोगों ने एक दूसरे को रंग और गुलाल लगाया। बैठक में 20 सूत्री अध्यक्ष उमेश प्रसाद साहू, उपाध्यक्ष सिना यादव, बीगू साहू,अयोध्या साहू, वीरु यादव शशि कुमार और श्रवण यादव आदि थे।

आदर्श आचार संहिता लागू होते ही हटाये जाने लगे राजनीतिक दलों के बैनर-पोस्टर

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/पलामू। मुख्य चुनाव आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव की घोषणा करते ही पूरे देश में अचार संहिता शनिवार से लागू हो गई है। ऐसे में हरिहरगंज नगर पंचायत प्रशासन भी बैनर, पोस्टर और होर्डिंग्स हटाने में जुट गई है। प्रभारी बीडीओ सह कार्यपालक पदाधिकारी कुमार अरविन्द बेदिया के निर्देश पर नाजीर प्रितम प्रफुल एक्का और सामुदायिक संगठन कर्ता विचित्रा कुमारी ने रविवार से हरिहरगंज शहर के मेन रोड किनारे लगे बैनर, पोस्टर और होर्डिंग्स को हटाने का कार्य शुरू कर दिया है। प्रभारी बीडीओ कुमार अरविन्द बेदिया ने बताया कि बैनर, पोस्टर और होर्डिंग्स हटाने का कार्य तेजी से चल रहा है। साथ ही सभी राजनैतिक दलों से भी आग्रह किया है कि यदि उनके बैनर और पोस्टर कहीं लगा है तो उसे तत्काल हटा लें।

बच्चों में संस्कार के साथ ही गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा जरूरी है : रवींद्र सिंह

आरसी पब्लिक स्कूल का मना वार्षिकोत्सव समारोह

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड के सुदुरवर्ती ग्राम पंचायत कोशी अंतर्गत खैरा गांव में आरसी पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य दिलीप कुमार पाल व मंच संचालन उसी गांव के पारा सहायक शिक्षक बैजनाथ पासवान ने किया। कार्यक्रम का उद्घाटन भाजपा के वरिष्ठ नेता रविंद्र सिंह उर्फ बबलू सिंह, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक रामकेश्वर भगत, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष अजय प्रसाद गुप्ता आदि ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रवींद्र सिंह ने कहा कि हुसैनाबाद शहर से 15 किलोमीटर दूर सुदुरवर्ती गांव के बच्चों को शिक्षा देना बहुत पुण्य का कार्य हैं। इस इस स्कूल के संचालित करने वाले शिक्षक व सहयोगकार्त सभी धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि आज के आधुनिक परिवेश में बच्चों को बेहतर शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी जरूरी है। वहीं, स्कूली बच्चों ने नृत्य व गीत के माध्यम से आये हुए अतिथियों को स्वागत किया। साथ ही एक से बढ़कर एक नृत्य और संगीत को पेश कर सबका मनमोह लिया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा नेता ने दर्जनों वृद्ध व प्रबुद्ध और समाजसेवी को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। मौके पर मनोज कुमार सिंह, पंसस रीता देवी, रणविजय सिंह, कृपा नाथ पाठक, अरुण कुमार, रंजीत कुमार सिंह, सुष्मिता कुमारी, निशु कुमारी, सीमा कुमारी, संगीत कुमारी, कंचन कुमारी सहित भारी संख्या ग्रामीण मौजूद थे।

होली को लेकर कथारा ओपी परिसर में शांति समिति की बैठक, डीजे व नशापान पर रोक

कथारा (आजाद सिपाही)। होली पर्व शांतिपूर्ण ढंग से मनाने को लेकर कथारा ओपी में शांति समिति की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता ओपी प्रभारी जितेश कुमार ने की। इस दौरान ओपी प्रभारी ने कहा कि होली के त्योहार पर शांति बनाए रखने की आवश्यकता है। पर्व इस प्रकार मनाएं की किसी की भावना आहत ना हो। उन्होंने अपेक्षा जाहिर की कि उपस्थित सभी प्रबुद्ध जन प्रशासन को सहयोग करेंगे। साथ ही सभी से आग्रह करते हुए कहा कि पर्व को लोग आपस में भाईचारे का संबंध बनाकर मनाएं। किसी प्रकार का हो हल्ला, शोर शराबा एवं अप्रिय घटना को रोकने का पूरा प्रयास करें। खासकर उक्त अवसर पर डीजे एवं नशा पान पर अनावश्यक विवाद करने की स्थिति उत्पन्न ना करें। उन्होंने कहा कि आप सभी से अपील है। साथ ही यह उम्मीद है आप हमें इस कार्य में निश्चित रूप से सहयोग करेंगे। उक्त अवसर पर नव प्रोन्नत पुलिस अवर निरीक्षक संतोष सरदार, सहायक अवर निरीक्षक गुप्तेश्वर पांडेय, थाना मुंशी इंदर पासवान, कथारा पंचायत की मुखिया पूनम देवी, पंचायत समिति सदस्या निभा देवी, झामुमो नेता शमशुल हक, समाजसेवी प्रदीप यादव, जाबिर आलम, डॉ. सर्जन चौधरी, मथुरा सिंह यादव, पूर्व मुखिया मो. मुस्ताक, मुर्शीद अली, बबलू यादव, विजय यादव, राजेश कुमार पांडेय, गोबिंद यादव, गोपाल यादव, रामचंद्र यादव, बिनोद यादव आदि की उपस्थिति थे।

विवाहिता ने फांसी लगाकर की आत्महत्या, परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। अनुमंडल क्षेत्र के मोहम्मदगंज थाना अंतर्गत गाजीबिहरा गांव निवासी दीपक सिंह की 32 वर्षीय पत्नी पूजा देवी का शव पुलिस ने संदिग्ध स्थिति में बरामद किया है। बताया जा रहा कि घर में ही पंखे से लटक कर आत्महत्या कर ली है। जबकि मायके पक्ष ने आशंका व्यक्त किया है कि पूजा की गला दबा कर हत्या करने के बाद उसे फंखे से लटका दिया गया है। मृतका हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के कचरा गांव निवासी दिनेश सिंह की पुत्री थी। मोहम्मद गंज पुलिस शव को कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया है। पुलिस ने कहा कि पोस्टमार्टण रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के असल कारणों पा पता चल सकेगा।

महत्वपूर्ण न्यूज

उत्पाद विभाग की छापामारी, एक हजार किलो जावा महुआ और 25 लीटर अवैध शराब जब्त

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त शशि रंजन के निर्देश पर उत्पाद विभाग द्वारा जिले के नवाबाजार थाना क्षेत्र के कंडा इलाके में छापामारी अभियान चलाया गया। इस दौरान उत्पाद विभाग की टीम ने एक हजार किलोग्राम जावा महुआ व 25 लीटर अवैध महुआ शराब को जब्त किया। हालांकि, इस अवैध कारोबार में संलिप्त भजु प्रजापति फरार पाये गये। समाचार लिखे जाने तक छापामारी जारी है। इस संबंध में उत्पाद अधीक्षक सुधीर कुमार ने बताया कि उपायुक्त के निर्देशानुसार आगामी लोकसभा चुनाव व होली के दृष्टिगत इस तरह का छापामारी अभियान लगातार जारी रहेगा।

बकाया खाद्यान्न के लिए जायेंगे न्यायालय

उंटारी रोड/पलामू (आजाद सिपाही)। जिले के उंटारी रोड प्रखंड क्षेत्र अन्तर्गत डेवडर बिंदुआ के ग्रामीणों को अगस्त, सितंबर और अक्टूबर महीने का खाद्यान्न नहीं मिला है जिससे नाराज ग्रामीणों ने न्यायालय का रुख करने का मन बना लिया है। जानकारी के अनुसार करकटा के जनवितरण प्रणाली उजाला समूह द्वारा लाभुकों को तीन माह का राशन वितरण नहीं किया गया था। हालांकि मामला प्रकाश में आने के बाद संबंधित पीडीएस संचालक को निलंबित कर बकाया खद्यान्न की रिकवरी कर नजदीकी डीलर को प्राप्त करा दिया गया है। ग्रामिणों ने बताया कि संबंधित पदाधिकारियों की लापारवाही के कारण रिकवरी किया हुआ राशन वितरण नहीं किया जा रहा है। अगर जल्द राशन वितरण नहीं किया गया तो हम सभी ग्रामीण बाध्य हो कर न्यायालय का रुख करेंगे और संबंधित पदाधिकारी के खिलाफ याचिका दायर करेंगे। मौके पर सकीना बीवी, सरीफन बीवी, सैरून बीवी, हसीना बीवी, सहाना बीवी, असमा बीवी, संजय राम, मुचू राम, तपेसर राम, प्रगाश राम, लालती कुंवर, तेतरी कुंवर, पप्पू राम, सुनारपति देवी, सुषमा देवी, बंधु राम, मुखदेव राम, कोशीला कुंवर, सीता देवी सहित दर्जनों ग्रामीणों बताया कि हम सभी खेती पर ही निर्भर रहते है सुखा पड़ने की वजह से सरकारी राशन ही एक मात्र सहारा है वक्त रहते खाद्यान्न नहीं मिला तो हम सभी न्यायालय के शरण में जायेंगे और भूख हड़ताल करेंगे। वहीं डीलर भरोसा राम ने बताया कि तीन माह के बकाया 82 क्विंटल खाद्यान्न प्राप्त हुआ है पदाधिकारियों के आदेश के बाद वितरण करेंगे, वहीं इस सम्बंध में जानकारी हेतु प्रखण्ड आपूर्ति पदाधिकारी के फोन पर संपर्क करने के बाद बोले कि ऑफ लाइन नहीं वितरण किया जाएगा जब तक मशीन काम नहीं करेगा तब तक वितरण नहीं किया जाऐगा।

ट्रैफिक प्रभारी से मिला विद्यार्थी परिषद का प्रतिनिधि, विभिन्न मुद्दों पर की चर्चा

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। विद्यार्थी परिषद की ओर से नवनियुक्त ट्रैफिक प्रभारी समाल अहमद का स्वागत नगर मंत्री रामाशंकर पासवान की अध्यक्षता में किया गया। उक्त अवसर पर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य नितीश दुबे ने बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि नवनियुक्त ट्रैफिक प्रभारी सभी जन समस्याओं का समाधान करेंगे एवं सभी ट्रैफिक नियमों का पालन कुशलतापूर्वक आम आवाम से करवाएंगे। नवनियुक्त ट्रैफिक प्रभारी ने आम लोगों से आग्रह किया है कि वाहन चलाते समय सभी ट्रैफिक नियमों का पालन करें एवं अपने एवं अपने परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करें। उक्त अवसर पर परिषद के राष्ट्रीय प्रादेशिक विश्वविद्यालय सहसंयोजक विनीत पांडे,जिला सोशल मीडिया प्रमुख राजन कश्यप, जिला कला संयोजक अंकित लाल, गणेश लाल अग्रवाल महाविद्यालय कॉलेज उपाध्यक्ष कौशल मिश्रा,कार्यालय मंत्री उत्कर्ष तिवारी, मनीष पांडेय आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

स्पोर्ट्स

झारखंड एडवोकेट क्रिकेट टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला अवेंजर टीम और इंडियन एसोसिएशन के बीच हुआ। जिसमें इंडिया एसोसिएशन ऑफ लायर्ड ने 14 रनों से मुकबला जीत लिया।

झारखंड एडवोकेट क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 का समापन, खिलाड़ी हुए सम्मानित

अवेंजर को हरा इंडिया एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स बना चैंपियन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड अधिवक्ता मंच रांची के तत्वावधान में आयोजित झारखंड क्रिकेट एडवोकेट टूर्नामेंट के फाइनल मैच का उद्घाटन झारखंड अधिवक्ता मंच के संस्थापक संरक्षक राजकुमार साहू ने किया। रविवार को झारखंड एडवोकेट क्रिकेट टूर्नामेंट का पहला सेमी फाइनल झारखंड हाई कोर्ट एवं अवेंजर टीम के साथ हुई जिसमें अवेंजर टीम ने पहला सेमीफाइनल मैच 7 विकेट से जीत लिया। वहीं, दूसरा सेमीफइनल फाइनल मैच केदार साहू एसोसिएट की टीम एवं इंडियन एसोसिएशन आफ लॉयर के बीच रहा, जिसमें इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स ने दूसरा सेमीफाइनल मैच 40 रनों से जीता। इसी बीच महिला अधिवक्ताओ का एग्जीबिशन मैच हुआ जिसमें क्वीन बी एवं गैलेक्सी गर्ल्स के बीच हुआ जिसमें क्वीन बी की टीम ने मैच जीत लिया। झारखंड एडवोकेट क्रिकेट टूर्नामेंट का फाइनल मैच अवेंजर टीम एवं इंडियन एसोसिएशन का लॉयर्स के बीच हुई जिसमें इंडिया एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स 14 रन ने फाइनल मैच जीत लिया। टूर्नामेंट में खेले गए सभी मैच के बेस्ट प्लेयर को मैन ऑफ द मैच से सम्मानित किया गया। साथ ही टूर्नामेंट मैच के बेस्ट बैट्समैन, बेस्ट बॉलर, बेस्ट फील्डर, मैच ऑफ द टूनार्मेंट से खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। इस टूर्नामेंट के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद आदित्य प्रसाद साहू ने सभी खिलाड़ियों को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि रमेश सिंह, भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य, (प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता) ने भी खिलाड़ियों को सम्मानित किया । झारखंडी अधिवक्ता मंच के संस्थापक श्री राजकुमार साहू, अधिवक्ता मंच के अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार, झारखंड नागरिक परिषद के अध्यक्ष श्री उत्तम कुमार, शैलेश सिंह, अमरनाथ चौधरी, आशीष कुमार, मुकेश केसरी, बबलू सिंह, मनीष कुमार, ज्योति आनंद, श्री पुरुषोत्तम साहू, विजय सिंह, नीरज कुमार प्रशांत कुमार बंदिश कुमार ज्योति आनंद , सोनू कुमार, केदार साहू आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

मोरहाबादी मैदान में अहिंसा रन 31 मार्च को, पंजीकरण शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑगेर्नाइजेशन (जीतो) संस्था की ओर से 31 मार्च को मोरहाबादी मैदान में अहिंसा रन का आयोजन किया जा रहा है। रन सुबह 5.30 बजे से प्रारंभ होगी। इस अहिंसा रन के लिए पंजीकरण का प्रारंभ हो गया है। संस्था की अध्यक्ष प्रियंका पाटनी, सरोज पांड्या ,कुणाल जैन, देवेश जैन, अनंत जैन एवं खेल संयोजक सोनम पटोदी इस आयोजन को सफल बनाने में जोर शोर से लगे हुए है। टीम के सदस्य विभिन्न संस्थाओं से संपर्क कर कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण दे रहे हैं। इसे लेकर संस्था का एक प्रतिनिधिमंडल सदर अनुमंडल पदाधिकारी उत्कर्ष कुमार, एडीएम राजेश्वरनाथ आलोक से मिलकर उन्हें रन में शामिल होने का निमंत्रण दिया। अहिंसा रन को लेकर उन्होनें प्रशासन की ओर से मिलने वाली व्यवस्था को उपलब्ध कराने की बात कही। अध्यक्ष ने बताया कि अहिंसा रन झारखंड ओलिंपिक एसोसिएशन कर देख रेख में हो रहा है। अहिंसा रन में शामिल होने वाले प्रतिभागियों के लिए तीन तरह के दायरे तय किये गये है। इसमें 10 किलोमीटर की दौड़ में महिला और पुरूषों के लिए प्रथम स्थान को 21 हजार, द्वितीय को 15 हजार और तृतीय स्थान पाने वाले को 11 हजार रुपये पुरस्कार दिये जायेंगे। वहीं पांच किलोमीटर दौड़ के लिए प्रथम 11 हजार, द्वितीय 7100 और तृतीय को पांच हजार रुपये मिलेंगे। इसके अलावा 45 वर्ष से उपर के महिला-पुरुष प्रतिभागियों में 10 किलो मीटर दौड़ में प्रथम स्थान को 21 हजार, द्वितीय को 15 हजार और तृतीय स्थान पाने वाले को 11 हजार रुपये, जबकि तीन किलो मीटर दौड़ में प्रथम स्थान को 7100 रुपये पुरस्कार दिया जाएगा।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 18 मार्च, 2024
www.azadsipahi.in

बैट्री चोरी के आरोपी को भेजा गया जेल

एग्यारकुंड (आजाद सिपाही)। चिरकुंडा के सरसापहाड़ी स्थित श्रम कल्याण केंद्र के पास खड़े ट्रक से बैट्री चोरी के मामले में चिरकुंडा पुलिस ने नदी धौड़ा निवासी विशाल कुमार रजक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस ने ट्रक संख्या जेएच 10 बीके 2202 से चोरी हुए बैट्री को भी बरामद कर लिया है। जानकारी हो कि राज किशोर प्रसाद के ट्रक से 14 मार्च की देर रात चोरों ने बैट्री की चोरी कर ली थी। इसके बाद राज किशोर प्रसाद द्वारा दिए गए लिखित शिकायत पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने बैट्री के साथ चोर को धर दबोचा।

बालू के अवैध उत्खनन व भंडारण से फूल रहा दामोदर नदी का दम

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। धनबाद-बोकारो मुख्यमार्ग को जोड़ने वाले ओवरब्रिज के बीच स्थित तेलमोचो, दामोदर नदी से बालू तस्कर मशीनों से नदी का सीना चीर रहे हैं। इस कारोबार से जुड़े तस्कर एनजीटी के सभी नियमों को ताख पर रखकर नदी की धारा को मोड़ने में लगे हैं। इनके इस कृत्य से दामोदर नदी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ा दिख रहा है। यही नहीं, घाटों से बड़े पैमाने पर बालू निकासी के बाद उसे तेलमोचो स्थित ग्राम रक्षादल से हीरक जाने वाली सड़क पर कुंजी, नागदा एवं भाटडीह के करीब सड़क के आस-पास अवैध रूप से भंडारण कर दूसरी जगहों पर आपूर्ति की जा रही है। इसके अलावे धनबाद, बोकारो मुख्यमार्ग के आसपास भी बालू का भंडारण किया जा रहा हैं। न तो खनन विभाग और ना ही पुलिस प्रशासन इस अवैध भंडारण पर अंकुश लगा पा रही है।

अवैध खनन को लेकर सरकार के मंसूबों पर प्रशासन की उदासीनता काफी भारी पड़ रही है। बालू माफियाओं से खनन विभाग और स्थानीय पुलिस की मिलीभगत से बालू का काला कारोबार खूब फलफूल रहा है। इसके अलावे तस्करी के लिए कुख्यात ढोंगा घाट, तेलमोचो घाट, नगदा घाट, कुंजी घाट, भाटडीह घाट से उठाव कर माफियाओं द्वारा रात-दिन ट्रैक्टरों व हाइवा से बालू लाया जा रहा है। इसके बाद जगह जगह सड़क के किनारे गिराई जा रही है। सरकार और प्रशासन बालू के अवैध खनन और धंधे को रोकने में विफल साबित हो रही है। इधर, लगातार अवैध कारोबारियों का दबदबा बढ़ता जा रहा है। माफियाओं द्वारा आक्रमकता दिखाई जा रही है। महुदा थाना क्षेत्र कई बार बालू के अवैध धंधे को लेकर टकराव की बड़ी घटना को झेल चूका है। पूर्व के दिनों में मारपीट, हथियार लहराने और चलाने की घटना घट चुकी है। पुलिस-प्रशासन द्वारा लगातार बालू लदे ओवर लोड हायवा और ट्रैक्टर पकड़े जाने की कार्रवाई के बावजूद इस धंधे पर रोक नहीं लग पा रहा। खुलेआम अवैध बालू का धंधा हो रहा है। हाइवे पर यह साफ देखा जा सकता है कि कुछ लोग बालू लदे वाहन को पास कराने के लिए लाइन देते हैं कि अभी पुलिस नहीं है वाहन निकाल लो। बड़े पैमाने पर अवैध कारोबार के बीच आम लोग परेशान हैं। बालू सरकार की ओर से तय मूल्य से दो से तीन गुणा ऊंची दर पर बेची जा रही है। कोई सुधि लेने वाला नहीं है। माफिया मजे से अपना काम कर निकल जाते हैं।

अधिकारी खामोश, गरीबों को घर बनाना हुआ मुश्किल

खनन विभाग और पुलिस मुख्यालय के कड़े निर्देश के बावजूद अवैध बालू खनन थमने का नाम नहीं ले रहा है। सूत्रों की मानें तो आधा दर्जन से अधिक अवैध बालू घाट क्षेत्र में चल रहे हैं। लोग लगातार परेशान हो रहे हैं। उनकी शिकायत पर खनन विभाग, जिला पुलिस ने सभी थानाध्यक्षों और अंचलाधिकारीयों को जांच कर कड़ी कार्रवाई का निर्देश भी दिया है। इसके बावजूद इसका कोइ असर अवैध बालू कारोबार पर पड़ता नहीं दिख रहा है। लोगों के बीच चर्चा है कि कथित तौर पर इस कारोबार में किसी बड़े नेता का संरक्षण प्राप्त है। बता दें कि अगर प्रशासन कार्रवाई करती है तो बड़े मामले का खुलासा हो सकता है। इसमें कई बड़े सफेदपोश के भी नाम आ सकते हैं। महुदा में कई जगहों पर अवैध बालू भंडारण पर खनन विभाग व पुलिस मौन।बालू माफिया दामोदर नदी से जमकर बालू का अवैध उत्खनन करवा रहे हैं। ताकि बारिश के समय बालू की उत्खनन में नाकाम रहे तो अवैध बालू का अकूत भंडारण से उच्ची कीमतों पर बेचा जा सकेगा। भंडार की खबर के बावजूद भी बालू के भंडारण स्थल पर पुलिस या खनन अधिकारीयों द्वारा छापा नहीं मारा जाता हैं, बल्कि उनके द्वारा सड़क या बालू लाते एका-दुका ट्रेक्टर को पकड़ कर छापामारी की कॉलम को पूरा करते हैं, नतीजतन स्थानीय प्रशासन और खनन विभाग के पदाधिकारियों पर अंगुलियां उठना शुरू हो चुका हैं।

बालू भंडारण का नियम

नियम के तहत यदि कोई व्यक्ति बालू का भंडारण कर उसे बेच रहा है तो इसके लिए उसे विभाग की वेबसाइट पर आनलाइन आवेदन करना होगा। यह बताना होगा कि किस स्थान पर भंडारण करेगा, किस पट्टा धारक से बालू खरीदेगा, कितने घनमीटर बालू का भंडारण करेगा। शासनादेश के मुताबिक 100 घनमीटर तक बालू डंप का कोई लाइसेंस नहीं होता। जबकि इससे ऊपर भंडारण किए जाने पर लाइसेंस की जरूरत पड़ती है। इसके बावजूद मानक से अधिक बालू का भंडारण जगह-जगह हो रहा है। वहीं विभागीय अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

जेपीएससी पीटी परीक्षा में उपस्थिति से अनुपस्थित अभ्यर्थियों की संख्या अधिक

बोकारो आजाद सिपाही। झारखंड संयुक्त असैनिक सेवा प्रारंभिक प्रतियोगिता परीक्षा 2023 में रविवार को बोकारो जिले के विभिन्न प्रखंडों में बनाएं गएं 59 परीक्षा केंद्रों में कुल 27,569 परीक्षार्थी शामिल होने थे। लेकिन प्रथम पाली में 08,531 परीक्षार्थी ही शामिल हुए जबकि 19,038 अनुपस्थित रहें। इसी तरह दूसरी पाली में 8,514 परीक्षार्थी ही शामिल हुए, जबकि 19,055 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहें।

रामरतन स्कूल में आयोजित जेपीएससी परीक्षा में 168 में से शामिल हुए महज 33 परीक्षार्थी

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाह)। झारखंड लोकसेवा आयोग की जेपीएससी प्रारंभिक परीक्षा रविवार को संपन्न हुई। फुसरो में रामरतन उच्च विद्यालय में शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संचालित हुई। जहां 168 परीक्षार्थियों में से मात्र 33 परीक्षार्थी ही परीक्षा देने पहुंचे। कम परीक्षार्थी होने के कारण जल्दबाजी में परीक्षा लिया जाना बताया गया। जहां बिना रिजेक्शन लिस्ट जारी किए ही सीधा एडमिट कार्ड डाउनलोड करने का नोटिफिकेशन आ गया था। परीक्षाथियों ने बताया की एडमिट कार्ड डाउनलोड करने में भी बहुत दिक्कत आ रही थी। किसी तरह एडमिट कार्ड डाउनलोड हो भी जा रहा था तो उसमें गड़बड़ी नजर आ रही थी। परीक्षाथियों ने कहा कि इस सेंटर में अधिकतर दूसरे राज्य के ही परीक्षाथियों का सेंटर पड़ा है। हो सकता ही एडमिट कार्ड में गड़बड़ी या फिर यातायात की सुविधा उपलब्ध न हो सकी होगी इस कारण परीक्षार्थी काम आए है।

नाराजगी : दूसरी पाली की परीक्षा का किया बहिष्कार, पुलिस तैनात

धनबाद में जेपीएसपी का प्रश्न पत्र लीक होने का आरोप, चार पकड़ाये

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। शहर के सरायढेला थाना अंतर्गत कार्मिक नगर स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में रविवार की दोपहर जेपीएससी के छात्रों ने जमकर हंगामा किया। यही नहीं, प्रश्नपत्र लीक होने का आरोप गाते हुए आक्रोशित छात्रों ने दूसरी पाली के परीक्षा का ही बहिष्कार कर दिया है। जानकारी के मुताबिक दिल्ली पब्लिक स्कूल में परीक्षार्थियों ने स्कूल प्रबंधन पर गंभीर आरोप लगाए हैं। कुछ

हंगामा कर रहे विद्याथियों की समझाती पुलिस।

परीक्षार्थी स्कूल के अंदर ही थे। छात्रों के पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि वह अंदर से निकले ही नहीं है। इसी को लेकर परीक्षार्थियों में भारी आक्रोश व्याप्त है। वहीं परीक्षार्थियों ने जमकर हंगामा किया जिसे जिला प्रशासन ने पुलिस बल के सहयोग से शांत कराया। इस दौरान हंगामा करने वाले चार युवकों को पुलिस ने हिरासत में लिया और थाने ले गयी। मामले की जानकारी मिलने पर सरायढेला पुलिस, एडीएम लॉ एंड आर्डर, डीएसपी लॉ एंड आर्डर, समेत कई पुलिस बल मौके पर मौजूद है और परीक्षार्थियों को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

बसंत मेला में मिथिला महिला समिति का स्टॉल भी रहा आकर्षण का केंद्र

बोकारो (आजाद सिपाही)। स्टील प्लांट के सौजन्य से नगर के सेक्टर-5 स्थित पुस्तकालय मैदान में आयोजित दो दिवसीय बसंत मेला का रविवार की देर शाम समापन हुआ। मेले में बोकारो स्टील प्लांट के विभिन्न विभागों के अलावा महिला समिति बोकारो, जन-सम्पर्क विभाग, मिथिला महिला समिति सहित अन्य सरकारी व स्वयंसेवी संगठनों, महिला उद्यमियों के स्टॉल लगाये गये थे। प्रतिष्ठित सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो की इकाई मिथिला महिला समिति का स्टॉल भी बसंत मेला में आकर्षण का केंद्र रही। यहां मिथिला पेटिंग सहित अन्य कलाकृतियां लोगों को आकर्षित कर रही थीं। साथ ही यहां समिति की ओर से उपलब्ध कराये गये विभिन्न प्रकार के खान-पान भी लोगों को पसंद आ रहे थे। आयोजन में मिथिला महिला समिति की अध्यक्ष सीमा झा, सांस्कृतिक सचिव बीनू चौधरी सहित किरण मिश्रा, अमिता झा, नमिता झा, आशा झा, प्रेरणा ओझा, रुचि प्रेरणा, मधु ठाकुर, मधुबाला झा, वंदना झा, गुड़िया झा, विनीता राय, बबीता झा आदि की सक्रिय भूमिका रही। मेले में खाने-पीने के लिए विभिन्न प्रकार के भारतीय व्यंजनों के स्टॉल भी लगाये गये थे, जिसमें मॉडर्न पंडित कैफे, कोजी स्वीट्स, हंस रिजेन्सी आदि स्टॉलों पर खूब भीड़ जुटी। मेले में गीत-संगीत, नृत्य के मनोहारी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। बच्चों-बड़ों ने भी मेला में विभिन्न प्रकार के झूले का आनंद लिया।

लोकसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होते ही हटाये गये राजनीतिक दलों के बैनर-पोस्टर, होर्डिंग

आजाद सिपाही संवाददाता

एग्यारकुंड। लोकसभा चुनाव का अधिसूचना जारी होते ही चिरकुंडा नगर परिषद की ओर से क्षेत्र में लगे राजनितिक दलों के पोस्टर, होर्डिंग, बैनर आदि को हटाना रविवार से प्रारंभ कर दिया गया है। इसकि जानकारी देते हुए सिटी मैनेजर मुकेश निरंजन ने बताया कि नगर परिषद कार्यालय के आसपास व नेहरू रोड किनारे लगे राजनितिक दलों के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर आदि को हटाया गया। यह अभियान लगातार जारी रहेगा। उन्होने कहा कि जिन राजनितिक दलों के नेताओं को पोस्टर, बैनर, होर्डिंग आदि लगाने को ले स्वीकृति लेनी है। वे सहायक निर्वाचन पदाधिकारी सह एग्यारकुंड बीडीओ से अनुमति ले सकते हैं। मौके पर सुपरवाइजर अनिल साव, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, चिन्मय बनर्जी,अमर दास, बैजू साव, अनुप कुमार आदि उपस्थित थे।

आरटीआइ के नाम से लोगों को ब्लैकमेल करते हैं जगत महतो : सुनील प्रजापति

महुदा (आजाद सिपाही)। बाघमारा प्रखंड के पूर्व बीडीओ सुनील कुमार प्रजापति ने सामाजिक कार्यकर्ता जगत महतो द्वारा लगाये गये सभी आरोपों को झूठा, बेबुनियादी और तथ्यहीन करार दिया। साथ ही आरोप लगाया कि जगत महतो आरटीआई के नाम से लोगों को ब्लैकमेल करते हैं। बताया कि आवास की पूरी धनराशि लाभुकों के खातों में जाती हैं। आवास बनाने की जिम्मेदारी लाभुकों की हैं। उनका काम जमीन उपलब्ध कराना है। पूर्व बीडियो ने कहा कि जगत महतो अपने मन ही मन कुछ भी निर्णय कर लेते हैं, जबकि आवास के लिए भूमिहिनो को मुफ्त में सरकार की ओर से भूमि दी जाती हैं। जिसके बाद लाभुक घर बनाना शुरू करते हैं। इसमें कोई ठेकेदारी, ठेका नहीं, सीधे लाभुकों के खाते में राशि भेजी जाती हैं। आवास बनाने की जिम्मेदारी लाभुकों की हैं, समय पर निर्माण नहीं करने पर सरकार की ओर से चिठ्ठी आई, उसपर हमने संज्ञान भी लिया। बावजूद इसके जगत महतो झूठे आरोप लगाते रहते हैं। पता नहीं इसमें उसकी क्या मंशा हैं। वे पूर्व में भी सीओ और डीसी का पुतला दहन कर चुके हैं। गौरतलब हो कि विगत सोमवार को बाघमारा बीडीओ डॉ सुषमा आनंद के आदेश पर पंचायत सचिव सतेंद्र ठाकुर ने आरटीआई एक्ट के तहत सामाजिक कार्यकर्ता जगत महतो को सिनीडीह पंचायत में बने पीएम आवास का निरीक्षण कराया। इस दौरान पत्रकारों से बातचीत में जगत महतो ने पूर्व बीडीओ पर प्रधानमंत्री द्वारा भूमिहीन गरीबों को समर्पित पीएम आवास में घोर अनियमितता एवं भारी गड़बड़ी करने का गंभीर आरोप लगाते हुए जांच का विषय करार दिया था।

नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर में 100 मरीजों की हुई जांच

कतरास (आजाद सिपाही)। बाघमारा अंचल चित्रगुप्त महापरिवार ट्रस्ट की ओर से रविवार को कतरास के डॉ राजेन्द्र प्रसाद सेवा संस्थान (राजेंद्र क्लब) में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 100 मरीजों के नेत्र की जांच की गई। इससे पहले चित्रगुप्त महापरिवार की ओर से डॉक्टरों की टीम को गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया। एएसजी आई अस्पताल धनबाद की ओर से आये डॉक्टरों की टीम में डॉ सत्यम श्रीवास्तव, डॉ संजय कुमार एवं डॉ अमित कुमार शामिल थे। डॉ संजय कुमार रजक ने बताया कि जिन मरीजों के नेत्र की जांच करवायी जा रही है और जिन आयुष्मान कार्डधारी मरीजों में मोतियाबिंद आदि के लक्षण पाए जा रहे हैं। उनको धनबाद एएसजी अस्पताल में निःशुल्क जांच एवं निःशुल्क ऑपरेशन, दवा व चश्मा आदि दिया जाएगा। वहीं, शिविर को सफल बनाने में शिक्षाविद मोहन प्रसाद लाला, बिजय कुमार सिन्हा, धनंजय श्रीवास्तव, पंकज सिन्हा, देवेंद्र सिन्हा, अमित सिन्हा, कृष्ण कुमार सिन्हा(किशु लाला), विक्की लाला, कबीर रंजन, मुकेश सिन्हा, शैलेन्द्र सिन्हा, शशि सिन्हा, मनोज लाला, भरत प्रसाद लाला, प्रियांक सिन्हा, अरविंद सिन्हा आदि की भूमिका रही।

तालाब में नहाने के दौरान डूबने से दो बच्चे की मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह। जिले के अहिल्यापुर थाना क्षेत्र के माथाडीह गांव में शनिवार की शाम तालाब में नहाने गये दो बच्चे की तालाब में डूबने से मौत हो गयी। उनकी पहचान माथाडीह गांव निवासी टिंकू पंडित के आठ वर्षीय पुत्र मुकेश पंडित और उमा पंडित के पांच वर्षीय पुत्र पियुष पंडित के रूप में हुई। दोनों बच्चे आपस में चचेरे भाई थे। घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था। मृतक मुकेश के पिता टिंकू पंडित ने बताया कि दोनों बच्चे घर के बगल में स्थित

नाई की दुकान में बाल कटवाने गये थे। बाल कटवाने के बाद दोनों शनिवार की शाम करीब चार बजे घर के बगल में ही स्थित कदमा आहर में स्नान करने चले गए थे। इसी क्रम में दोनों का पैर फिसल गया और गहरे पानी में चले गए, जिससे डूबने से उनकी मौत हो गई। बताया जा रहा कि मृतक बच्चे की मां भी उसी तालाब में नहाने पहुंची तो देखा कि दोनों बच्चे डूब रहे हैं। उन्होंने बच्चे को डूबता देख शोर मचाना शुरू किया। बच्चे की मां की शोर सुन आस पास के ग्रामीण वहां पहुंचे और दोनों बच्चों को पानी में डूबते देखा। ग्रामीण उन बच्चों को बचाने तालाब में कूदे, काफी मशक्कत के बाद दोनों को तालाब से बाहर निकाला। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। तालाब के गहरे पानी मे डूबने से दोनों बच्चे की मौत हो चुकी थी। इस हृदय विदारक घटना के बाद पूरे माथाडीह गांव का माहौल गमगीन हो गया। वहीं परिजनों का रो रो कर बुरा हाल था। वहीं देर रात परिजन द्वारा दोनों बच्चों का अंतिम संस्कार कर दिया।

बंद स्ट्रीट लाइट को चालू करने की मांग

सिंदरी (आजाद सिपाही)। धनबाद नगर निगम की ओर से सिंदरी अंचल के वार्ड नंबर 53 गौशला बाजार में लगाया गया स्ट्रीट लाइट अब शोभा की वस्तु बन गई है। करोड़ रुपए के लागत से लगाए गए स्ट्रीट लाइट खराब पड़े हैं। गौशला मुख्य पथ पर जाने वाला मार्ग में लगे दर्जनो स्ट्रीट लाइट बंद पड़ी है। अंधेरा होने के कारण वहां आसामाजिक तत्वों का जमावड़ा रहता है। मेन रोड पर मयूर गेट से चेक पोस्ट अंबेडकर गोलमबर से कुवर सिंह चौक आदि स्थानों में लगे स्ट्रीट लाइट भी खराब पड़े है। स्थानीय लोगों ने जल्द उसे दुरुस्त करने की मांग की है।

लगी घर में आग, लाखों के सामान जले

कथारा (आजाद सिपाही)। कथारा ओपी क्षेत्र के बांध बस्ती निवासी महिला सीसीएल कर्मी के घर में रविवार की सुबह अचानक आग लग गई। जिसमें नगदी सहित लाखों रुपए के आभूषण व कीमती कपड़े आदि जलकर खाक हो गये। हालांकि इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। पता चला है कि बेटे की शादी को लेकर महिला कर्मी ने नगदी एवं कीमती सामान घर में रखे थे। जानकारी के अनुसार रविवार की सुबह कथारा कोलियरी में कार्यरत महिला कर्मी लोचनी देवी के बांध बस्ती स्थित घर में अचानक आग लग गई। देखते-देखते घर में रखा सामान आग के लपटों में जलने लगा, घबराहट में पड़ोसियों ने इसकी तत्काल सूचना कथारा ओपी प्रभारी जितेश कुमार को दी। ओपी प्रभारी ने इसकी सूचना डीवीसी बोकारो थर्मल स्थित अग्निशमन विभाग को दी। लेकिन राहत कार्य शुरू करने से पूर्व ही पूरा सामान जल गया।

जयराम महतो ने किया गिरिडीह लोस से चुनाव लड़ने का एलान

आजाद सिपाही संवाददाता

फुसरो/बेरमो। जेबीकेएसएस के केंद्रीय अध्यक्ष, झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा से उम्मीदवार यूथ सेंसेशन जयराम महतो गिरिडीह लोकसभा सीट चुनाव लड़ने और जीतने का दावा किये हैं। फुसरो बाजार में पैदल चहलकदमी के दौरान पत्रकारों द्वारा उनसे सवाल पूछे जाने पर वे

गिरिडीह लोस सीट से चुनाव जीतने को लेकर आश्वस्त दिखे। कहा कि जेबीकेएसएस के उम्मीदवार गिरिडीह के साथ धनबाद, हजारीबाग, चतरा, दुमका, सिंहभूम, रांची आदि लोकसभा केंद्रों पर चुनाव लड़ेंगें। कहा कि पहली बार चुनाव लड़ रहा हूं। वर्तमान सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी से सीधा सामना होगा और जनता अपना आशीर्वाद मुझे ही देगी। उन्होंने कहा कि गिरिडीह संसदीय क्षेत्र के गांव-गांव में जयराम महतो की लहर है, क्योंकि वह गरीबों की आवाज बनकर आया है। कहा कि परीक्षा पत्र में गड़बड़ी हो रही है और वर्तमान सांसद मौन धारण कर लेते है। जेपीएससी फिर से पेपर लीक मामले पर उन्होंने कहा कि जब तक झारखंड की राजनीति में पढ़े-लिखे युवा नहीं आते हैं तब तक इस तरह का कार्य होता रहेगा। युवाओं को सड़क से लेकर राजनीति में आना होगा। कहा कि वर्तमान सांसद या पूर्व सांसद और राजनेता नहीं है, बल्कि ये लोग व्यवसायी है और अपनी व्यवसाय को संरक्षण देने के लिए राजनीति कर रहे हैं। बेरमो विधायक कुमार जयमंगल सिंह को लेकर कहा कि वह मुझे छोटा भाई मानते हैं और मैं उनको अपना बड़ा भाई मानता हूं। पर हम दोनों की लड़ाई वैचारिक और न्याय की है। बेरमो में बहुत अधिक प्रदूषण, पलायन और भुखमरी है इस पर वर्तमान विधायक गंभीर नहीं है। एक प्रश्न के जवाब में कहा कि गिरिडीह से जयराम महतो की जीत नहीं होगी बल्कि उन युवाओं की जीत होगी जो पैसों की कमी की वजह से राजनीति में नहीं आ पाते हैं।

न्यूज रील्स

इटली बोला-यूक्रेन में नाटो सैनिक भेजे तो विश्व युद्ध होगा

इटली ने चेतावनी दी है कि अगर नाटो ने अपने सैनिक यूक्रेन भेजे तो तीसरा विश्व युद्ध छिड़ जायेगा। इटली के विदेश मंत्री एंटोनियो तजानी ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि मुझे नहीं लगता है कि नाटो को अपने यूक्रेन भेजने चाहिए। अगर ऐसा हुआ तो ये बड़ी गलती होगी। हमें यूक्रेन की इतनी मदद करनी चाहिए, जिससे वो अपनी रक्षा कर सके। यूक्रेन में घुसकर रूस के खिलाफ लड़ने का मतलब तीसरे विश्व युद्ध को न्योता देना होगा। इटली के विदेश मंत्री का कमेंट उस समय आया है जब फ्रांस के राष्ट्रपति ने यूक्रेन में सैनिक उतारने की बात कही थी।

अपराध शाखा की हिरासत में इडी के 2 फर्जी अधिकारी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। क्राइम ब्रांच की हिरासत में फर्जी इडी अधिकारी आये हैं। दोनों आरोपी ढेंकनाल दोलमंडप साही के तारिणीसेन महापात्र और ब्रह्मशंकर महापात्र हैं। शिकायत के अनुसार दोनों आरोपी भाइयों ने इडी अधिकारी बन कर 300 सरकारी अधिकारियों से लाखों रुपये ठगे। वे राज्य में और राज्य के बाहर जहां भी इडी की छापेमारी की जा रही थी, वहां पहुंच जाते थे। सरकारी अधिकारी या जिन

लोगों के घरों पर इडी द्वारा छापे मारे जा रहे थे, वे गलत जांच कर रहे थे। वह उन्हें झूठे मामले दर्ज कराने की धमकी देकर उनसे पैसे वसूलता था।

छत्रपुर के उप-कलेक्टर देबदत्त महंत की शिकायत के बाद अपराध शाखा द्वारा उनकी जांच की गयी थी। वे झारखंड के रांची में रहते थे और संदेह से बचने के लिए एक एनजीओ चलाते थे।

पुलिस ने पाया है कि उसके फोन पे के माध्यम से 16 लाख रुपये से अधिक का लेन-देन किया गया था। वह पैसे लेने के बाद गलत क्लियरेंस रिपोर्ट भी देते थे। उनके पास से डेस्कटॉप, मोबाइल, बैंक पासबुक, नकली पहचान पत्र और 17 एटीएम कार्ड जब्त किये गये। एसटीएफ ने दोनों भाइयों को गिरफ्तार कर लिया है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के लिए राजनीतिक दलों से सहयोग मांगा

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भारत के चुनाव आयोग ने आज राज्य में 21 लोकसभा और 147 विधानसभाओं के लिए एक साथ आम चुनावों की तारीखों की घोषणा की। इसके साथ ही पूरे देश में आदर्श आचार संहिता लागू हो गयी है। चुनाव की घोषणा के बाद मुख्य निर्वाचन अधिकारी निकुंज बिहारी धल ने विभिन्न मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की।

श्री धल ने राज्य में शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए सभी राजनीतिक दलों से सहयोग मांगा और आदर्श आचार संहिता का सख्ती से पालन करने का आग्रह किया। श्री धल ने आशा व्यक्त की कि सभी राजनीतिक दल राज्य में स्वच्छ, मुक्त, निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव के लिए प्रतिबद्धता दिखायेंगे।

ओड़िशा बीजेपी उम्मीदवारों की लिस्ट तैयार

केंद्रीय संसदीय बोर्ड के पास मुहर के लिए जल्द भेजी जायेगी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। ओडिशा भाजपा ने प्रदेश में चुनावी तैयारी शुरू कर दी है। भाजपा की भुवनेश्वर प्रदेश कार्यालय में हुई चुनाव समिति की बैठक में संभावित उम्मीदवारों की सूची तय की गयी है। संभावित उम्मीदवारों की सूची सभी 147 विधानसभा, 21 लोकसभा के लिए निर्धारित की गयी है। संभावित उम्मीदवारों की यह सूची केंद्रीय संसदीय बोर्ड को भेजी जायेगी।

भाजपा जारी करेगी अंतिम सूची

केंद्रीय संसदीय बोर्ड से मुहर लगने के बाद प्रदेश भाजपा अपने उम्मीदवारों की अंतिम सूची जारी करेगी। इसके साथ ही विकसित भारत के निर्माण में जनभागीदारी और जन-सहयोग के लिए देशवासियों को लिखे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पत्र को प्रदेश के एक करोड़ परिवारों तक पहुंचाने की योजना राज्य भाजपा ने तैयार की है। भाजपा की प्रदेश कार्यालय में वरिष्ठ नेताओं को लेकर चुनाव कमेटी की बैठक संपन्न हो गयी है। पहले राज्य कोर कमेटी की बैठक हुई। इसके बाद चुनाव कमेटी की बैठक हुई और बैठक में 2024 चुनाव पर फोकस रहा।

चुनाव पर हुई चर्चा

चुनाव को लेकर विस्तार से चर्चा कर विधानसभा एवं लोकसभा सीट के लिए उम्मीदवारों की सूची तैयार किए जाने की बात सामने आयी है। बैठक में मोदी सरकार की 10 वर्ष की सफलता को घर-घर पहुंचाने, लोगों का मतामत संग्रह करने का निर्णय लिया गया है।

भाजपा पूरे दम से चुनाव लड़ेगी : सांसद

राज्य भाजपा कार्यालय में आम चुनाव को लेकर चल रही बैठक के बीच पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा भाजपा सांसद प्रताप षाड़ंगी ने कहा है कि ओड़िशा भाजपा चुनाव के लिए पूरी तरह से तैयार है। पार्टी पूरे दम से चुनाव लड़ेगी। राज्य भाजपा कार्यालय में रविवार को वरिष्ठ नेताओं को लेकर एक बैठक हुई। इसमें पार्टी के वरिष्ठ नेता शामिल हुए। चुनाव के लिए राज्य के सभी 147 विधानसभा एवं 21 लोकसभा सीट पर किसे उम्मीदवार बनाया जाए एवं किस तरह कार्यकर्ताओं को संतुष्ट रखा जाए, इस पर विस्तृत चर्चा होने की बात पता चली है।

ओड़िशा ओलंपिक संघ को राज्य सरकार का तोहफा

लीज पर दी बारबाटी स्टेडियम की जमीन

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। ओड़िशा ओलंपिक संघ को फिर से बारबाटी स्टेडियम की जमीन को लीज में दी गयी है। इसके चलते स्टेडियम का विकास कार्य में अब किसी भी तरह की रुकावट नहीं आयेगा। इसके द्वारा लंबे 35 साल की प्रतीक्षा का अंत हुई है। राज्य सरकार कैबिनेट में बारबाटी स्टेडियम के कुल 20 एकड़ की जमीन को हर एक एकड़ के लिए 1 रुपये के हिसाब से फिर से लीज में दिया है।

ओलंपिक संघ को 40 साल के लिए जमीन मिली लीज पर : ओड़िशा ओलंपिक संघ को 40 साल के लिए यह जमीन लीज में प्रदान की गयी है। ओड़िशा में खेल के विकास के लिए तथा बारबाटी स्टेडियम के विकास में यह निश्चित तौर पर उल्लेखनीय घटना है। इसके चलते ओड़िशा ओलंपिक संघ के सचिव अभिजीत पाल, ओड़िशा फुटबॉल संघ के सचिव आशीर्वाद बेहेरा, ओड़िशा क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव संजय बेहेरा प्रमुख शनिवार की शाम को आयोजित पत्रकार सम्मेलन में गण माध्यम को इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक और 5टी के अध्यक्ष वीके पांडियन को धन्यवाद अर्पण किया है।

साल 2023 में बारबारी स्टेडियम का हुआ था शिलान्यास : बता दें कि राज्य सरकार बारबाटी स्टेडियम की जमीन को वर्ष 1950 में 1 रुपए के हिसाब से 20 एकड़ जमीन को लीज में दिया था। वर्ष 1989 में नवीकरण न होने के कारण वह लीज रद्द हो गयी थी। बाद में उसकी नवीकरण नहीं किया गया था। ओड़िशा ओलंपिक संघ की ओर से उसके लिए बार-बार प्रयास की जा रही थी, लेकिन सफलता प्राप्त नहीं हुई थी। फिर पिछले 27 फरवरी को बारबाटी स्टेडियम के नवीकरण कार्य के लिए शिलान्यास की गयी थी।

राज्य सरकार को दिया धन्यावाद : मुख्यमंत्री नवीन पटनायक बारबाटी स्टेडियम के इतिहास को सुरक्षित रखते हुए उसे एक विश्व स्तरीय स्टेडियम में तब्दील करने के लिए घोषणा की थी और इस बीच राज्य सरकार की ओर से ओड़िशा ओलंपिक संघ को बारबाटी स्टेडियम की जमीन को फिर से लीज में दी गयी है। इसके चलते ओड़िशा ओलंपिक संघ, ओड़िशा क्रिकेट संघ ने खुशी जताते हुए राज्य सरकार को धन्यवाद अर्पण किया है।

एससीबी मेडिकल में दो दलाल दबोचे गये

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। राज्य का सबसे बड़ा अस्पताल कटक एससीबी मेडिकल से दो और दलाल गिरफ्तार किये गये। मंगलाबाग थाना पुलिस दोनों दलालों को गिरफ्तार करने के पश्चात मामला दर्ज करते हुए उन्हें कोर्ट चालान कर जेल भेज दिया है। गिरफ्तार आरोपी हैं जाजपुर जिला बरी थाना अंतर्गत रामचंद्रपुर इलाके शिव महंतो (28) और नुआपड़ा जिला खरिआर इलाके का आशीष रथ (36)। पिछले एक महीने के अंदर एससीबी मेडिकल से अब तक 12 दलालों को गिरफ्तार किया जा चुका है। शिव और आशीष एससीबी मेडिकल में पहुंचकर एक मरीज एवं उनके रिश्तेदारों को बेहला फुसला कर

वहां से एक निजी अस्पताल को ले जाने के लिए योजना बना रहे थे। इसके बारे में मंगलाबाग थाना पुलिस को खबर मिली। उसके पश्चात मंगलाबाग थाना पुलिस की एक टीम एससीबी मेडिकल में छापेमारी किया और उन दोनों दलालों को दबोच लिया। उन्हें थाने में लाकर पूछताछ की गयी, तो दोनों ने उस बात को कबूल किया। बाद में उनके नाम पर मामला दर्ज करते हुए उन्हें कोर्ट चालान कर दिया गया है।

पुल से गिरी बारातियों से भरी गाड़ी, दो की मौत, 12 घायल

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। बरात लेकर जा रही एक पिकअप वैन अनियंत्रित होकर पुल के नीचे गिर गयी। इस हादसे में दो बारातियों की मौत हो गयी, जबकि 12 अन्य बराती घायल हुए हैं। हादसा कोरापुट जिले के कुंदुरा थाना अंतर्गत खटलापदर के पास हुआ है। सभी घायलों को कुंदुरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। घायलों में तीन की हालत गंभीर बतायी गयी है। सभी घाल दलपुर इलाके के रहने वाले है। पिकअप वैन कोरापुट के बैपारीगुड़ा प्रखंड के धलपुर से बरातियों को लेकर बोरीगुम्मा प्रखंड के नुआगांव को जा रही थी। जानकारी के मुताबिक 20 से अधिक बराती एक पिकअप वैन में जा रहे थे। खटलापदर ब्रिज के समीप गाड़ी का संतुलन बिगड़ गया और गाड़ी पुल के नीचे गिर गयी। दुर्घटना में 12 बराती घायल हो गए। सूचना मिलने के बाद स्थानीय लोग एवं दमकल की टीम मौके पर पहुंच कर राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। घायलों को एंबुलेंस के माध्यम से कुंदुरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया, जहां पर दो बरातियों को डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। अन्य का इलाज चल रहा है।

पुलिस ने मामला किया दर्ज : पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और घटना की जांच कर रही है। प्राथमिक जांच में पता चला है कि पिकअप वैन का चालक नशा किया हुआ था, जिसकी वजह से यह हादसा हुआ है।

झारसुगुड़ा में हुआ 'शष्टीपूर्ति मैरीज इवेंट' का आयोजन

पूरे रीति रिवाज से 50 वृद्ध जोड़ों की हुई दोबारा शादी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। रविवार को झारसुगुड़ा में झारखंड श्रीवारी सेवा संघ की झारसुगुड़ा शाखा की ओर से रेलवे कॉलोनी में स्थित राम मंदिर में शष्टीपूर्ती मैरीज इवेंट (आयुष पूजा) का आयोजन किया गया था। शष्टीपूर्ती मैरीज इंवेट यह दक्षिण भारत की एक परंपरा जैसी ही। इसमें जिन लोगों उम्र शादी के बाद 60 वर्ष या उससे अधिक होती है और उनकी फिर से पूरे रीति रिवाज के साथ शादी करायी जाती है।

अब झारखंड श्रीवारि सेवा संघ ने शुरू की ये सेवा : पहले इसके लिए लोगों को तिरुपति बालाजी मंदिर जा कर वहां पर शादी करनी पड़ती थी और कुछ लोग अपने परिवार के साथ घर में ही शादी की रस्म पूरी करते थे। इसमें हजारों रुपये का खर्च आता है। इसी को ध्यान में रखते हुए झारखंड श्रीवारि सेवा संघ ने 60 वर्ष व उससे अधिक उम्र के लिए सामूहिक विवाह के लिए कदम आगे बढ़ाया है। झारखंड श्रीवारी सेवा संघ के मुख्य के साईं राम ने बताया की हमने लोगों के लिए इस तरह का आयोजन शुरू किया है। हम इसके लिए मात्र तीन हजार रुपये लेते हैं और इसी में शादी की पूरी रस्म व खाना-पीना करवाते हैं। इसका यह फायदा होता है की इनकी वर्षों पुरानी याद ताजी हो जाती है और सबसे बड़ी बात तो यह है की इस शादी में उनके नाती पोते व पूरे परिवार शामिल होते हैं, जो एक नया अनुभव होता है।

50 से अधिक जोड़ों ने किया विवाह : रविवार को झारसुगुड़ा में इस सामूहिक विवाह में 50 से अधिक जोड़ो ने अपने परिवार के साथ अंश ग्रहण किया था। हमने अपने संघ की ओर से विवाह की पूरी रस्म के को मंत्रोचार व रितिक रिवाज से करवाया। रविवार को झारसुगुड़ा सहित, छत्तीसगढ़ के जगदलपुर, ओडिशा के विभिन्न जिलों से भी आए दस जोड़ों ने अंश ग्रहण किया था। झारसुगुड़ा में हुई इस निराली शादी का आयोजन चर्चा का विषय बन गया है। शादी के रस्म के बाद सभी ने सामूहिक रूप से एक साथ पार्टी का लुत्फ भी उठाया।

S M Toy & School Furniture

Everything From A to Z For School, Playground, Playschool Park Playzone, Mails, Backyard, Recreation Zone, Society & Anganwadis

एक बार जरूर पधारे

Old Bank Colony, RMCH Road, Near Sadhu Maidan Shop
Add.: Industrial Area Kokar, Ranchi- 834001 (Jharkhand)
Mob. 7503729696, 9205624569

RAJHANS ACADEMY
IIT-JEE | NEET | FOUNDATION
Creating Path Towards Success
BOOST your IIT-JEE/NEET/ Boards Preparation
ADMISSION OPEN
Upto 100% SCHOLARSHIP
ENGINEERING 11th 12th & 12th Pass | MEDICAL 11th 12th & 12th Pass | FOUNDATION 9th & 10th Pass
Call Us : 6287842201 / 02 / 03 / 04, 0651-4658773
302, 3rd Floor, Pranami Height, Circular Road (Lalpur), Ranchi-01
Email: rajhansacademy7@gmail.com | www.rajhansacademy.in

VERMA PRESS
वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
श्रृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar– II	₹ 120	English Grammar– II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान!

कृष्णा ज्वेलर्स
Mob : 9973853279, 9031249105
समस्या है तो ! समाधान भी है !
आचार्य प्रणव मिश्रा
प्रसिद्ध ज्योतिष रत्न गोल्डमेडलिस्ट, M.M (ज्योतिर्विज्ञान) टॉपर 2012 एवं (P.h.D) रांची, वि. वि. रांची
गांधी चौक, सोनार गली, बीण वस्त्रालय के सामने अपर बाजार, रांची

बोरिंग के लिए संपर्क करे
जल ही जीवन
993106883
9113754813
रांची के अंदर कहीं भी अच्छे रेट में
Contact for : Deep Boring, 405" 6" 8" Dia All Motor & Pump Fitting, Building Material

FREE FRANCHISE
Just call us : 9835502908
Alpha Institute of Computer Education
Franchise Benefit
All Computer courses
Vocational courses
Authorization Letter
Authorization Certificate
Web Login ID & Password
Study Material Support
Branded Name
PDF Certificate in 24 Hrs
Hard Copy Certificate & Mark sheet
Students Placement Support
Marketing Support
Online & Offline Certificate Verification
Yearly Career Guidance - Seminar in your city
Paper and Media Support
Registered Office : 262, Delta Bhawan Adarsh Nagar, Khorha Toli, Kokar, Ranchi (Jharkhand) Mob : 9835502908
Cooperate Office : Kokar Chowk, Kokar, Ranchi (Jharkhand), Mob : 9631103045
Cooperate Office : Noorsarai, Near Police Station Nalanda, Bihar Mob : 7488289546
E-mail : alphaeducational.center@gmail.com, Web site : www.alphaec08.com

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। **संपादक :** हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**